श्रीगणेशायनमः॥

अथ श्री चिंतामनि कवि रचित भाषा कवि

॥*॥कुल कल्पतरु लिख्यते

॥अथ कवित्त॥

श्रीगन नायक सुंडके अग्र गहो सुर सिंधु सरोज रहो फबि॥हाथनि अंकुश पास अभयको तुंदिल अंगनि मैं उमगे छवि॥मानौ दयामय सत्वकौ अंकुर दंत की दीपति यौं कहै कवि॥कुंभ सिंदूर लसै मनि संदर मानौ उदय गिरि श्रृंगनि मै रवि॥१॥मेटै घनावलि सी बिघनावलि तीषन कानन पौन उदारसौं॥सेवककौं नित देत अभय फल लैकरलौं कल्पद्रुम डारसौं॥श्रीगिरिजाहरजू कौ दुलारो यहै भजनीय जो चित्त विचारसौं॥लागि सदा मनि सिंधुर आनन सुंदर इंदुके असवारसौं॥२॥दोहा॥जे सुर बानी ग्रंथहैं तिनको समुझ विचार॥चिंता मनि कवि कहतहै भाषा कवित विचार॥३॥बरनकहाउ रस मै जुहै कवित कहावे सोइ॥गद्य पद्य द्वै भांति सौं सुरबानी मै होइ॥४॥छंद निबद्ध सुपद्य कहि गद्य होत बिन

छंद॥भाषा छंद निबद्ध सुनि सुकवि होत
सानंद॥५॥मेरे पिंगल ग्रंथते समुझौ छंद
विचार॥रीति सुभाषा कवित की वरनत बुध
अनुसार॥६॥सब्दुना लंकारन सहित दोष
रहित जो होइ॥शब्द अर्थ ताको कवित कहत
विबुध सब कोइ॥७॥जो रस आगेके धरम
ते गुन वरने जात॥आतप को ज्यौं सूरता दि
का निहचल अवदात॥८॥सबै अर्थ नहुव
रिये जीवित रस जिय जानि॥अलंकार
हारादि ते उपमादिक मन आनि॥९॥श्लेषा
दि गन सरला दिका से मानो चित्त॥वरनौ री
ति सुभाव ज्यौ वृत्ति वृत्ति सी मित्त॥१०॥प
द अनगुन विश्रामसों सज्या सज्या जानि
रस आस्वादन भेदजे पाक पाक से मानि
११॥कवित पुरुषकी साजु सव समुरु लोक
की रीति॥गुन विचार अब करत हौं सुनो
सुकवि करि प्रीति॥१२॥प्रथम कहत माधु
र्य पुनि वोज प्रसाद वखानि त्रिविधै गुन
तिनमैं सबै सुकवि लेत मनमानि॥१३॥सो
संयोग सिंगारमैं सुखद द्रवावै चित्त॥सो
माधुर्य वखानियै यहई तत्व कवित्त॥१४॥

सौं संयोग॥ सिंगारतें करुणा मध्य अधिका
इ॥विप्रलंभ अरु सांतरस तामैं अधिक व
नाइ॥१५॥दीप्त चित्त विस्तारको हेतु ओज
गुन जांनि॥सुनौं वीर बीभत्स अरु रौद्र जा
माधिक मानि॥१६॥सूखे ईंधन आगज्यौं स्व
ह नीरकी रीति॥मलकै अक्षर अर्थजो सो
प्रसाद गुन नीति॥१७॥कोऊ अंतर भूतइ
न कोऊ दोष अभाव॥कोऊ दोष त्रिविधि
गुण तातें दसन गनाउ॥१८॥और गुनै जो
अर्थ गुण तिनकछू करि मानि॥रचना बर
न समान गुन के विंजन के जानि॥१९॥अ
नुस्वार जुत बरन जिति सबे वर्ग अटवर्ग॥
मृदु समास माधुर्यकी घटनां मैं जुनि सर्व॥
२०॥माधुर्यकौउ॥सवैया॥इक आजु मैं कुंदनि
बेलि लखी मनि मंदिरकी रुचि वृंद भरै
कुरविंद के पल्लव वृंद तहां अर विंदनतें
मकरंद झरै॥उन बुंदनके मुकता गनहै फ
ल सुंदर द्वै पर आनि परै॥लखि यों दुतिकं
द अनंद कला नंदनंद सिला द्रव रूप धरै॥
२१॥दोहा॥वर गन मै जो आदि अरु तीजो
आखर कोइ॥तिनसौं योग दुतीय अरु चौ

थे कौ जो होइ ॥ २२ ॥ वेपा जोग सव ठौर जो
तुल्य वरन जुग जोग ॥ सु घट वरन दीरघ
वरन जे समास कवि लोग ॥ २३ ॥ ऐसी घट
ना होत की अंतर मनमैं आनि ॥ सकल
सुकवि जनकौं मनौ सुजान लेहु मन जानि
२४ ॥ संजोगी उद्धत वरन जो पुनि दिर्घ स
मास ॥ ऐसी रचना करत हैं सुनत हिं होत प्र
कास ॥ २५ ॥ चौ॰उ॰ ॥ वृक्ष पक्क फल खात ह्नु
क्क कूदत किलकात अति ॥ चिंतामनि वल
वंत वृक्ष धावत उद्धत गति ॥ * ॥ मद दिग्ग
कद पक्क समद गरजत गंभीर धुनि ॥ चूरन वाद
न पषांन रहे पव्वय मानो धुनि ॥ उत उमडि
पूरि गिरवर धरनि प्रवल जलधि जिमि वि
नहट्टक ॥ सम वारन सैल सगान विकट उद
भट मरकट भटकटक ॥ २६ ॥ दोहा ॥ वहु वापि
भागत निरखिकै हस्यौ प्रगट घन सद्द ॥ त
ह करत जग अंतजन सद्द दिसानि विहद्द
सद्द दिसान विहद्द हर पपल हल्ल सिव ॥ त
ह्न धुकि पद श्रुक्कर नि विरुद्ध धनि [illegible] ॥ रह्म
छिति धर भय छरक अलह हपि [illegible] ॥
वविजय असह विकाल अरव वहु वापि ॥

२७॥प्रसादलक्ष०॥दोहा॥जामहिं सुनतहि पद
नको अर्थ बोध मनहोइ॥सोप्रसाद वरनादि
कृति साधारन सबकोइ॥२८॥प्रसाद कोउ०
दाहरन॥सांवरो सलोनो नित बडी अखि
यांन वो जुहोहु आसन आनि जमुना
केतीरको॥चिंतामनि वाहे गारी दीजे तो हं
सत दांत धरि निकसे न पुनि नारिनकी
भीरको॥जैसो आज जानो अवलों नहीं
नन्दलालही वारतु अनीति जैसी छोहरा
अहिर को॥पनिघट रोकत कन्हैया याको
नांव हैया खोटोहे निपट छोटो भैया बल
बीरको॥२९॥दोहा॥प्राचीनो दिन गुननिको
कीनो काहू प्रकार॥सोयामैं सब लिखत है नि
जमति के अनुसार॥३०॥श्लेष प्रसादे वरन
कछु लक्षना नाम बखान॥माधुर्यो सुकुमार
ता अर्थ व्यक्त पहिचान॥३१॥पुनि उदारता
ओजगनि कांति समाधौ जानि॥एवैदर्भी री
तिको प्रानद सो गुनमानि॥३२॥श्लेष गुनको
लक्ष०॥बहुत पदनको एक पद समको है आ
भास॥ ताको कहत सलेष गुन सिथिल नि
बन्ध विलास॥३३॥श्लेष विकटता पदनिर

की जोउदारता होइ॥ वोज साहित जो लिडि
त पद वंध प्रसाद जु कोइ॥ २५॥ पद आ
रोहअरोह सो जोग समाधि प्रकार॥ ऐसेवो
जहि गनत सब मंमट बुद्धि विचार॥ २४
श्लेष॥ कवित्त॥ राम भुज दंडको दंड मंड
लित करि छिद्य उदंड सर दंड छोडे॥ स
कल निशिचरन को हंद ऐसो हन्यो प्रव-
त घन अनिल जनु पवन विलोडे॥ अंग रु
थ आवरन संगमहि योंगिरे हनें वहु तम
र गकल निगोडे॥ गिरे घन घरन के दावा
न सघात लहि छप्परन संग जनु टूट टोडे
२६॥ उदारता कोल॰॥ दोहा॥ जहाँ नृत्यसों
करत पद सो उदारता जानि॥ अर्थ चारुता
सहित सो अनि मंजुल पहिचानि॥ २७॥
उदारता कोउ॰॥ सवैया॥ काननि कुंज कालिं
दीके कूलनि कान्ह मिले वछरानि चरा
वैं॥ हेमनि हेमनि मंडितपै फल फूल प्र
वालन की छवि छावैं॥ मंजुल मूरति नाच
त गावत कूदत वेनु विषान वजावैं॥ सांवरे
सुंदर नंद कुमारहि याविधि गोप कुमार रि
झावैं॥ २८॥ आरोहा अवरोहा समाधि कोउ॰

*॥कवित्त॥हाथ करि चाप रघुनाथ करि हाथ वर विसिष दुर्धर्ष दुस्सह चलाए॥चले नभ मूँदि जनु पच्छ धरि नाग निसिचरन के प्रान बहु पवन खाए॥दुवन भट विकट आकार उद भटनिघट समर पदकाटि रिपुगन घटाए॥ध्वजन कौं छेदि धनु कवच गन भेदि धनरक्त उच्छेद बहु छवि नि छाए॥ ३९॥दोहा॥वोज विमिश्रित सिथिल पद यह प्रसाद है कोइ॥अर्थ व्यक्त जहँ उल्लसत वहै प्रसादौ होइ॥४०॥वोज विमिश्रित सिथिलात्मक प्रसाद को उदाहरन॥कवित्त॥त्रिभुवन घट घट प्रगट प्रकास पायौ जोगी जाहि जानत अनल ज्यौं अरनि मैं चिंतामनि कहै निगमनि बखानि जाकौ ज्योति उडगन आदि चंद्रमा तरनि मैं॥वनमैं सखानि संग गोधन चरावैं लेवैं सुख पावैं सावन औ भादौं की भैरनि मैं॥सलल समीप निरमल सिला पर हरि खात दधि भात गिरि कंदरा धरनि मैं॥ ४१॥दोहा॥अर्थ व्यक्त प्रसादतें अर्थ आनि जो कोइ॥तहाँ जो अर्थ व्यक्तासौं अलंकार का

छु होइ॥४३॥अथ व्यंग्यको उदाहरन॥कवि
त्त॥ कहाँ जागे रैन आये निपट उनीदे हैंजु
सोइ रहो प्यारे बिछ्यो आछो परजंक है॥
खेलतिहै चाँदनीमैं ग्वालन संग काहू त्य
लही को नामलीजे काहा काछु संकहै॥यौं
ही भले मानसै लगावती कलंक है कोउ
ख्यो काहू चिंतामनि रतिहू को अंकहै॥
पीतरंग अमर सोभयो नीलरंग लाल यहाँ
हो गुपाल तुम्हें काहेको कलंक है॥४४॥
माधुर्यको उदाहरन॥सवैया॥व्यासतैं आदि या
हैं कविजे जग ऊपर सोभा लहू विसेखे॥
इंदु कहा अर बिंद कहा हो गुविंद वे आन
नके समलेखे॥ तौ सिगरे फल भाग गनौ
मन आपन भागनि की ध्वनि लेखे॥ तौ मुनि
मैनके बानन वारिये वारका नंद कुमार है
देखो॥४५॥समताको उदाहरन॥दोहा॥जामैं
पद्यामतुलित है सोसमता पहिचानि॥यारे वा
हो प्रकारयौं विषम बंधु जानि आनि॥४६॥
अर्थ प्रौढ मैं जहं कहत दोष बखान्यो जात
काहू प्रवन्धन मैंजु मग एकै कहा सुहात॥
४६॥च्चैदैजु तुनसन हर धनुष तौ तुममैं दल

कोइ॥हमसौं तुमसौं भलीविधि इंदजुद्ध पुनि होइ॥४७॥काथ मध्य जो काहि गये पर सरामकी उक्ति॥वैनन उद्धत रीति विन वामे ऐसी युक्ति॥४८॥जहं समता जो पद निमें वद्ध वद्ध नुप्रास॥शव्द अलं कारन विषै तिनको प्रगट प्रकास॥४९॥समता को उदाहरन॥कवित्त॥चिंतामनि कांच कुच भार लंक लचधाल सोहै ननका छविखान की॥चपल विलास मद आलस वलितनयन ललित विलोकनि लसति मृदु वानिकी नाक मुक्ता हल अधर लाल रंग संगली नी रुचि संध्या राग नवल प्रभानिकी॥वदन कमल पर अलिज्यौ अल कलोल अमल कपोलनि झलक मुसक्यानिकी॥५०॥सौकुमार्य अप रुष वदन श्रुत कटुदोष अभाउ।उज्वल वच्यनु कांतियह ग्राम्य अभाउ गनाउ॥सौकुमार्यको उदाहरन॥सवैया॥वामनि मंदिर की छवि चंद छपाकर की छवि पुंजनि पोख्यौ॥पाइकै स्वच्छ मनोहर चांदनी चापुलै मैन महावल रोख्यौ संदरिको मुख चंदको छाडि चकोरन चंद

मयूषन चोर्यो॥चंद सिलानितें नीर भा
र्यो सुमवे तियको विरहा गिनि लोर्यो
५१॥दोहा॥शब्द अर्थमे लक्षना लंगुनको
तिथि जानि॥अव वरनत प्राचीन मत
दूनें अर्थ गुन मानि॥५१॥प्रौढ सुव्याधि
समास पुनि ओज प्रसाद वखानि॥पुनि
माधुर्य उदारता सुकु मारता जुजानि॥५
अर्थ व्यक्त पुनि औरहैं कांति श्लेष रुक्ष
नि अवे वस्य है सौंनिकी अर्थ दृष्टि तो
नि॥५४॥वरनी एक अनोनिहै अर्थ दृष्ट
यह कोइ॥अन्य छाया जानि पुनि अर्थ
ष्ट इनहोइ॥५५॥प्रौढा कोल०॥वाक्य रच
न पद अर्थ में एक प्रौढ यह कोइ॥वा
क्यअर्थमे पद रचन प्रौढ दूसरी होइ॥५६
पदार्थ मे वाक्यार्थ कथनं॥अत्रि नयन सं
भव सदा संभु मौलि हात वास॥पति वि
रहिन तियवध लिखौ वाल यह नीति वि
लास॥५७॥उज्वल वेष विलासिनी उज्व
ल जाकी देह॥चलि हैत तयोनको चली
चांदनी मांह॥५८॥वाक्यार्थ ने पद रचना॥
यह स्याम लखत निसा लखी सिलीहैजाहि

सो स्यामा अभि सारिका सुहात सुहात फा-
ल चाहि॥५९॥एक वाक्यार्थ मैं अनेक
वाक्यार्थ कथन॥कवित्त॥वामन काहाऊं वै
से जप तप हीनके के जनम बितायो है
असाधुनके साथमैं॥कौन गहू मेंथी जोपै
अलिथ नपूजे कैसौ पंडित हैं आन वस
भटकौ अकाथमैं॥चिंतामनि कहे कैसें
कवि पद पाऊं जोन कवहूं गुविंद जूको
गाऊं गुन गाथमैं॥पतित वनाइ भयो बा
ल जोवनाइको सो पतित पावन परमेश्वर
के हाथमैं॥६०॥दोहा॥वहुवाक्यनको अर्थ जो
एक वाक्यमे होइ॥याहू पौढ समास यह
वरनत हैं कवि कोइ॥६१॥अनेक वाक्यार्थ
नको एक वाक्यार्थ करि कथन रूप समास
गुनको उदाहरन दो·वालक अधर रद उरज छ-
वि वीज फूल फल जूट॥वैस संधि में दां
छिनी लई विचारी लूट॥६२॥याविधिको वै
[illegible] मैं अलंकार कछु होइ॥ एसो वर्नन
[illegible] गुन समुझौ सुतोल कोइ॥६३॥साभि
[illegible] पदनि कथनि वोज अर्थ गुन कोइ॥
[illegible] पुनरार्थ पद दोषको इहां अभावै होइ॥६

६५॥साभिप्राय श्लोकको उदाहरन॥कवि
त्त॥ हौं तौ हौं अनाथ तुम नाथनके नाथही
जू दीन तुम दीन बंधु नाम निरुवाह्यौहै
हौं तौ हौं पतित तुम पतित पावन वेद पु
रान बखान कछु कह्यौ नांनदीनोहै॥कुंद
कारी सेव हौं जो काहू मेरी सेवा रीझो आप
हीने अपराधे चिंतामनि लीनोहै॥अव तु
मैं मेरी रक्षा करवेही परी राम रावरे ही मोहि
निजु नातो जोरि दीनोहै॥ ६६॥दोहा॥ जहां
अधिक पद प्रगट नहिं विमल अनागत प
साद॥सुतौ अधिक पद दोषकौ यह अभा
व अति वाद॥ ६६॥ अवै गुन प्रसादकौ उ
दाहरन-सो॰ कुंदनवरन तुलित तनु वसन
कुसुमी रंग लसत लाल मनि वेसरी ल
ल वाल मद अंग॥ ६७॥ लघो जहा वैचित्र
जो सो माधुर्य निहारि॥ यह अनपंचीकृत
दोषकी जहां अभाव विचारि॥ ६८॥ चौपाई
रचना ज्ञानकी आही ननकी जीति॥ संतानि
सज्ञान की भली नीकी हरिकी रीति॥ ६९॥
मंगल मय कोमल अरथ जहा मानत कवि
नि॥ अमंगल्य अश्लीलकौ यह अभाव मन

आनि॥७०॥करि लीजै उत्तम क्रिया हरि
पद प्रीति विशेष॥रहत सदा उत्तम पुरुष
या जगकी रति सेष॥७१॥ अर्थ वीजत अ
नामता उदारता सो जांनि॥नाम दोषको
सज्जन वृति कहो अभावे मानि॥७२॥मो
हि सैन चंडाल यह अदय महा दुखदेत॥
सुंदरि सो तोपर सदय भलो भाग इतहेत
७३॥जाको ऐसो रूपहै तैसो वरनो होइ॥स्व
भावोक्ति अलंकार यहु अर्थ व्यंग जोकोइ॥
७४॥कवित्त॥लालसों जटित लसै ललित
लटन वीच लाल मुख लटकन ललित ल
लाटको॥वड़ी वडी आंखें नीकी नाका मध्य
झलकत वडी मुक्ता हल अतुल छवि ठा
टको॥चिंतामनि सोहतहै अति अभिराम
तन वूंदी वर स्याम मन हरन निराटको॥
चेरी हम तेरी वड भागिनि जसोदा किलका
नि लखि ढोटाकी वटोही मोहे वाटको॥७६
दोहा॥रसनध्यानि गुनि भूत धुनि व्यंग जहाँ
रस होइ॥सुतो दीप्त रस रूप वह कांत वखा
नत सोइ॥७५॥रस ध्वुनि गुणी भूत व्यंग्य
को उदा हरन॥ आगे कही वाक्य भेद निर्णौ

य विषैं॥क्रम कौटिल्यजो अप्रगट उपमा
दिकका जुक्ति॥जो छल्नो यह अर्थकी त
हंस्लेष की उक्ति॥७६॥कवि चातुरी विचि-
त्रता यहगुन कैयोंकरि होइ॥ अक्रम भंग
अभाव वह अवे धन्य गुन कोइ॥७७॥
अस्लेष गुनको उदा हरन॥कवित्त॥एका
पलका पै वैठी सुंदरि सलोनी दोऊ चाहि
कै छवीलो लाल आयो रति केलि घर
चिंतामनि कहै आनि वैठो प्रीतम पै काहू
सौं कछुन कहि कै एकाएक डुहूंके डर॥सुख
के मनाइवे कों एकाको छिवायो नांहि वि
परीत रतिको स्वरूप लखि चित्रपर॥जोलौं
वह सकुचानि आंखैं मूंदि रही तौलौ प्या
रे प्रान प्यारीके उरोज कर पर॥७८॥वैध
र्म्यको उदा हरन॥दोहा॥ अरुन उदय रवि
होतहै अरुने अरुवत आनि॥संपति वि
पति वडेन की एके क्रमसौं जानि॥७९॥
अजोग्य अर्थको उदा हरन॥दोहा॥चंद दि
पत रमनीय रुचि सरद विमल नभधा
म॥मानो कौस्तुभ मनि लसत हरि उरमैं
अभि राम॥८०॥अन्य छाया जोनि को उदा

रन॥दोहा॥चाप मुकुट पट तडित बग पां-
ति मुकत मे दांम॥ कनक लता लखि ऊलके
आइ द्वैते घन स्याम ८१
इतिश्री चिंतामनिकवि रचितो कवि कुल
कल्प तरो प्रथमं प्रकरणं॥१॥अथ अलंकार
॥दोहा॥
शब्द अर्थ गति भेदसों अलंकार द्वै भांति
अलंकार आदिक शबद अलंकार की पां-
ति॥१॥वक्रो कति अनु प्रास पुनि कहिला
टा नुप्रास॥जमक स्लेषो चित्र पुनि पुनरु-
क्ति वदा भास॥२॥सात शब्द अलंकारये
तिनमे शब्द जोहोइ॥ताहीतें पर्जय पराति
येन भासे कोइ॥३॥अलंकार ज्यों पुरुष
के हारादिक मन आनि॥ यासो यम आदि-
क कवित अलंकार ज्यों जानि॥४॥वक्रो
कति नुप्रास ल०॥ और भांतिको वचन जो
और लगावे कोइ॥कैस्लेष कै काकसौ व-
क्रो कतिहै सोइ॥५॥स्लेष वक्रोक्तिको उदा-
हरन॥दो॰ स हृष भानु सुता निरखि परसु
जमुने समु भौन॥ सिखई जीवन चातुरी
[illegible] ताम तेन॥६॥काकु वक्रोक्तिको

उदाहरन॰दो॰गुरु वरवस परदेस पिय आ
यो ललित वसंत॥ अलि कुल कोकिल
ला बिना नहि ऐहै सखि कंत॥ ७॥ अनु
प्रासको लछ्छन॥ समता जो आखरन की
अनुप्रास जो जानि॥ छेक वृत्ति द्वै भाँति
सो द्वै विधि ताहि बखानि॥ ८॥ छेक अनु
प्रासको लछ्छन॰दो॰ ललितहै आखरन की
बारक समता होइ॥ चिंतामनि कवि क
हत यों छेक कहावै सोइ॥ ९॥ छेक अ
नुप्रास को उदाहरन॥ दो॰॥ जो अनेक सुख
मा सदन मधुर मंद मुसक्यानि॥ व्रज जी
वन आनंद घन नंद नंद लखि आनि॥
१०॥ वृत्ति अनुप्रासको लछ्छन॥ दो॰॥ एक अने
काछर रचत बार बार सर होइ॥ चिंताम
नि कवि कहत है वृत्य कहावै सोइ॥ ११
वृत्तिको उदाहरन॥ कवित्त॥ तेसुनु कूरख
रे खर काहखरे खरके ढिग तोहि परे हैं॥
मूरख तेरीया दुर्गम लंकहि खेलहि मैं रघु
नंदन ऐहैं॥ *॥ *॥ मुंडकी माल है पाइ न
हेस सौं संपति राम छिडाइ सु लैहैं॥ कुं
ल मंडन मंडित मंजुल मुंडकी माल तै

र कौ देहैं॥१२॥अनुप्रासनि भेद—दो॰—माधुर्यौ विंजकाव
रन उपनागरिका हेतु॥मिलि प्रसाद पुनि
कोमला परुषा वोज समेतु॥१३॥विदर्भी पंच
लजो गौडी परम नवीन॥रीति वाहत कोउ
उन्हे वृत्ति जेहैं रसलीन॥१४॥उपनागरिका॥
वृत्तिको उदाहरन—दो॰—छकि अनंद रति रंगके थकि
त अंग सुकुमार॥मग पग मंद गयंद गति ध
रति लसनि कुच भार॥१५॥कोमला को उदाह
रन—दो॰—कहूँ वो विसरति काहा वह मुसक्यानि अ
नूप॥लग्यो अरी हियरा लग्यो ललित लालको
रूप॥१६॥खान पान परिधान सव जानन वि
सरो वाल॥यो मांही तुमको निरखि तुम नि-
मोंही लाल॥१७॥पुरुष वृत्तिको उदाहरन॥घ
नाक्षरी॥उदय रविकरन तमरासि संहरन म
न ध्यानके धरन तमरास फाटे॥परम कि र-
पाल प्रभु पलक पाइन परन प्रीति करि पुन
के पुंज पाटे॥नामके जापसो अमाप संपति
करे प्रवल परताप की टाट डाटे॥विघन अति
सघन अघ सघन वंकट निपट विकट संकट
कटक प्रकट काटे॥१८॥लाटानुप्रासको ल॰—दो॰
तात पर्यके भेदतें दीन्हो जोपद टरसो लाटानुप्रासहै

समुभासकोंनें ले दू॥१९॥लाटा नुप्रासको उदा
हरन॥*॥तोमें दोष काछू नहीं होतन क्यों
पर तोष॥दोषजु देखत आपुमें बूंदे तिहारो
दोष॥२०॥जमकाको उदाहरन॥अरथ होत अ
न्यारथक बरननको जंहं होइ॥फेर श्रवन
सो जामकाहि बरनत यों सबकोइ॥२१॥जम
काको उदाहरन॥चंदन मुख सम तन परसि
चंदन जेठ अमोंन॥कुंदन रद तनु छवि निर
खि कुंदन रदन समान॥२२॥फूली पांति फू
ली सुरभि कोलिन गावन॥कारहे लाल लह
लहे लही छवि घन॥गावत कोकिल बानीं
पंच मदन धन॥सुदित सुमन सोहे मधु प
गन॥२३॥पद अभिन्न भिन्ना रथक वाहलत
हां अश्लेष॥याको देत उदाहरन सु नहुल्लुका
वि सुवि सेष॥२४॥सरस रसी सुखन चिरह
ग्रीषम ऋतुको घाम॥जीवन वामें अलपहै
सुधि लीजे घन स्याम॥२५॥हा हहिवो बा
लम विरह बज्र भयो बरजोर॥घनी नहीं
घनकी धमक धरकेयो नहीं कठोर॥२६॥चों
पर खेलत है काहाँ जगहि जीति सुभाइ॥ला
ल जानुहे हाथनें अरी चुकै यह दाइ॥२७

कवित्त॥ वसन दिशाहै और वासन कपाल
कार विषौ स्वादु रहै पैनहोति हिय हानियै
चिंतामनि कौंहै ऐसी रीतिहोइ दूसको कौन
वोऊ रौति मानै जाको सांची वात मानियै
तापन पहार पर गहत जतीको वेष सांप
सूल संगपैन संका उर आनियै॥ भसमलगा
वे रहै रहै सूल धरैं सदां जाके सिरआईधन
ताकी सही सूल जानियै॥ २८॥ वहु आदिदै
कार वरन्व कांम धेनु है आदि॥ चित्रा लंक
त वहुत विधि वरनत सुकवि अनादि २९
जोर चोर पर पीर हर सर वर धर धर धीर
सेर सूर पर डेर कार सर कार प्यार नर धीर॥
३०॥ खड्ग वंध कपाट वंध कमल वंध आदिग
ति गोमूत्रिका वंध इतने वंध या दोहामे देखि
ये॥ दोहा॥ एक छंदमे छंद वहु काम धेनु है सो
उ॥ वहु छंदन भाखैं वहुतयहो कहत कविको
उ॥ ३१॥ काम धेनुको उदा हरन॥ सवैया॥ आ
नंदसे रह नैन ए मोहन पेषिय सांवरो छैल
कन्हाई॥ साजत नैननि चैनजे जोहत सेखि
यो लैय अजाके रानाई॥ सीपति है रग्नुनजैम
न मोहत लेखिये तीमन वो वल माई॥ संद

रता जित मैंनजे सोहत देखिय रूप उदार
कान्हाई॥२३॥सर्वतो भद्र॥मानितें तितही
कारिकें मति रामें जपे यों कहीहै भली स
बसों॥गनितें हितही भरिकें अति कामें
हयें यों सहीहै चली नवसों॥जनितें चित
ही धरिकें अतिही रति तामें चहींहैं नली
अवसों॥धरितें तितहीं अरिकें तित नामें
लये यों गहीहैं गली जवसों॥२४॥दोहा॥
भिन्न पदन में एक सों जहां अर्थ आभास
चिंतामनि कवि कहत सों पुन रुक्त वदभास
२४॥तन सुवरन कंचन तुलित घन वादर
सम वार॥आंखि सरसी नीरसी सुंदर रूप उ
दार॥२५॥सब्द चित्र इत ए सबै अधम का
वित पहि चानि॥जोतहैं ध्वनि हीनतें अर्थ
चित्र सोमानि॥२६॥लछना भिन गुन्या स
मुभ शब्द अर्थ भिन जानि॥अलंकार इ
हि विधि गये विद्या नाथ वखानि॥२७॥
इतिश्री मत चिंतामनि विरचिते का
वि कुल कल्प तरौ शब्द अलंकारनि
रूपनं नाम द्वितीयं प्रकरणं २॥
शिव गिरि पर गज मुख मुदित गहयान गि

रिजा पौर॥एक विनायक कारन हैं एकवि
नायक मोर॥ १ ॥जामें मंजुल आनसों स
मता वरनी होइ॥वर्ण मान कछु वस्तुजो उ
पमां कहिये सोइ॥ २ ॥सो पुनि श्रोत्री आ
रथी द्वै विधि चितमें ल्याय॥पूरन लुप्ताभे
दते दोऊ दुविध गनाय॥३॥ज्यों आदिक
पदके दिये श्रोती उपमा जानि॥सदृस तुल्य
पदके दिये होति आरथी आनि॥४॥उप
मा जो उप मेय पद उपमा वाचक होइ॥अ
रु साधारन धर्म यह पूरन उपमा सोइ॥५
श्रोत्री पूर्णा उपमा को उदाहरन॥ नाह दचाऊ
विरहतें आइ अचानक गेह॥एवा वीचवी
वेलि ज्यों उमडि वरस जल मेह॥६॥ श्रीय
दु नंदन द्वारिका नाथ विभूति महा कविको
वरनै क्यों॥ श्रीपति आपही वूझतहै अरु दे
खि महा छवि रीझतहै यों॥लालन के झझ
रीनिकी मंदिर सुंदरी चंदन सों झलकैं यों॥
लाल रुलाकान सों जवारे विलसैं मुनियान
भरे पिंजरान ज्यों॥७॥अथो पूर्णोपमाको उ
दाहरन॥दोहा॥वल कल चीर जटा धरें गं
गा जलके तीर॥राम लखन दोऊ जाने भये रि

षिनके तूल ॥८॥ जहां एक द्वै तीनिको लोप चारिमैं होइ ॥ चिंतामनि कवि कहतहै लुप्ता कहिये सोइ ॥ उपमान लुप्ता ॥ चिंतामनि मनु जगत मैं ढूंढ फिरौ चहु ओर ॥ तोसम तोसन मोहनी कौनि तरुनि सिर मौर ॥१०॥ उपमेय लुप्ता ॥ सुललित खंजन से चपल वसत रहत वेचित्त ॥ तिन परनिवछा वरि करे तन मन सव कछु वित्त ॥११॥ धर्मलुप्ता ॥ वदन चंदसो तरुनिको ओर सुधासे वैन ॥ चंद्रिक सी हासी लसे इंदी वरसे नैन ॥१२॥ वाचक लुप्ता ॥ सजल जलद अभि राम तनु तडित ललित पट पीति ॥ नंद नंदन सुविचंदमुख चोरत चित नव नीत ॥१३॥ जित यकहिब उपमेय जहंसे उपमान अनेक ॥ सोमालोपम जानिये भिन्न धर्म के एक ॥१४॥ अभिन्न धर्ममालोपकोउदाहरन ॥ कवित्त ॥ सरदतैंजलकीज्यों दिनतैं कमलकीज्यों धनतैं ज्यौं थलकी निपट सर साईहै ॥ घनतैं सांवनकी ज्यों वोपतैं रतनकी ज्यों गुनतैं सुजानकीज्यों परम सुहाईहै ॥ चिंतामनि कहै आछे अच्छरनि छंदकी ज्यों निसा गम चंद

की ज्यौं दृग सुख दाईहै॥ नगौंतैं ज्यौं कंचन
वसं तैज्यौं वनकी ज्यौं जोवनतैं तनकी नि-
काई अधिकाई है॥ २५॥ भिन्न धर्म मालोप
माको उदाहरन.क॰ मालती ज्यौं मोदकौं वदा
वति सहज वास सुधा ज्यौं जियाइवेकी
जानन धरतिहै॥ चिंतामनि चारौंवोर वारति उ
ज्यारी प्यारी चंद्रिका ज्यौं मेरो चित्त चाइन
भरतिहै॥ कारणी ज्यौं मंदचारु चलति मयं-
क मुखी मंद राज्यौं मोहि महा मोहितवा
रतिहै॥ प्रानज्यौं सुंदरि नेकु हियेतें टरति
नांहिं नाद ज्यौं नवेली नैन कोर विह रतिहै
२६॥ दोहा॥ इत साधारन धर्म बुध जन द्वै
भांति गनाइ॥ वस्तु और प्रति वस्तुसो आभ
विंवोज्ज वनाइ॥ २७॥ एक अर्थ द्वै शब्दसों ज
हं कहिये द्वै वार॥ कहींवस्तु प्रति वस्तु यह
भावस्तु बुद्धि विचार॥ २८॥ एक शब्दसों अर्थ
जुग जहां यथान्यो होइ॥ तहां विंव प्रति विंव
यह भाव कहै कवि कोइ २९ वस्तु प्रवस्तु भाव.दो-
निज तनुतैं पिय तनु परसि ज्यौं सुख अधि
क उदोत॥ आपुनतैं पिय पर सखी अधिक
प्रेमत्यों होत॥ ३०॥ विंव प्रति विंव॥ ताह वचा-

ई. विरहतें आइ अचानक गेह॥ दवा वीचकी
वाल ज्यौं उमड वरस निसमेह॥२१॥ प्रथमहि
जो उपमेय वह पुनि उपमान जु होइ॥ वस्तु औ
रयौं क्रमजु यह रसनो पमहै सोइ॥२२॥ मति
सम मूरति मधुर अरु मूरति सरस समाज
तेजन सहित समान सौं श्री अजेय व्रजराज॥
२३॥ कंचन तुलित मन मन तुलित सकल वि
राजत काल॥ काजतुलित निरमल सुजस
सतत साधु सिर ताज॥२४॥ अनन्वय को लच्छ
न॥ दोहा॥ कहिये जो उपमेय अरु वहै जहां
उपमान॥ ताहि अनन्वय कहतहैं पंडित सु
कवि सुजान॥२५॥ हियो हरत अरु करत
अति चिंतामनि चितचैन॥ वा सुंदर केमैल
षे वाही कैसे नैन॥२६॥ जहां वरर्यें उपमान
को वदलो वरन्यो होइ॥ उपमेयो उमान क
हि वरनैहै सव कोइ॥२७॥ नैन कमल से क
मल से लसत नैनछवि भार॥ वदन चंदसों
वदनसों चन्द प्रभा विस्तार॥२८॥ सदृस धर्म
सो अन्यता संभावन यों होइ॥ वरर्यें भानु का
हु वस्तुको उत्प्रेक्षा कहि सोइ॥२९॥ उत्प्रेक्षा
इवाय्य अरु ...तय माना और॥ विनो आ-

द्विपदविन गनो प्रतिय माना ठौर॥३०॥जाति क्रिया गुन द्रव्यकी जोहै अध्य वसाइ॥ताको विषय सुनो इहै चौविधद्विविध गनाइ॥*॥ ३१॥चौविध चिंतामनि कहै अध्यवसाइ वनाइ॥क्रमतेद्विविध सुजोगए विद्यानाथ गनाइ ३२॥ताके भाव अभाव को वाच्या गम्यौ जानि हेतु वाच्यता गम्यता वाच्या द्विविध वखानि॥ ३४॥ [illegible] द्वि सरूपके हेतुहिके फलरूप॥ अध्य वसाइ विषयसु यों भेद वहुत जे अरू प॥३५॥वाच्या उत्प्रेक्षा विषय हेतुक फल जित होइ॥वाच्यौ होइ निमित्त जित गम्य तहां नहिं सोइ॥३६॥जातें वाच्य स्वरूप की उत्प्रेक्षाही मांह॥वाच्य गम्यता अपको वरनी विद्या नोंह॥३७॥उपात्त गुनि निमित जाति भाव स्वरूप उत्प्रेक्षा॥दोहा॥विसद रूप हिय रामकुन विलसत कच्व उतमंग॥जनु य मुना जल पूर पर झलकत गंगतरंग॥३८॥ उपात्त क्रिया निमित्त जाति भाव स्वरूप उत्प्रेक्षा॥दोहा॥जघन पुलिन परहीर मनि जडित किंकिनी कांति॥बोलति डोलति मधुर जनु कल मराल की पांति॥३९॥अनु पात्त

गुन निमित्त जाति भाव स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ दो०
वदन इंदु समहीर मनि वार सुकात च्कहु ओ
र॥ सुद्ध विंद सुंदर मनो इंदुवाल जुन छोर
४०॥ अनु पाति गुन निमित्त जाति भाव स्व
रूप उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ लखे नयन सुंदरिनके
श्री घन स्याम सकाम ॥ विलसति कंचन
वेलिवन जनु खंजन अभिराम ॥ ४१॥ उपा
त गुन निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ दो०
श्री हरि वचन प्रमान जग की वेधमे प्रका
स॥ यह समभात अव कारन तुम हरवर ज
वन विनास॥ ४२॥ उपात्त क्रिया निमित्त जात्य
भावस्व रूपो त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ पंचा नन चरचा
करत सुनत शंभुको दास॥ पाप मलंग घटा
मनो पावत भयन विनास॥ ४३॥ अनु पात
गुन निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ दिन दिन
विभव यह योंपरस जाके उर निति नाहि ॥ *
छत्र चमर आयु धन दिन भूपति भूजनु
नाहि ॥ ४४ ॥*॥ * ॥ ४४ ॥ अनु पाति क्रिया
निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ दु-
र्जन दुर्जनता प्रगटि सज्जन हिये ससोवा
राम तेज मानो भयो अखिल अवल यह लो

क॥४५॥जानि हेतू स्वेदा॥श्री गिरिजा के ध्या
नते ज्ञान होत मन भूरि॥पदनाद विधि अ-
वलोकि जनु होतु अंध्यारी दूरि॥४६॥जान्य
भाव हेत स्वेदा॥मही महा नहिं कल्प तरु
यह कारि हिये विचार॥जनु सज्जान प्रति पा
लको कान्ह लियो अव तार॥४७॥जानि २
फलो स्वेदा॥दोहा॥कालिंदी जल गोपिका
जल मुख छवि अधि काल॥कान्ह भौंन सु
ख रूप लखि जनु फूले जलजाल॥४८॥
जान्य भाव फलो स्वेदा॥दोहा॥चंदमुखी यों
चंद्रिका में कीन्हो अभिसार॥जनु क्षीर धि-
अधि देवता कोध्याधि संचार॥४९॥क्रि-
या स्वरूपो स्वेदा॥दोहा॥कुटिल कूवरी आ-
पने तनमें मन अटकाइ॥जनु वृंदावन आ-
गमन हटक्यो हरिको आइ॥५०॥क्रियाहे-
तू स्वेदा॥दो॰॥सुंदरि सौंहैं धनुष धर तोमन २
वास अनंग॥लोचन वांन हने मनौं घ्याकुल ह
रिको अंग॥५१॥क्रिया भाव हेतू स्वेदा॥दो॰या
दिनतें मृग लोचनी ललित भई पियराइ॥निज
छवि अनदेख मनौं वदन कमल कुम्हिलाइ५२
क्रिया फलो स्वेदा॥दो॰॥करैपो दीन जनु वदन

तैंनहीं राम यह नाम॥ मानो ता प्रति पालकौ तव-
ही पंहुचे राम॥५३॥ क्रियाभाव फलो त्प्रेक्षा॥ सव अ-
वतार प्रपंच मय आपु आत्मा शुद्ध॥ कासि प्रपंच
अन लखन कौं मनौ ध्यान मय बुद्ध॥५४॥ गुनस्व
रूपोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ सांझ धेनु गन दुहन की गुंजा-
रजन गंभीर॥ खजन नचाइल तानकी मनो
मुरज ध्वनि धीर॥५५॥ गुन भाव स्वरूपोत्प्रे-
क्षा॥ दोहा॥ राम चंद्र की कौमुदी कीरति विदि-
त उदार॥ स्वेत दीप कीन्हो मनो यह सिगरो सं-
सार॥५६॥ लाल औरके ध्यान जनु कान्ह व-
हावत लाल॥ सुंदरि तैं जो बस किये सुंदर २
स्याम रसाल॥५७॥ गुन भाव हेतू त्प्रेक्षा॥ दोहा॥
श्री नारायण वदन विधु लखि दुष मिटत असेष
जाते जनु सब तव परष दृग कुवलय अन मेष॥
५८॥ गुन फलो त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ साधु सुदामा को-
दई संपति स्याम निवाहि॥ उन सेवा कीन्ही भ-
ली मनौ इंद्र सखि चाहि॥५९॥ गुनभाव फलो-
त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ देत असाधुन साधु गति यौं हरिनाम
निबाहि॥ मनौ कियो उनकी रतन पाप अभावे २
चाहि॥६०॥ द्रव्य स्वरूपो त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ चंद दिप-
त रमनीय रुचि सरद विमल नभ स्याम॥ मानौं

कौस्तुभ मनि लसति हर उरमैं अभिराम॥६१
दूव्य भाव फलो त्प्रेक्षा॥दोहा॥उमडि विंद्ध्यकी
भाँति सौं हरि रवि ससि संचार॥तिमिर अन्व-
ल कीन्हो मनौं जग अकास संधार॥६२॥२
दूव्य हेतू त्प्रेक्षा॥दोहा॥ग्रीषम पति हुजराज
धन ग्रीषम ऊँख सभीत॥चंद्र करस भाँनौं
कियौं सकल जगत मय सीत॥६३॥दूव्य भा
व हेतू त्प्रेक्षा॥दोहा॥जल धर मद जल गजन
जनु किय सीस स्रूर अभाव॥जानैं जातन रा-
ति दिन पावस ऋतु परभाव॥६४॥दूव्य फ
लो त्प्रेक्षा॥दोहा॥यौं फैली है चंद्रिका महि अं
वर अव गाहि॥मानौ उमड्यौ छीर निधि चं
द नंद नहि चाहि॥६५॥दूव्य भाव फलो त्प्रेक्षा
दोहा॥मदन दहन यह जानि यह मदन सहा
यक आहि॥धरे भुजंगम नद्दम लय अनि-
ल विनासहि चाहि॥६६॥यौं उत प्रेक्षा मैं कि
यो विद्यानाथ प्रकार॥उपमा हूंमैं करि सका-
ल यह क्रम का संचार॥६६॥उत्प्रेक्षा संभा-
वना वस्तु हेत फल रूप॥उक्ता नुक्ता प्रथम
ये काहत एक कवि भूप॥६७॥सिद्धा सिद्धा
स्पद वहु रिधहिं विवक्षा निरधारि॥सुभग कु

वलया नंदसौं यह्वात कियौं चित्रारी॥६६॥अ-
क्ता स्यद स्वरूपो त्प्रेक्षा॥दोहा॥मुख विधु लखि
कुच कोक जुग यह विरहाग्नि प्रकास॥रोमाव-
लि जनुलई उन दुखन धूम उसास॥६९॥
अक्ता स्पद हेतू त्प्रेक्षा॥दोहा॥वरसत अंज-
न नभ मनो तमलीपत जनु अंग॥स्याम स्या-
म स्वरूप धरित कैयौं स्याम कौ संग॥७०॥सि-
द्धास्पद हेतूत्प्रेक्षा॥दोहा॥सुंदरि भूमि धरैग-
नो लाल तिहारे पाइ॥मुख समता कूं आमनौ
विधु लखि कामल रिसाइ॥७१॥सिद्धास्पद व
स्तू त्प्रेक्षा॥दोहा॥कुच जीतन कौ हेम गिरि
शृंगनि सौ संनद्ध॥भार गहन कौ कनकजनु
दामन वद्ध निवद्ध॥७२॥असिद्धा स्पद फलो
त्प्रेक्षा॥दोहा॥सूरज सनमुख जल वसत सह-
त सदा दुख कंज॥सुंदरि पग साजोज्य कौ
कारन मनहु तपकंज॥७३॥प्रतीप मानो त्प्रे
क्षाको उदाहरन॥कवित्त॥ अलि मनो हर दंप-
तिके आलिंगन पर वारियत त्रिभुवन रूप-
मा सुवेखहै॥चिंतामनि कहै कवि कौरे कहि
सके कोऊ अद्भुत कुरूप रचना अलेखहै॥
सुवरन लताहै तमाल रुख तह संग घन स्या

म संग थिर दामिनि विसेषहै॥राधाजूको देषि देव वनिता वखानतीहैं॥हरि उर निरख परवान हेम रेखहै॥७४॥स्मरनालंकारको ल॰ दोहा॥सदृश वस्तु अनवे सद्दश वर त्वत्तरको ग्यान॥स्मरन वोलत विवुध जन समझौ सुकवि सुज्ञान॥७५॥स्मरनालंकारको उदाहरन॥दोहा॥दृगन सुधा वरखत सरद राका चंद निहारि॥सुधि आवत वा वदनकी जापर हौं वलि हारि॥७६॥जहं विषई अरु विखयको वरन्यौं होइ अभेद॥अलंकार रूपक तहाँ समझौ सुजन अखेद॥७७॥जो अतिरोहित विषयको उपकारक जो होइ॥विषई सो रूपक वरन यौं वरनत कवि कोइ॥७८ पुनि द्वैतसावयव अरु निर्वय वस्तु प्रकार है विधिसावयव पुनि त्रिविधि वरनत विमल विचार॥७९॥सर्ववस्तु-विषयक प्रथम वरनत सुकवि विचारि॥एक देस विवरन अपर परं परित निरध्धारि॥८०॥निरवयवो पुनि द्विविध गन केवल माला रूप॥इनके देत उदाहरन सुनिये सुजन अनूप॥८१ सर्ववस्तु विषयको उदाहरन॥कवित्त॥को

किल कपो तकीर कुलनि कोकल काल सारे कोला हल दिसि विदिसि मे छायोहै॥ लाए राते पातक पताका पाह राते मनि पुहुप प्राग पूर अमर उडायो है॥ भौंर सोते माल मद गंजन मतंग छूट मोहन सौं रूसी मन कौल मन भायोहै॥ आली महा वली रतिपति म-हीपति को सोरितु पति सेनापति सेन साजि आयोहै॥ ८२॥ रूपक को साधारन उदा हरन॥ कवित्त॥ जाहि मिलि नैन नील कमल रहे हैं कानमुकुता नखत पर वारके विन्हाये है परम मधुर मुसक्यानि कौमुदी सौं वडो सु-खमा गरब बारि जानको विडार्यौहै॥ निर खत सबन को सब वरखत को हिये हरखत-हरि ध्यान निर धार्यौहै॥ चिंतामनि कहे चख-कोरन को आनंद मुख चंद राधिका मुकुंद को निहार्यौहै॥ ८३॥ एकदेस विवर्ति रूपक को उदा-हरन॥ दोहा॥ सरद सिंहा सन चमरिका स-जल जलज कर अत्र॥ किरनि माल मुक्ता-वली विधु अनंग सिर छत्र॥ ८४॥ परं परित को लछन॥ दोहा॥ जहाँ एक आरोप मैं औरे-पात्तर होइ॥ परं परित रूपक तहाँ वरनि कि

तिहिंकोइ॥८५॥लिस्ट विसेषन होइ कहं और अलि इहनिरधारि॥माला रूपक परं परित रूपक संभवा विचारि॥८६॥श्लिस्ट विशेषनप रं परित को उदा हरन॥दोहा॥सुंदर नंदन नंद को रूप जितो जनु काम॥गोपी फूली हेम तन वेलि रसिक अलि स्याम॥८७॥श्लिस्ट माला परंपरित को उदा हरन॥दोहा॥जीवन दायक स्याम घन गोपी पदमिन मित्र॥संच रत्त महरन काला निधि श्री गोविंद विचित्र॥ ८८॥अश्लिस्ट विसेषन माला रूपको उदाह रन॥व्रज जन सुर गन कल्प तरु मन अनंदन त स वंद॥सुखमा सलिल समुद्र हरि लोचन कु वलय चंद॥८९॥दूसरो उदाहरन॥कवित्त॥ मन कुल मंदाकिनि जलक कमल महा राज महा विमल प्रकासिन विविधि नय॥वृंदाव न अरविंद नैन इंदु मुख इंदी वर दल दाम सुं दर मदा सदज॥चिंतामनि मुनिमन मोरकेन वीन घन नील नैन मीन सुधा समुद्र आनंद मय॥कौसिल्या कल्प वेलि संभव सुमन राजा दशरथ दूध निधि चंद राम चंदजय॥९०॥२ निर वयव केवल रूपको उदा हरन॥दोहा॥अं

ललित अलक मुख चंद पर मनकी यही अगौ
ट॥ बिहसौंहैं चंचल नयन झीने अंचल वोट॥
८१॥ निरवय माला रूपको को उदा हरन॥
दोहा॥ दर पसिरी वांदर पकी पनकी सहज म
साल॥ भागनिकी अथि देवता कौन धन्य-
ही बाल॥८२॥ परनामालंकार॥ दोहा॥ लखि
विषई विषया भको कारन अहानि उपजोग
रूपकाते परनाम जो भिन्न काहत कवि लोग॥
८३॥ व्रज वासिनके जगत पर और सरा गिन
जानि॥ कलपद्रुम तिनको भयो आतु आ-
त्मा आनि॥८४॥ जहां विषे विषई सुभगक
वि संमत मन नाहि॥ सो देहासपद होत है कवि र
संदेह नहांहि॥८५॥ प्रथम कहत निश्चय गर
भ निश्च यांत पुनि जान॥ अलंकार संदेह य
ह सजन द्विविध मन आन॥८६॥ दर्पन धोये
ललित कित ससि यों बिन कलंक॥ अंबुज
यौंन विलास यों तिय मुख लखि मन संक॥
८७॥ निश्च यांत को उदा हरन॥ सवैया॥ खंज
नहैं धों उडानन अंबर वांकाहे यों पिरत नाहिं
चीन्है॥ भृंग है स्यामल स्वेतन वदू यों मीन है
नैनन सो दस्त, ढीन्हैं॥ कांमको बान यों पांन र.

तुनेहु भए अब याथल द्वै किन कीन्हे ॥ नैनन चैन करै निरखैं अति नैननि नैन ए जानि जुलीन्हे ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ जहां होतु है प्रकृति मैं अप्रकृतिहि कों ज्ञान ॥ भ्रांति मान यासों कहत पंडित सुकवि सुजान ॥ ९९ ॥ फटिक महल चढि विधु मुखी देखत श्री नंद नंद ॥ कह्यो सखीसों हरि चलो ऊपर आयो चंद ॥ १०० ॥ अपन्हुत ॥ विषई को आरोप कै करि जो विषय निषेध ॥ ताहि अपन्हुत कहत हैं धर्महि समुझि सुमेध ॥ १०१ ॥ कवित्त ॥ वारन मत्त विदा रयो महा तम देखि महा तमकी अधिकाई ॥ अंकमैं मारि गह्यो कर सायल जानत लोक बालक कराई ॥ [illegible] से बचै मृग लोचनी कान्ह समीप बसैतो भलाई ॥ आवत रूप [illegible] नंदहि मंद सौं इंद नहो पमृगेंद है माई ॥ १०२ ॥ उल्लेख को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कहुं ग्राहक के भेद कहुं विषय भेद सौं होइ ॥ एकहि को उल्लेख बहु कहि उल्लेख जु सोइ ॥ १०३ ॥ नाम भेद उल्लेख को उदाहरन ॥ दोहा ॥ दीन दयाल दया को जलधि सकल कामिनी काम ॥ कहत [illegible] जान कलप तरु रामहि रिपु जन नाम १०४

विषय भेद उल्लेख को उदा हरन॥ दोहा॥ कान्
न स्याम को कल्प तरु पूजन लखिलव साध्व
दीन दया निधि सब जगत सुखमा सिंधु अ
गाध॥१०५॥ श्लिष्ट श्लेष को उदा हरन॥ दो०
जीवन दायक देखिकै व्रज वासी घन स्याम
कोंन्हहि भक्त मुकुंदनीकहत कामिनी का-
म॥१०६॥ पर नाम उल्लेख यह दोउ रूप्पता
मांहि॥ भिन्न अंस हात रूप नो कल्पत कहै
नांहि॥१०७॥ अति प्रायोक्ता को लछन॥ दोहा
प्रौढ उक्ति जो कविन की अतिशयोक्ति है सो
इ॥ भिन्न अले हात भेदतें भिन्न कहौ जोइ
इ॥१०८॥ जहाँ ज्ञान उप मेयको उपमा नाहि
में होइ॥ प्रस्तुति को जो अन्यथा वाहै वर्ण
वि जोइ॥१०९॥ जो यह धौंतो होइ जो या
धि के अभिधान॥ कारज पहिले ही कहै
छै कहे निदान॥ ११०॥ अतिशयोक्ति
थि भंसट कथन प्रकार वरनत विविध
सुकवि निज मतिके अनु सार॥१११॥ अ-
तिशयोक्ति यथा क्रम उदा हरन॥ सवैया॥
न मंडल वेलिको मूल लायो अदा
कात वैयाहे॥ नील सरोज भारे मधु विन

सरनागत को तूंर सवैयौहै।डोलतु है तिल मूल
के पैनवृ धूली लखे छवि कौन छवैयौहै॥ गे
हके हूं मैं काहू सहा सुखारी जनको जनु पुन्य
पकैयौहै ॥११२॥ * ॥डोलनि बोलनि आन
काहू लख्यौ काहू आंन सुभा यहि जोऊ॥ ए
आंन काहू परिहास विला सहै आन हसी
मृदु सुधि हि सोऊ॥ आन काहू दृग कंज चि-
तै बिहै आन काहू सुनि दोलनि लोऊ॥ सखीलखै
वोपर है गनमैं मान लोवै जहां कदना कर हो
ऊ॥११३॥ सखिनो सम्हौल को समदा सौंवा-
मना मिलिवोस स्वरूप धरै॥ पुनि ताही स्वरूप
मैं कंद मुखी सब चंद्रिका आपनी चंद्र भरै
भति तापर जोतप कौरि करै पुनि तातप पै
जो बिरंचि ढरै॥ तिहुंलोक की सुंदरता हरिकै
गलमोती को वाहि कैसे तो करै॥११४॥ दोहा
जोप काशिनिन के मननि लखि छवि धन
धन स्याल प्रेम उमग पहिले भई पीछे आ
यो काम॥११५॥ स्नेह बिना मन कल उड़ुगन
को काहू औरकी होइ॥ याहि सभा सो कौन
काहु पंडित संसद कोइ॥११६॥ अति पवित्र
जल [illegible] सुदिन नित पथि काहू॥ फूली

है पति देवता कुल पतिको पति प्यारु॥११६॥उद्
दीपति बल विशेष तन कहाँ जावक रहाँ॥अनु
प्रदीपति गर्भिणी तिया सोभा कहिहे रपार॥११७
जोबन आलिंगित देह धन कुच दिन को आनंद
निसा बदन चुंबन कहाँ उदित सत्यो आप्त दे
ह॥११८॥मिलत विशेष होत कहु कहु लाप
रन जानि॥उपमा प्रतिमा होत कहु सज्जान
गम्भीन आनि॥१२०॥कहा सुचित आनिही
भई पतिको आगम जानि॥प्रगटै गात सर्व
को कान्ति निसा बदन मुख आनि॥१२१॥जा-
को रूप स्वभाव अरु क्रियाजु जैसी होइ॥ॐ
ताको तैसोई वर्णन सुख मोदी क्रिकहि कोइ॥
१२२॥कवित्त॥ जसु मति मैया तेरो रैया कन्
है है सदा चिंतामणि चैरिनको उरनि में सालिहैं
सुर बरषत गोपकुल हरषत लाल लाल बरसत
ब्रजभूमि प्रति पालिहैं॥ललित ललाट पर लटकी
हैं लटैं मानो चंदन कमल पर मधुकर आलिहैं
देख लाल पलका की पाटी को पकरि खरे खेल-
त हंसत किलकत होंस हांसिहैं॥१२३॥दूसरो उदाह
रन॥कुलही ललित विलसति सिर॥दो॰॥प्रगटित वस्तु
छपाइये जोवनाइ कछु काज॥ज्यों को दा [illegible]

सकृत पंडित सुकवि समाज॥२४॥कीन्हे हिल
रिव सुलगति कहति कालिंदी तट नारि॥ ज-
ल्ततरंग सीतल कहा सजनी वहति बयारि॥२५
तिन अर्थ को शब्द बल है या ज्यो पद एक॥तिन
कों लहैं ताति हो हि है यों कवि करत विवेक॥
२६॥सुमिहि ये धरति आगमन उमग्यो अ-
ति आनंद॥लख्यो निशा मुख चंद बलि ललत न
यन मुखचंद॥२७जाहीं कछु बिन होत कछु र-
चय अलभ्य जुबाल॥बुध जन मत सो बिन उ-
क्ति अलंकार कहि जात॥२८॥अन्य वि-
शाल विन होतिहै विद्या विमल अनूप॥ बिन
... वन को कवित यह नाहि गनत कवि भूप
२९॥ निंदत नृपति विवेक बिन चरचा को
है साप॥ दान विना सन मानको बिना दान
को ...॥३०॥ प्रस्तुति मैं जहं औरसों गुन-
... निहारि॥एक रूप लावरनि ये सो
सामान्य विचारि॥३१॥चंदन लेपन मुकत
... धर्यो सुभ्रतन चीर॥तरुनि चांदिका मि-
लि ... मनों संख को खीर॥३२॥ ...
... जल हास गुन गहै आनिको कोइ॥अ-
नं ... गुन सनो कवि जन संमत होइ॥०

१३३॥तिय मंदिर को दूसिरा पतिको भाग्य उदोत॥तनकी दीपति सौध गृह सब सुवरनकी होत॥१३४॥और वस्तु गुनको गहन जहं न कारे कछु वात॥ताहि अंत गुन कहतहें जो कवि मति अधिकात॥१३५॥गंगा जल उज्जल जमुन जल छवि अंत समेत॥दुहू मध्य मज्जन करनु हंस सेत को सेत॥१३६ सो विरोध अवि रुद्धमे जहं विरोध अभिधान॥सुतो जाति गुन क्रिया अरु द्रव्य माहं सज्ञान॥१३७॥जाति जात्या दिकन सों गुन गुनादि सों जानि॥क्रिया क्रिया अरु द्रव्य सों द्रव्य द्रव्य सों मानि॥१३८॥यों विरोध दश भांतिसों मंमट गये वखानि॥तिनके तें उदा हरन सुकवि लेहु मन मांनि॥१३९ जाति जाति विरोध॥दोहा॥अभिनद नलिनी दलकमल सेवल मृदुल मृनाल॥अनल भये या वालको विरह तिहारे लाल॥१४० परवत मे तारवन भये माखन मृदु पयान ललित पल्लवित वेसि द्रुम सव फल फूल निदान॥१४१॥जाति गुन सों विरोध॥गोपद पुहमी कनक मय गिरि सर खप कोमि-

त्त॥ सम्पुट अंबुज कान होतुहै भयो सखिनकोचि
त्त॥ २५२॥ जातिक्रिया सों विरोध॥ दोहा॥ जे
जन साधत साधुजन वचन सुधाको पान
जन्म मरन भय रहित ते सोइ पावत कल्या
न॥ २५३॥ गुन सों गुन विरोध ॥ कहा चदा
वतिहै सखी वंदन चंदन संग॥ सीतल सब
उपचार सखि जारत मेरे अंग॥ २५४॥ गुन
सों द्रव्य सों विरोध॥ दोहा॥ प्रेम मगन मुनि
जन कहत हरिजन अन्ध बनाइ॥ मेंचक
रुचि परमा तमा लोचन गोचर पाइ॥ २५५
क्रिया क्रिया सों विरोध॥ दोहा॥ लखिते सु
खपरिसुकोमेनिज मुख होत निहाल॥ नीक
पोल चुंबन करत निज मुख चुंबत लाल
२५६॥ क्रिया द्रव्यसों विरोध॥ कवित्त॥ जगत
विदित न्याय मत प्रसिद्ध यह छोटो जग स
ध्यं परमान तें नेहे कछुक॥ ताहीके समान
रच्यौ सबही कोमनु ऐसी रचीहै विरंचि
तुम रचना काछ अचूक॥ चिंता मनि कहे
ताहि और भांति करतुहे मै नवल वंत यावे
ताइ पैर मुहे लूक॥ पीतम के बिछुरत मार
मार बानन सों करतुहे मार मेरे मनके हूक्का

रहूक ॥ द्रव्य द्रव्य सों विरोधा ॥ कवित्त ॥ मालती
के फूल मालतीके फलहीं मारे फूलनकी
मार सोंहीं मारे सुकुमारीकों ॥ चिंतामनि कहै
है वसन नहीन अंग अंग औरई वरन होत अ-
निल विचारीकों ॥ भयेहैं जलज वाल सरको
जलज वाल गिरि गिरि भूत लसें जाये गिरि
धारीकों ॥ भयोहे निसाहू ससे कोंन्हे वो वियोग
सीत वार भान वृष भानकी दुलारीकों ॥ १४८ ॥ वि-
शेषको लक्षण ॥ दोहा ॥ विन प्रसिद्ध आधार जो
कोंनु आधेय वखानि ॥ एकहि को कहा वारजो
थित अनेक पल आनि ॥ १४९ ॥ एक वस्तु को
कारन जो होइ असंकयो और ॥ त्रिविधि विसे-
ष विचारिकें कहत सुकवि सिरमौर ॥ १५० ॥
देव लोक वासहु भये जिनको उजस वांनि ॥
रहति र सावति सजन नन सोधन कार विनमा
नु ॥ १५१ ॥ वह मनमें वह दृगन में वहै वचनहू
मांह ॥ वसत तिहारे वास वह हम पावे कितनां
ह ॥ १५२ ॥ स्वल उदार सुन्दार छवि गोहिं चतुर
सिर मौर ॥ नई सिरी रति दूसरी स्त्री सारदा औ
र ॥ १५३ ॥ जो अधार आधेय की न्यून रूपता
न होइ ॥ दोऊ को आधिक्य नाम अधिक अ-

लंकान सोइ॥१५५॥ पृथु आधिका लंकार को उदा हरन॥दोहा॥जाहि जसोदा गोदमैं ली न्ह मोद आखंड॥ताबालक के उदर मे लखे सकल ब्रह्मांड॥१५६॥ दूसरो उदा हरन॥कल्प अंत जाके उदर सकल चराचर रूप॥नंद नंदनी गेहमैं नाहि समावत रूप॥१५७॥ * अन्यच्च॥दोहा॥कलप अंत जाके वसत जग त सकल सवि भाग॥तोहरि अंग अमात नहि राधेको अनुराग॥१५८॥ विभावना अलंका रको लछन॥दोहा॥कारज उतपति की जहां कारनकी प्रति षेध॥सोसव काहत विभावना पंडित सुकवि सुमेध॥१५९॥ विभावना को उदा हरन॥दोहा॥वान धनु ष सव शूलको सेना अवला संग॥कौन हेतु है जीतिवो जीत तु जगत अनंग॥१६०॥ विशे षो क्तिको ल॰ दोहा॥जोअखंड कारन मिले कारज कछून होइ॥तासो विसेषो क्ति कहत पंडित सत कवि कोइ॥१६१॥ कवित्त॥मंडप मृनाल जा ल जालनके पातनके सेजहू मैं विछे जल जा तनके पातहैं॥कारी [illegible] अ नूपनदी सिकता कापूर चूर अति अवदातहैं॥

चिंतामनि ऐसी भांति विकल बिरहिनीको सी-
तल अपार उपचार अधिकालहैं॥एते परभृति
फल बिरह अगिनि धीरे धीरे होतपेन सीने होत
गातहैं॥१६२॥असंगतिको लच्छन॥दोहा॥हेतु
और थल मैं काहू काज और थल होइ॥अलं-
कार ताको कहत होति असंगति सोइ॥१६३॥
[illegible] नैन सर भोंपे लखितकि नाह॥
सखी लखी आचरज यह छिदे सौति उरमांह॥
१६४॥करि विचित्र सुविरुद्ध फल पावत कोउ
होग॥अलंकार सुन बीन यह बरनत पंडित
लोग॥१६५॥गनपति प्रभु सुनिये बचन बोलत
बिमल सुभाइ॥सबते ऊंचो होनकौं नवत तिहा
रे पाइ॥१६६॥जहां बिमल देवात काछु करत
परस परकाज॥अलंकार अन्योन्य वह बरनत
सब कबि राज॥१६७॥अन्योन्यको उदा हरन॥दो॥
नाहि छपा बनि चांदनी सकुमा बडो उपकार॥
बिपुल करतिहै चांदनी सुंदरि को अभिसार॥
१६८॥जो संजोग देवानको जामा जोग नहिं होइ
इ॥बिषम अलंकार कहत यह कबि पंडित
सब कोइ॥१६९॥कारतीकौन क्रिया फलै फल
अनर्थ कछु होइ॥जो कारज गुरान [illegible]

और विधि सोइ॥ १७०॥ यों विरुद्ध तादेखिवेको विषम कहत कविनाह॥ अलंकार कारन नके देख्यो रंथ्यन माह॥ १७१॥ प्र॰ विषम को उदाहरन॥ दोहा॥ कितसिरीख कोमल अमल कमल मुखी को अंग॥ कितकर्कस वारह रतन नील खत तपत अनंग॥ १७२॥ मदन सिली मुखके डरन सेयो वन घन कुंज॥ भये महा दुख दानि उन दुगुन सिली मुख पुंज॥ १७३॥ श्री हरिजू आरसी कुसुम स्याम तिहोर ध्यान॥ विसर होत मन मुनिनको विमल शुद्ध विज्ञान॥ १७४॥ तीसरे विषम को उदाहरन॥ दोहा॥ मोतन तापहिरे सदा तोतन सीतल संग॥ तिहीते उपज्यो विरह जारत मेरे अंग॥ १७५॥ समको लच्छन॥ दोहा॥ होत समा लंकार सो जो कछु जोग संजोग॥ द्वि विध सु वरनत सत असत जोग कहत कविलोग॥ १७६॥ संजोग समा लंकार को उदाहरन॥ सवैया॥ वेदनको छिन होत उसासन ए उनके हिए होतिहि पीरी॥ सुंदरता हरि राधिका की लखि औरकी सुंदरता विधि कीरी॥ वेइत नंद कुमार दुहो वृष भान कुमारि ए रूप गहीरी॥ जो यह जोरी मिले सखि होहिं दुहो अखियां सखियां-

नकी सीरी॥१७७॥ दूसरो उदा हरन॥ दोहा॥ प्रग-
ट भई संसार में निंदा वाही जोग॥ ताके आदर
करनको प्रगट भये खल लोग॥१७८॥ के प्र-
कत तिन होइबो अप्रत्तन को कोइ॥ तुल्य धं
र्म इक वारही तुल्य जोगता होइ॥१७९॥ मंडु-
ल विथ मंदा किनी वृष वाहन सव गात॥ स-
दा सदा शिव ल्यें सांसि सेवे बात अव दात १८०
प्रकृति और अप्रकृति की वृत्ति एकाही वार
कारक की वहु क्रियन में दीपक उक्ति उदार॥
१८१॥ प्रस्तुति अप्रस्तुतिन को सदृस धर्म संजो
ग॥ गम्य होइ अगम्य जित तित दीपक बुध
लोग॥१८२॥ श्री राधाके अधर रस स्वादन औ
सुहोइ॥ दाख सिता मधु सुधा ए हरिको भाव
त नाहि॥१८३॥ लोभी जन धन लाभ अरु जिय
जन संग सकाम॥ साधु सकल श्री रामके ना
म लहत आराम॥१८४॥ देह तरुनि मन गेह
पुनि लसत सिरी संपन्न॥ खल अरु वित वादि
न ए नीके लगे प्रसन्न॥१८५॥ दूखन पूरव दो
जो उत्तर को उप कार॥ माली दीपक होत
समझो बुद्धि उदार॥१८६॥ कवित्त॥ नैनो
चित्त वैनन मे मन तोमहं जीवन मे यह जो

ता यह जोबन बीच बनाई अनूपम रूप कला
पहि चानी॥ताही अनूपम रूप कलामैं मनो
रथ मैन महा सुख दानी॥ताते बढ्यो मन मो-
हनको मनतो मिलिवेको मनो रथ रानी॥१८७
दोहा॥आवति इत पुनि जाति है ललित दि-
खावति गात॥मृग नैनी हेरनि हंसनि काहनि
मधुर कछु बात॥१८८॥सदृस धर्म तुलका जो
शब्द भेद सो होइ॥कवित एकाद्वै बात मैप्रति
वस्तू पमै सोइ॥१८९॥प्रति वस्तूपमको उदाह-
रन दोहा॥जो हरिके हियरा लगी नरानि सीस
मनि सोइ॥लिय तान ऊपर उरबसी सबनि सरा-
ही कोइ॥१९०॥माला मयप्रति वस्तू पमा॥
दोहा॥हीरसिनैसेते मुबान अथ दाते कैला-
स॥॥रवित सतको हियो थव लैससिसिरपर
गात॥१९१॥मेरुध द्युति ही तुंग विधु सील-
ल विन उपाइ॥सहज समुद गंभीर अत सु-
जन सुभाइ गनोइ॥१९२॥जहं विंव प्रति विंव-
को भाव सबन मैं होइ॥ [illegible] है
सनकु ताहि सब कोइ॥१९३॥जहां तुलित द्वै
वस्तुको शब्द भेद अभि धान॥सो विंवप्रति
विंव मय भाव कहत सुजान॥१९४॥अलंका

रदृष्टांत में सदल धर्म कोहोइ ॥ विते यनकुंकोहो इ पुनि विसेष्य मे सोइ ॥ १९५ ॥ लाल तिहारे लाखन ही बात हिये हुलसात ॥ लखनि करनि अबलो बातहिं पदमिनि पदमिनि कात ॥ १९६ ॥ वैधर्म से दृष्टांत ॥ दोहा ॥ काहूं दंम दंमीनको छप्यो न रहत निदान ॥ अरव मारतही होतु है प्रगट वकाल को ध्यान ॥ १९७ ॥ अन होनी जग वस्तुको कछु संबंध जु होइ ॥ उपमा पर वाल्पका इते निदर्सना कहि सोइ ॥ १९८ ॥ कित अबला हम अलप मति कित यहु जोग अगाध ॥ कैयोंकर कैरे पपील का अचल उचावन साध ॥ १९९ ॥ अलि गंजन वंधूक दुति अधर अधर लखि लाल ॥ धरी नई दुति इंदुकी कांत वदन मे वाल ॥ २०० ॥ अपने अपने हतुको जोजो संबंध ज्ञान ॥ होत क्रियाते निदर्सना ताहू कहत सुजान ॥ २०१ कवित्त ॥ उज्जल स्वक्ष सुदृत प्रभानि धरे गुन वंत अनूपमजोहेपाइकै उन्नत सोपद उत्तमसोहत है निरखे मन मोहे ॥ सो यह बात विचारि वहि म न देख्यो विचारि भलो सबकोहे मंजुल जो मुकता हल हार सो नारिके ऊंचे उ-

रंजन सोहै ॥२०३॥ दोहा ॥ अधिकार जहां उप-
मेय कोवि थटवर नत उप मान ॥ लहं विल रे-
वा वनाइकै वरनत सुकवि सुजान ॥ २०३ ॥ ॐ
कवित्त ॥ उपमेय गात उत वाढै अस अधिका-
र्ल जाहै उपमान को ॥ जहै होत है दून दुहुन को
दून वाथन सुकवि सुजान को ॥ काहु वाथन
होइ दूहून काहु स्वाही को जानिये ॥ काहु धन
व्हौ काहु अधिक आच्छिपले काहु मानिये ॥ ॐ
२०४ ॥ दोहा ॥ ए चारि चारि सुत होत वारह चा-
रिकेलिसलसों ॥ सव भेद स वित रेख को म नि
जानि लेहु विसेख सों ॥ २०५ ॥ विविधि हाव भाव
ना सहित अति सुंदर जग माहि ॥ सजनि लिख
री चंद ज्यों वदन काल की नाहि ॥ २०६ ॥ रदछद
वाहा प्रवाल ज्यों अमल कमल ज्यों नैन ॥ कों
कहिये कुन्द कली ज्यों वारत वाहा चित चैन
२०७ ॥ सुंदर मुख अकलंक मुख जिल्यो कलं-
की चंद ॥ दृगन जि ने खंजन कमल जनु की-
न्हे सचि संद ॥ २०८ ॥ नीरी जिर जान्यो है सदा की-
नी वि जुरी वाल ॥ लिंत जिसे सुजन हैं कंजनि
कालिमा सुनाल ॥ २०९ ॥ सकल न्यासना सहित
मुख क्यों ससि ज्यों कहि जाइ ॥ देखे कर कारि

होतहैं विशाल सलंकोबलादू ॥२१०॥ एक वाक्यमैं होतहैं साधन स्वर्थ अनेक॥ ताको स्वर्थ सत्तोष काहि कोवि जान कावत विवेक॥ २११॥ दृग लखि मन सुख होत स्वति लव लस दुख मिटिजात जह दंपति दुति देवता दरसन पाये प्रात ॥ २१२॥ साभिप्राय विशेष्यन साधन लुपर वार जान॥ याको हेतु उदा हरन स्वतादि लेहु लन मान॥ २१३॥ कवित्त॥ हौंतौ हौं अनाथ तुम अनाथन के नाथ हौ दीन तुम दीन बंधु नाम निजु कीन्हे है॥ हौंतो हौं पतित तुमपतित पावन वेद पुरान बखानोवाहु काहू नहीं है॥ याव वाकी सेवा जो हौं काहौं मेरी सेवा रीती या-पहीते आपनो के चिंता सनि लीनोहै॥ अव तुम्हे मेरी रक्षा करिवेही परी राम सबते तो मो-हि निजु नातो जोरि दीन्होहै॥ २१४॥ जहं विशे-म आभि धालवी दूध्या दायन निषेध॥ चितार्म नि कवि कहत है सो आछेप निसेध॥ २१५॥ वर्त्त मान विषय निषेध को उदा हरन॥ दोहा॥ काहौं न काहू निडर सौं हौं काहू की वात॥ विन विचार कर काज मद मरो जु मरिहो प्रात॥ २१६॥ उक्ति विषय निषेध आछेपको उदा ह

न॥दोहा॥प्रेम निहारे चंद्रिका चंदन कोमल मृनाल॥अनल भये वा बालको कायुन का-ज्ञिये लाल॥२६७॥स्तुति निंदा मिसि कौ अ-स्तुति निंदा हेतु॥चिंता मनि कवि कहत है ब्याज स्तुति है सोइ॥२६८॥कवित्त॥जाको कृ-पा कौर ताको संसारे छडावे कोहे चिंतामनि भां-ति यह भली मन भाईहे॥पापी सुकृती न सेवे सेवे गति दोरे इन्हे जाने को कहांते भगकौन-थौं बडाई है॥माया मोहे सबही को रीहो ब्या-ध गनिकापे कीरति सकल जग ऐसी का-हू गाई है॥रूप जाति गुन काहावे जगत पति जगत की प्रभुता थो कोन गुन पाई है॥२६९ अस्तुति मिस निंदा मानस तो लीजि यातु पर-षि सुभाव लषि तुम पिय सज्जान सिरोमन प्रकासहो॥जिनके हू चुरायो मन मानिधु ति-हारे सो वेहे नष दुति हिये पावत हुलास हो॥ चिंतामनि कहे कठोर कुच उर बीच ताही तुम राषे निसि गाढ भुज पास हो॥ताको सुषमा-नि लेत काहूं लो भलाई काहो कै मे स्याम कु-सुम सुभाई को निवास हो॥२७०॥ अप्रस्तुति प्रसंसा को लछन॥दोहा॥अप्रस्तुति के कथ-

न विनु प्रस्तुति जान्यौ जाइ ॥ अप्रस्तुति पर संससो सज्जन सुनो वनाइ ॥ २२१ ॥ कारज के प्रस्ताव मे कारज को अभिधान ॥ कारन के प्रस्ताव मै कारज कथन सुजान ॥ २२२ ॥ अप्रस्तुति सामान्य जो तहं विसेष कहि जाइ ॥ काहुं विसेष प्रस्तुति कहें सामान्यो जु वनाइ ॥ २२३ ॥ कहूं सदस प्रस्ताव मैं सदृस अभिधान ॥ अप्रस्तुति लंकार के पंच भेद इमि जान ॥ २४ ॥ ॥ यथा क्रम उदाहरन ॥ दोहा ॥ सकन तजी कुलकानि कत लखि गुर लाज समाज ॥ सबै ठगी हरि मुख निरखि सदन तज्यो रतकाज ॥ २२५ ॥ इहां अनातु तू बैठी क्यों है देखति नहीं है बैठी है तोहि कछू सुधि नाहीं रहह काम प्रस्ताव मे हरिमुख दरसन को कारन काह्यो कारन के प्रस्ताव मे कारज कह अथवा विन दरसन रहे लाल उकाति करि कोन आज लखि दरन्यो चहत रहत लाल गहि मोन ॥ २२६ ॥ इहां सखी मंडल मे नवोढा के अधर विना स्वादन नायक कियो यह प्रस्ताव मे बिना स्वादते लोकिकानुभाव बरन्यो नाही लाल बुद्धि मोघ भयो यह कारज काह्यो सामान्य के प्रस्ताव है विशेष को कथन

[illegible] विषात मैं उन सब स्मृति
आदि [illegible] लीनिअन [illegible]
मिलि [illegible] ॥२२७॥ विशेषको प्रभाव मैं सामा-
न्य को बाधक ॥ दोहा ॥ जासौं आपन मिलै भि-
न्न जाइ उपकार वह कुलीन खैहै हारो [illegible]
न्यु [illegible] ॥२२८॥ जहाँ [illegible] थान लहै
तीन प्रकार विशेष ॥ [illegible] कामि [illegible]
पर [illegible] ॥२२९॥ [illegible]
को उदाहरण ॥ दोहा ॥ [illegible]
[illegible] वोइ ॥ कहूँ प्रभा [illegible]
[illegible] मैं बिन [illegible] दिया नहीं [illegible] ॥२३०॥ सामा
[illegible] को उदाहरण ॥ दोहा ॥ [illegible]
[illegible] नहीं होत न [illegible] नेह ॥ [illegible]
[illegible] दीपमैं लै वे वारत है नेह ॥२३१॥ सहज प्र-
भाव मैं सहज बाधन ॥ दोहा ॥ [illegible] लि-
त बसंत मैं फूली लता [illegible] ॥ फूल नहीं
अलि के हिये बिना मालती फूल ॥२३२॥
[illegible] भाव की रीति लखो कुछ स्व-
[illegible] ॥ पेच लिये सो सब वाहत [illegible]
[illegible] ॥२३३॥ साम अर्थ जो [illegible] को प्रताप
[illegible] होइ ॥ पर्यो वो कातिनाहि को चाहत विबुध

सब कीन्ह ॥२५४॥ निरविकार [illegible]
औ काम की प्रीति ॥ सं[illegible] [illegible]
मन सुधबुध [illegible] ॥२५५॥ [illegible]
[illegible] अस्तुति करत [illegible] ॥ [illegible]
लहैं विद्या नाथ सुजान ॥२५६॥ [illegible]
[illegible] हारी अति छिन [illegible]
हैं तें ललित हैं [illegible] लखो है नैन ॥२५७॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] मानों [illegible]
[illegible] फूली पै काहून है पंडित सब [illegible]
२५९॥ [illegible]
[illegible] सुधा निधि कौं [illegible]
व पावु ॥२६०॥ [illegible] धरत मन आनिहै [illegible]
[illegible] सिर मोर ॥ रूप वली अति [illegible] मैं [illegible]
सी रति है और ॥२६१॥ कहै साध्य साधन [illegible]
हित सेवक नल अनु मान ॥ [illegible]
[illegible] अलंकार [illegible] ॥२६२॥ [illegible]
तिय कौं तहीं परति है वान ॥ [illegible]
मदन लीन्हे वान कमान ॥२६३॥ [illegible]
को आपके अर्थ पदन को होइ ॥ [illegible]

तासों काहत हेतु बखानत कोइ॥२४४॥हरि
उर निर्मल नील मनि दर पन सिला समान॥
प्रति बिंबत दूल राधिका कामला कांति निधा-
न॥२४५॥पदार्थ के हेतु ताको उदा हरन॥ *
दोहा॥ग्गाध ग्गगाध नदी बढ़ी पारन पावत
लाल॥दे ग्गब लंघन कुन्द कालस जास ग्गमो-
ल सैवाल॥२४६॥नील बसन पावस निसा
चली जहां नंद नंद॥नेक कहू मगाल्सवतिहै
कछु उघार मुख चंद॥२४७॥श्लेष मूल को
उदा हरन॥दोहा॥ पाप मतंग घटान तिन भ-
नरनगो निय राहि॥चिंता मनि जिनके बसत
पंन्चा नन उर माहि॥२४८॥कारन परस परजो
सथन जो सामान्य बिशेष॥सो ग्रर्थां तर न्या-
स कहि लखि पंडित मन लेष॥२४९॥बिसे-
ष परि मान को उदा हरन॥दोहा॥मूदन की
मति मंद ना लियन साधु कारि लेत॥लखत
स्र पति कामलिनी मधुपन को मधु देत॥
२५०॥रीझनिखीझनि बूझ बिन बूझहु लेत
रिझाइ॥नीके कौनी को लगे सब विधि स-
वै सुभाइ॥२५१॥काम कान को ग्गन्वय जहां
वन्र्यो काम काम होइ॥यथा सांख्य सो ग्गलं-

कत सुमति कहत सबकोइ ॥२५४॥ अथ वदन
चन्द वृन्द सस्त सुभग वैन अरु नैन ॥ बिंब चंद
तम कोक जुग अमी कमल से ऐन ॥ २५३॥ स
धा वस्तु के भसते और भई जो होइ ॥ ताको का
हिये यह कहा अर्थापत्ति कोइ ॥२५४॥ सुंदरी
की दिन कांति तनु राति उज्यारी होति ॥ दीपक
की जोती कहा चंप कली की जोति ॥२५५॥ स-
के वस्तु जो अनेक थल प्रापत एक हि बार ॥
नियमित कीजे एक थल पर संख्या लंकार ॥
२५६॥ एक वस्तु जो काही ठौर नेम जो होइ ॥ परि
संख्या तासों कहत कवि पंडित सबकोइ ॥ २५७
प्रश्न पूर्व जो एक पुनि ताते भिन्न जु और ॥ परिसं-
ख्या द्वैविध पृथक कहत सुमति सिर मौर ॥२५८
वर्जनीय दूत जो कछू कहूं शब्द गत होइ ॥ क-
हूं अर्थ वल पाइये यह विधि दोऊ दोइ ॥२५९
पूछौ अन पूछौ कथन कछू वस्तु को होइ ॥
ऐसो और न हेत यह परिसंख्या कहि सोइ ॥२६०
परि संख्या लंकार मे कहत शब्द गत होइ ॥ का
हूं अर्थ बल पाइये जो सम नाही कोइ ॥ २६१॥
मंमट आचारज दुहां ऐसो कियो विवेक ॥ प
रि संख्या लंकार को समुझो पंडित एक ॥ २६२॥

शब्द गत वर्जनीया प्रश्न परि संख्या को उदा हर
न ॥ दोहा ॥ कोन सुखी जो राम को नहि संपै
रस लीन ॥ कोन सुखी जो रामतें विमुखन सं
पति हीन ॥ २६३ ॥ अर्थ गत वर्जनीया प्रश्न पूर्वि
का परि संख्या ॥ दोहा ॥ कहा से इये पुरुष को
सब दिन सज्जन संग ॥ कहा ध्येय ये कहत मु-
नि व्यापक ब्रह्म असंग ॥ २६४ ॥ शब्द गत वर्जे
नीया अप्रश्न पूर्विका परि संख्या ॥ दोहा ॥ भूष-
न की रति नहि रतन धन विद्या नहि वित्त ॥
लोचन सुमतिन नेन जुग समझन सज्जन
चित्त ॥ २६५ ॥ अर्थ गति वर्जनीया अप्रश्न पू-
र्विका परि संख्या ॥ दोहा ॥ कुटि लाई तेरे कुन्चन
कार पग बोठन राग ॥ नैनानि चालता कठिन
ता कुन्चीन भाल मे भाग ॥ २६६ ॥ शब्द गत व-
र्जि नीया प्रश्न पूर्विका श्लेष मूल परि संख्या ॥
दोहा ॥ कोन नेह बिन हो सके दीपन सुजनस
माज ॥ कोन मंद मन वार नहि मनुज राम के
राज ॥ २६६ ॥ प्रश्न पूर्विका अर्थ गत वर्जे नीय
श्लेष मूल परि संख्या ॥ दोहा ॥ कोविन गुन र
ति हार बिन जो ती को सुखचंद ॥ कोन मंद गति
अवथैमें बाल बाल सा नंद ॥ २६८ ॥ शब्द गत व

जै नीया अप्रश्न पूर्विका श्लेषपरि संख्या दोहा।
तिथ छवार मंगल बिना वैसौं कहिये पर कोइ
विसमप रस नहि खल वचन कित हाँरे चर
चा होइ॥ २६९॥ अर्थ गत वक्री नीया पुर्वि का
श्लेष मूलक परि संख्या॥ दोहा॥ मनि मरीच
मय द्वारिका हरि नगरी अवदात॥ सुनौ निगु
न वर वाहि मे जामे तमकी वात॥ २७०॥ उत्त
र सुनि जहं प्रश्न को अटक रही तें ज्ञान॥ का
हु पिष्य उत्तर कायन प्रथमो त्तर सज्ञान २७१
वसन कहो कैसे पथिक पति मेरो पर देस॥
सासु अंध वहिरी ननंद वडे काल्ल बाव लेस
२७२॥ कवित्त॥ सुंदर क्यों मन मोह जु दूत वेठी
हो वेठी कहो स वज्ञी की॥ वात कहे सुनि हो
कहि सपति की वतियां सुखदायक लीकी॥ आ
वो दूत मिलि आर सी दीजिये है हम जीकि वि
हो तुम नीकी॥ नीकी भई जु जो हो ... हम
कैसे के होंहि वरावर पीकी॥ २७३॥ दोहा॥ सि
खवन पठये तुम जु दूत उधौ सव गुन धाम॥
निरगुन कुविजा सगते के सूत वल सो स्याम
२७४॥ एक सिद्ध कर संग मिलि औरो साधक
होय॥ होइ अनेक समुच्च या अलं कार यह २

दोहा ॥ २७५ ॥ कवित्त ॥ दुल्हे मा बापके सबा-
ल गुन धाम राम महा राजा कुमार ललित रूप
खानि हैं ॥ जोवन को आगमन मंदिर पूरन थ-
न जगत निहाल करिवे को साथ जानि हैं ॥ सी-
ताजू ललित अंग सहित सुरों को संग सखी जे
सिखाई सब सकल कलानि हैं ॥ कौन वाहे चिं-
ता मानि मनि मय मंदिरनि आप जोति रूप जै-
से खेले कछु आनि हैं ॥ २७६ ॥ विरहिनी को
असत वस्तु को जोग ॥ कवित्त ॥ चिंता मनि थ-
न बन वीथिनि बोलत मोरले सिये रही है घय
घनकी उनै उनै ॥ तैसिये भई है लाल भूमि इंद्र
वधुन सी वधुन पहरी लाल चूनरी चुनै चुनै
सीरी सीरी तैसिये वादवन की बासु लैलै आ-
य वहै लहलही बेलिनि दुनै दुनै झांकिवे भ-
रोखे मुरझाति वाम धरी धरी हरी हरी पेषि अं-
कुरनकी मुनै मुनै ॥ २७७ ॥ सदृस जोग समुच्च-
य को उदाहरन ॥ दोहा ॥ रूप हीन अरु आरसी
देखि देखि मुसकात ॥ मूरख प्रगटे चातुरी वडी
हंसी की वात ॥ २७८ ॥ गुन गुन जोग समुच्चय
को उदाहरन ॥ दोहा ॥ रुजनपालवा को साधी
व्यापक वृह्म असंग ॥ धरे अंग इक संग ही सु-

अरु याम हैरंग ॥२७९॥ क्रिया क्रिया जोग स-
मुच्चय को उद्‌राहरन ॥ दोहा ॥ औध नगर ते
निकरि करि बन वसि रघुकुल राज ॥ स-
त्य पिता को वचन अरु कियो देव गन काज
२८०॥ दूजो कारन के मिले कारजु जु सुखर होइ
सो समाधि बरनत विबुध समझत सज्जन
कोइ ॥२८१॥ हरि चाह्यो परापरन को मान
घटी लखि वाम ॥ भई तडित घन स्याम मे
निरखि तडित घन स्याम ॥ जहं कारिये परत-
क्ष सम भावी भूत जु बात ॥ अलंकार करता क-
हत स्वाभा विक कहि जात ॥२८३॥ दियो हुत्यो
जावक जु यों प्रगट देखिये पाइ ॥ अंग भूष के
सबे भूषित लगे बनाइ ॥२८४॥ जा उपाय काहू
करी कछु जु अन्यथा बात ॥ ता उपाइ जोते सि-
ये कोरे कुयों व्याघात ॥२८५॥ ज्यावति है सिव
नैनही नैन जु ज्यों यों काम ॥ जो तलि किय छल
किरो कानिनि वाम लोचनी वाम ॥२८६॥ जाल ना-
म एक अनेक मे एकहु माह अनेक ॥ दै प्रका-
र पर्जाय यों सत कवि करत विवेक ॥२८७॥
सवैया ॥ छोडि दई तनु ताजु नितै वाहे ताको व-
रा स्यंदन लाग्यो ॥ पाइन चंचल ता जु तजो म-

वता परवैन जुबै ग्रनु रायौ ॥ मंद स्वभाव लि यो
गति जो मृग लोचनी की मति को नहि भायै
अंग न के गुन को वदल्यौ वारि कै तिय के तन
जोवन जायै ॥ २८० ॥ कवित्त ॥ रवी वास भयो
सुखदसी वास भयो दुखजा को सुख पूरन सर
दरितु को ससी ॥ चिंता मनि देख्यौ मन मोह
न जू आय याके वाके चाहौ बीर चंद्रिका र
चि रहे लसी ॥ रात्यौ दिन घर वासी रहति पर
वासी मेरे कोह कैसे हसौं अबे हार लगनि वा
सी ॥ नैनन में बसी रूप आजु सेज बीच उर व
सी जानी लाग उर वसी ॥ २८१ ॥ सवैया ॥ नाह
जु नाहर लागत है वाछु चोसन में उन मान
लयौ ॥ भयो भीत सुभाव हि लाल घटे दिन हू
दिन ज्यौं उन नेह वयौ ॥ बहु यों बड प्यार को ठौ
र भयो सजनी मुख दायक रूप नयो ॥ अब जा
के छुटे छन को जिय सोई प्रीतम प्रान स्व
रूप भयो ॥ २८२ ॥ दोहा ॥ पूरव पूरव अर्थ ज
हं उत्तर उत्तर हेत ॥ कारन माला होत सो सुने
वदे चित चेत ॥ २८३ ॥ विद्या तें उपजे विने वि
नय जगत वस होत ॥ जगत भये वस धन मि
लै धन ते धर्म उदोत ॥ २८४ ॥ कौप पियै के दृषि

पै किये त्रिति कन भाउ॥ यथा प्रथम पर फेरि
कहि रुका बली गनाउ॥२९५॥ धाम वामजु
त वाम जो रूप वंत बहु रूप॥ सहित विलास
विलास जो मनमथ वान अनूप॥२९६॥ नज्ज-
सु जहां नहि कंज नहि कंज जहां नमिलंद
नाहि मिलंद कु खन जो खनन जितआनं-
द॥२९७॥ जहं समास सम अर्थ को बदलो
वरन्यो होइ॥ चिंतामनि पर वृत्त वह वरनत-
हे कवि लोइ॥२९८॥ वासु दियो तन जोवनहि
जोवन तनको जोति॥ उप कारन उत्तमन की
रीति परस्पर होति॥२९९॥ कहा कहौं हौं
कौन सौं आई हौं इह काइ॥ सुधि बुधि ह-
रि सब हरि लई दीन्ही विरह बलाइ॥३००॥
जाव लियो नहि वैर जहं परसौ प्रवल विचा-
रि॥ एकै कौ अपकार जो प्रत्य नीक निरधा-
रि॥३०१॥ रूपहु पहरी तुम हर्यौ वह तुम
सौं अक सैन॥ जीतिव चाहति है तुम्हे ताहि देत दु
ख मैन॥३०२॥ होइजु कोनो अर्थते सूछम अर्थ
प्रकास॥ सूछम नाम प्रसिद्ध यह अलंकार सु-
ख वास॥३०३॥ कवित्त॥ कहू किंसुक फूल प-
लानिसो फूजत प्रांसु लवेदप भान को॥ मुसक्या-

ति कछू मनि डीठि सखी को सुवाल उरो जन-
वोन्च परी ॥ अस्तु वान त्रिलोचन पूरि रही सु-
वि सूरनि सों कछु आध घरी ॥ नव कौल का-
सी सेदु औ कार जोरि लिया नति संकर घार
करी ॥ २०४ ॥ दोहा ॥ जहां कौनहू वातमें कछू
वनियै सार ॥ सो उत्तर उत्कर्ष यों सुनियै सम
विचार ॥ २०५ ॥ पुहुमी सी वारा नसी तामें पंडि
तसार ॥ वहुरि पंडितन मैं समुझि सार सुब्रह्म
विचार ॥ २०६ ॥ जहां तहां संपति कथन सो उ-
दार मन आनि ॥ जो उप लच्छन वडेन को क-
हौ वहै पहिचानि ॥ २०७ ॥ कवित्त ॥ लालन की
लीलनि को ललित पटाउ लाल जटित दिवा-
लन की चौक चहू वोर की ॥ लाल वडु भूमि है
महल खंड खंड लाल खंभनि खुलनि छवि वृंद
के झकोर की ॥ चिंता मनि मनि मैं झरोखन-
की वैठ कन गान मृदु घुमर मृदंग घन घोर की
सुंदर रतन मय संदरि सुंदरी संग खेलन ललि
त लाल ललनि किसोर की ॥ २०८ ॥ दोहा ॥ सो-
यह वृंदावन जहां रच्यो रास नंद लाल ॥ मुरली
मधुर वजाइकै मोही सब व्रज वाल ॥ २०९ ॥
सक कवित मैं अल्प कत भासे भिन्न अनेक

कै निषेधयज्ञ परस्य रहे संसृष्टि विवेक ॥ ३१० शब्दालंकार अनुप्रास यमकी यसष्टि ॥ दोहा शिव गिरिपर गजमुख मुदित गरजत गिरिजा पोर ॥ एक विनायक करत है एक विनायक मोर ॥ ३११ ॥ चाप मुकुट पट तडित वग पांति मुकत मनि दाम ॥ कानकलता लखि ऊनयो आइ इते घन स्याम ॥ ३१२ ॥ संकर पुनि इनकी इते अंग गिता वखानि ॥ आपुहि को विश्राम को पावत जे नहि आनि ॥ ३१३ ॥ कानकलता इह अति सयोनता संबोधन मे ताको उपमा वारि उपस्थापित जो अर्थसो याको उपजी व्है याते अर्थालंकार को संकर है ॥ दोहा ॥ वकुतअलंकृत मे जहां अर्थन निश्चित होइ ॥ कैहै मे संकर वहो वरनत है सब कोइ ॥ ३१४ ॥ कवित्त ॥ हौं तो तुम्हे पहि चानति हौं वल वातन के वहु पंच वने हो ॥ औरके माल भयो छतियां कुच कुंकुम छाप छपायन रहो ॥ याहू सों रासे ही बोलहु गे मनि पीतम जाके घरै जब जैहो ॥ मोहनी मंत्रसे वेननि मोहि के मोहन मोहि कहा वह कैहो ॥ ३१५ ॥ ❊ ॥ यामै मोहनी मंत्र तुलित जे वचन है तिनकर मोहि

वो कारन ताहै यह कारनते विद्य मान ताहू वह कारि की वैसा सलाहते अर्थालंकार की सृष्टि है या कवित्त की वस्तु सो याम मोहनी मंत्र तुलित जे वचन हैं तिन कार मोहिबो कारनता है यह कारन को विद्य मान ताहू वह कारि की वैसा सलाह ते अर्थालंकार की सृष्टि है याक वित्त की वस्तु सों कवित्त प्रथम ॥ तेरे कपोल से हो दून सोऊ जु कंचुकी की कारि आरसी वोपे अंग प्रभारे अनूपम नैन वधूवो सदाही गुमान निलोपे ॥ चाद सन द्युति चंद्रिका लालची चाहे चकोर भये द्दग तोपे ॥ वारको तो विधु वधु मुखी हसि नेकु विलोकि विलोहिनि मोपे ॥ ३६ ॥ आक्षेप आर्थावृति प्रथम चरन मे ॥ वितरेक दूसरे चरन मे ॥ पर नामा तीसरे चरन मे ॥ रूपक चौथे चरन मे या सले है ॥ दोहा ॥ सर के दोऊ जे हे नहि कारनु अनंग ॥ पुनि वि वित आपु नी लखत रा दोऊ दुहु अंग ॥ ३७ ॥ * ॥ * ॥ श्री राधाकृष्ण की एकान्त साध्य है अत एव अंगनि मे उभयावलोकन हेतु है याते साध्या साधन अनु मान है कै अनंग कारन विचारते अंगते भिन्न कारन तातपर्य यह मायाप्रतिबिंबित

चैतन्य उभयत्र है आपु आत्मा एकै है माया स
बको छोडे शुद्ध चैतन्य है आपु आत्मा एकै
है माया सबको छोडे शुद्ध चैतन्य है महाश्ले
ष है सो उभयत्र एकत्व साधक है ताते अनु-
माना लंकार है अरूया शब्द मे औरो अलं-
कार संभावित है अन्यो अन्या दिक याते ए-
क को निश्चय नाही ताते संकर है ॥ दोहा ॥
कछुन सुपरि मा मृदुलता बिसद बरन कुल फू
ले ॥ नृपन मेलिहि तकात अलि सब बेलिन
बे तूल ॥ ३०८ ॥ * ॥ इहां बिसेषणगत समासो
क्ति है के अप्रस्तुति प्रसंसा है ताको निश्चय ना-
ही ताते संकर है ॥ दोहा ॥ अस्फुटि जो एक हि
बिषय पद अर्थो लंकार लहे श्रवणको गुनिन
संकर समुझ बिचार ॥ क॰ मोर किरीट लसै चमका
पट नील बला हक रंग हरे हैं ॥ गोपके बांध
धरे भुज दंड अनूप बिलास कलानि धरे हैं ॥
कान धरे नव मंजरी मंजुल बंजुल कुंजन ते
निकरे हैं ॥ सुंदर मार हरो सुकुमार सो बेलिबि
नैर कुमार खरे हैं ॥ ३०९ ॥ दोहा ॥ छबि छलकं-
ति तन सहज ही लपट ललित बिलास ॥ कुंद
न पर सुंदर लसत ज्यों मनि इंद प्रकास ॥ ३१०

स्त्रौ उपमा लंकार को कति अनुप्रास को संकर हे ॥ इति श्री चिंतामनि विरचिते कवि कुल कल्प तरौ नाम अर्था लंकार निरूपनं त्रितीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थ रस को जु इत दोष परै अपकर्ष ॥ दोष कहत है ताहि को सुने घटतु है हर्ष ॥ * ॥ १ ॥ श्रुति कटु च्युत जो संस्कृत अर्थ जुक्ति असमर्थ ॥ निहतारथ अनुचित अरथ औ रजु होइ निरर्थ ॥ २ ॥ और अवाचक त्रिविधि पुनि इत अश्लील विचारि ॥ संदिग्धो अप्रतीति पुनि ग्राम नेयार्थ निहारि ॥ ३ ॥ क्लिष्टो वहुरि वखानिये विरुद्ध मति काम जानि ॥ शब्दन के ए दोष हैं सुजन लेहु मन आनि ॥ ४ ॥ कानन को जो कटु लगे श्रुति कटु दोष सुजान ॥ संसकार च्युत होइ सो च्युत संस्कृत मान ॥ जो नहि प्रोगी सत कविन कान्ही भाषा जान ॥ मथुरा मंडल ग्वालिये चौपाइ पक्ष वखान ॥ ६ ॥ श्रुति कटु को उदाहरन ॥ दोहा ॥ धन्य भयो रात हात्य हौं सफल भई है दृष्टि ॥ दरस तिहारे पाइ के हिये भई सुख दृष्टि ॥ भाषा च्युत भाषा को उदाहरन ॥ दोहा ॥ याच्यौ स्वर्ग रंग सौ मुहि लागी नीकि ॥ व-

है बसति है चित्तमे और नई सुधि देकि ॥८॥
मथुरा मंडल ग्वारि यर की सुर वानी कोइ ॥
जोन प्रयोगी सत । कविन अप्र युक्ति है सोइ
॥९॥ अप्र युक्ति को उदा हरन ॥ दोहा ॥ जवतें दे-
खी भावती तवतें स्त्रवचर चान ॥ भिन्न भिन्न त-
नु जारि है मो कंदर पक वान ॥ १० ॥ असमर्थ को
उदा हरन ॥ दोहा ॥ वनमें सोहत कामल अरु
राजत सारस हंस ॥ सरमे अति सुंदर लसत
सरद वाल अव तंस ॥ ११ ॥ द्वै वाचक पद मेंजा
हां अप्रक्त तिहि को वोध ॥ सो निह तारथ कह
त है चिंता मनि मन सोध ॥ १२ ॥ निह तारथ
को उदा हरन ॥ दोहा ॥ लो इन ललित विला-
स है रवाल रूप है हाथ ॥ वात कहत कछु मंद ग-
ति चली सखिन के साथ ॥ १३ ॥ अनु चित को उदा
हरन ॥ दोहा ॥ होइ अनु चित अरथ तहं उचित
न वरनन होइ ॥ ताहि अनुक्ति अरथ कहत पंडि-
त्त कवि कोइ ॥ १४ ॥ मानति नाही मै गई लखि-
जू वारक आठ ॥ वोलति नाही सेठ कै वैठ रही
है काठ ॥ १५ ॥ निरर्थ को लच्छन ॥ दोहा ॥ छंदै
पूरन को जु पद होइ निरर्थक सोइ ॥ पाको वाचक
पद न जो वहै अवाचक होइ ॥ १६ ॥ वोलति है

यह कोकिला सेपुनि तहं तू पेष॥ सिंहा प-
र्नींहि सखी चुही बोल पुनि लेष॥१७॥ अस्लील
को उदाहरन॥ दोहा॥ वि मारग देखति उहां पा-
द परी हैं आइ॥ तू तवकैसी करहि जो विर-
ह पीउ मरिजाइ॥१८॥ संदिग्ध को लक्षन॥
दोहा॥ जहा होतु संदेह है सो संदिग्ध बखानि
शास्त्र हीन मे जो कह्यौ अप्रतीति सो मानि॥
१९॥ संदिग्ध को उदाहरन॥ दोहा॥ कृदत
जाके होतु है ये बिरहे मनु लाइ॥ अति सुंद-
र सुंदर बन्यो हरि देख्यो किन आइ॥२०॥ अ-
प्रतीति को उदाहरन॥ दोहा॥ तो चितु मे चितु
है महा तू क्यों बैठी रूठि॥ ति निजु मान कि-
यो भद ज्यों मरकट की मूठि॥२१॥ ग्राम्य को
लक्षन॥ दोहा॥ होत गंवारी पद जहां ग्राम्य
कहत हैं ताहि॥ चिंता मनि कवि कहत है सुक-
वि तजत हैं वाहि॥२२॥ ग्राम्य को उदाहरन॥
दोहा॥ चुची जभीरी सी बनी गोल लालहै गा-
ल॥ जाके नैन बिशाल वह गरे लगी कव बाल॥
२३॥ नेयार्थ को लक्षन॥ जहा निषिद्ध की ल
क्षना सो नेया र्थ बखानि॥ चंदहि हनत चपेट
सो तेरो मुख मृदु वानि॥२४॥ क्लिष्ट को उदाहरन

जाको अर्थ कहे विना जान्यो कहुं नहि जाइ ॥ कौ-
वेलिस ते जानिये सोहै क्लिष्ट वनाइ ॥ २५ ॥ दू-
व्य नाम दग हीन पद आसन रिपु परगास ॥
पूत्ल खान ताको सुहृद तीन्यो दूखद तास ॥
२६ ॥ विरुद्ध मत क्रात को लछन ॥ दोहा ॥ सो वि-
रुद्ध मत कृत जहां जान्यो जाइ विरुद्ध ॥ ऐसो
कवित्तन की जिये है यहु निपट अशुद्ध ॥ २७ ॥
विरुद्ध मति कृत को उदाहरन ॥ दोहा ॥ वडे प्र-
वीन सुवुद्धि है सदा अका र्य मित्र ॥ वाहा औ-
र संसार मे ऐसो विमल चरित्र ॥ २८ ॥ अव
वाक्य दोष गणना लिखैहै ॥ दोहा ॥ प्रति कूला
हर होतहै अरु हत वृत्ति वखानि ॥ उन अधि-
क पद कथित पद पतत प्रकर्षी मान ॥ २९ ॥
पुनि समाप्त पुनि रात कहि चरनां तर पद हो-
इ ॥ पुनि अभवन्मत जोग कहि अक थित वा-
च्यो कोइ ॥ ३० ॥ पुनि कहि अस्थन स्थपद संकी
र्नो निहारि ॥ गर्भित और प्रसिद्ध हत भंग क्रा
म निर धारि ॥ ३१ ॥ अक्रम अमत अपार्थो
वाक्य दोष ए मानि ॥ कवि चिंता मनि कहत
है सज्जन के मन आनि ॥ ३२ ॥ प्रति कूला क्षर
को लछन ॥ दोहा ॥ अक्षर रस अनकूल नहि प्र-

ति कूलाहर सोइ ॥ कहत विवुध हत वृत्ति सो छंदो भंगहि जोइ ॥ ३३ ॥ कहृत वदृ विषदृ कुच धुदृिय दुदृिय मार ॥ दंपत जुदृिय लुदृि सुखे छुदृिय पदृिय वार ॥ ३४ ॥ हत वृत्तः ॥ दोहा ॥ रूप काम अभिराम तन अमल कमल दल नैन ॥ चले जात हो वा गली देत हसत सखि सैन ॥ ३५ ॥ जोइ कर सज्ञा छंदमे भलो जो उत्तम होइ ॥ जो जाको प्रति कूलहै योहुं कहत स-व कोइ ॥ ३६ ॥ चोपाई ॥ धरनी धसि पातालहि पैठी ॥ धूरि इंदूके महलन वैठी ॥ सेस नाग फा-न सहस नावायो ॥ साजि सैन जव भूपति धा-यो ॥ दोहा ॥ सर्व लछनन कर सहित सुनत न नीको होइ ॥ यहो कहत हत वृत्त हैं जे सज्जन कवि लोइ ॥ ३७ ॥ कमीन लागत चंदहै जामे कांति कमीन ॥ ऐसो सुंदर वदन है वचन स-मान अमीन ॥ ३८ ॥ न्यूनपदको लछन ॥ * दोहा ॥ जहां वरन के करत है न्यूनया दिक प-द होइ ॥ चिंता मनि कविकहतहे न्यूना धि-क पद सोइ ॥ ४० ॥ वाकी अद्भुत रीति है वेयां काहू सो जानि ॥ हे सब वप लनि लखो परत जहीं तहीं है आनि ॥ ४१ ॥ कनक लता दामिनि

किधौं अम्बुजहि चंद्रमा दास ॥ मुक्त लर्खौ दुहु बानि
की कुची मन मथ काम ॥ ५२ ॥ वाचिक पद ॥ *
दोहा ॥ जो पद दीन्हे है आध्य कहै पदहिं हिताइ
होत वाचिक पद है तहां वाचीयात लुनकहुं बनाइ
॥ ५३ ॥ किन मुख चन्द्र कामल सौं निरखि नैन हि
त फूले ॥ भौरी कोमल देह है सोहत नलिन र
सिलाहि ॥ ५४ ॥ पूर्वोतिप्रवर्धक व्याख्यान ॥ दोहा ॥
जो अनुकूल अर्थ राखिये तैसे जो पिक बैन ॥ चिंता
मनि कहिये कहत है प्रजाल कोषे लोचन ॥ ५५
॥ घाम चूनरी अरुन चल चौका चमकाल चार
चतुर चंद बदनी चली गोरे पहिरि कै हार ॥ ५६
समाप्त पुनरात्तदोष ॥ जहं वाक्यार्थ समाप्तवै
है बहुरि विसेषे देइ ॥ तो समाप्त पुनरात्त है
जानि सुजाने लेइ ॥ ५७ ॥ देखै बार लोचन चढ़े
चीनो दीरै बर नारि ॥ दक्षिण दिसि गो सांवरी
बहु सोहति सुकुमारि ॥ ५८ ॥ जहं जो उत्तर अर्थ
पद पूरब अन्वित होइ ॥ अर्थांतर गत पद सुयौ
कहित भाषा कोइ ॥ ५९ ॥ जामै सुन्दर बनत
नहिं सो अमृत नत जो ॥ ॥ हिला नहिं नहिं
बाहर यौं सुनिल वै रहरि ॥ ६० ॥ हि सब
मोहन ए इते त्यौ सलाल सो माहि ॥ जो वहं

जोरी सखि मिले बैन नैन सिय राहि॥५३॥*
अनुक्त कथनीय॥दोहा॥जो अवश्य कथनी-
य सो कह्यौजहां नहिं होय॥इत अनुक्त क-
थनीय यह दोष कहत है कोइ॥५३॥जो पा-
ई नहि मैंनिका पाई काम वधून॥सोवहला-
ल लहू निरखि तकत लषत मदून॥५४॥ज-
हां होइ संकीर्ण पद सो संकीरण बखानि॥
एक वाक्य मे और जह सो गर्भित पहि चा-
नि॥५५॥पीजे पान नखाइ ये पानी बोलि
पानि॥पिय हिय ठाऊं रावरे सुखहि मिला-
ऊं आनि॥५६॥गर्भित॥दोहा॥औरव के अ-
पकार ते खलसों कहूं मिलाप॥तुम्हहि सि-
खाऊं कहू जनि कि ये परम संताप॥५७॥
जोपद जाथल चाहियें सोनहिंताथल होइ
दूषन अस्था नस्थ पद कहत सुकवि जन
कोइ॥५८॥तू कत लखत मदून यह नकार
अस्थानस्थ पद॥दो॰॥ज्यो पद अस्थानस्थ पद
योंही अस्थ समास॥जोन वृद्धकी उक्ति मे
कविकी उक्ति प्रकास॥५९॥मेरे आगम मा-
नयों कहि यत पिक धुनि वंत॥अलि हुंकि-
त हुंकित कलित आयो अली वसंत॥६०॥

प्रसिद्ध हल कोल:॥दोहा॥धुनि रव आदि प्रसि
द्ध जहं लहां दीजिये सोइ॥और भांति योंगीभि
ये तोप्रसिद्ध हल होइ॥६१॥वा अग नैनी कौ
सुनत नूपुर को   निध्वान॥पंच बान अभि
मान सौं तानै बानै कमान॥६२॥ पूर्व मनुवा-
देन प्रकृत्य माने दयःपश्चा दन्यत्र विधितः।
प्रत्तुज्य मान प्रतिनिर्देस्य॥छंद॥॥उद्देस्यप्रति
निर्देस थल मे प्रथमही जो दीजियै॥पुनिता
व   है कहिवे परे तो वहै ताथल लीजियै॥
जो कथित पदकी भांति तै पर्जाय पद तिन
कीजियै॥तौ होइ प्रक्राम भंग दोषसु सत्य जा
न पती जियै॥६३॥ अरुन उदित रवि होतहै
अरुनै अथवत आइ॥संपति विपति बडेन
को एकै क्राम लखि जाइ॥६४॥अरुनउदै रवि
करत है लालै अथवत आइ॥ऐसो जो कहि
ये सुतो प्रक्राम भंगहि जाइ॥६५॥जिन विरंच
जगती रची तिन नरची तूवाम॥औरलटक
औरै छवनि औरै दुति अभि राम॥६६॥※
और लटक आनै छवनि ऐसोन कहिये सोइ
नमत दूसरो और्थ जहं अमत परा रथ होइ
चिंता मनि कवि कवित हे रचैन सत कविको-

वेहै गहि कर वार है पर पीतसे खुआइ॥ मवघ ल देखो मैन है ऐसी लसी सुभाइ॥६९॥वा क्य देष॥ अर्थ दोषगण॥ नो अर्थ अपुष्ट रु क प्ट पुनि व्याहत अरु पुनरुक्त॥ अरु ग्राम्य संस यित पुनि जोन होत संयुक्त॥६९॥ और प्रसि द्ध विरुद्ध पुनि अनवी कृत मन गन्य॥नियम अनियम विहीन पुनि विल विशेष सामान्य॥ ७०॥साकांक्षो अरु पद जुक्त पुनि सह चर भि न्न विचारि॥कहिय प्रकास विरुद्ध पुनि विं ता मति निर धारि॥७१॥ त्यक्त पुनः स्वी कृ त कह्यो पुनि अश्लील वखानि॥ अर्थ दोष याभां तिकै अपने मन मै आनि॥७२॥ अति विस्ती रन समुद्र को पार उतरि किनि जाइ॥परि नव वर तुव गुन कथन कियो न जाइ बनाइ॥७३॥ कष्टार्थ॥दोहा॥कारन दियोहै सूरके याहिन जात विहात॥तेग त्यागते मिटत नहि सांची बोलत बात॥७४॥व्याहत॥दोहा॥सुघिन जा हां निज कथन की सो व्याहत न हान जानि जित काहिये प्रथम सोई पुनि रूप मान ७५ तेरे सम दोनो लखौ चन्द्र मुखी यह चंद॥ कामद नयन तो नयन लखि काम न्ना ग्रामि

दुति भेद ॥७६॥ पुन रुक्तार्थ ॥ दोहा ॥ काहू को-
वर कन करत होइ विरुद्ध प्रकास ॥ ताको सो है
कहत हैं आको मन पर गास ॥ ७७ ॥ मोहि
चहत दिल्ली तनहि रत तरवार नेसु ॥ ना
हुत न प्रीतिको समुद सो चित मानो संदेस ॥ ७८ ॥ जामे विधि अरु वाद को कथन-
न नीको होइ विध्यनुवाद अयुक्त सो कहत विबुध सब कोइ ॥ ७९ ॥ प्यो आयो परदे-
सते सरद रमूह अधिकात ॥ अति प्रकुलि
खिल रहो सोवैगी तुम प्रात ॥ ८० ॥ उप संहृ
त करि वाक्य को बहुरि करै अभि ध्यान ॥
त्यक्त पुनः स्वीकृत तहां कवि जन करत बखा-
न ॥ ८१ ॥ कालि अली नद लाल को रूप नि-
रखि अभि राम ॥ होंमोही सुधि बुधि गई ना-
रत तीर नकाम ॥ ८२ ॥ अश्लील ॥ दोहा ॥ मो
को र मारो चहत छिद्र तके जो कोइ ॥ र
ताको रूर दर पात ज्यौं उन्नत है नहि होइ
८३ ॥ रस दोष ॥ दोहा ॥ संचारी थाई रसो-
न्ह कथित सो होइ ॥ अरु अनु भाव भाव
व्यक्त कहते होइ ॥ ८४ ॥ प्रीतपूर्ण दि साना-
दि को सकल ज्ञान सम जानि ॥ मुरल को प्र-

नु संधान नहि अंगादि की वहु जुक्ति ॥८५
प्रक्रितिनि की पुनि विपर्जय अनु चित
वर नन जानि ॥ चिंता मनि कवि कहत है
॥ रस दोष वखानि ॥८६॥ प्रादु र्वाधित सं-
चारी अस्थाई रस ॥ दोहा ॥ संका दुरजन
के हिये याके हिये उछाह ॥ अरिन सरा-
हत वीर रस अनुरागी नरनाह ॥८७॥ ✱
विभाव की क्लेसते व्यक्ति ॥ बाकी सब सु-
धि बुधि गई वाहिन कहुं विस्राम ॥ निसि
वासर रोवति रहति कछून भावे काम ८८
प्रति कूलोक्ति ॥ दोहा ॥ ✱ ॥ प्यारी हंसि कै
वात कहि डारि गरे मे वाहि ॥ रोस छोड म-
ति मान करि जोवन घन की छाहि ॥८८
अतिशयोक्ति ॥ दोहा ॥ भली भई वढुते अ-
ली लागी घरमे आगि ॥ मेर कर की गागरी
लीन्ही सजन मागि ॥८०॥ मुख्या नन सं-
धान ॥ दोहा ॥ मे चौपर खेलन लगी निसा
सैसे मे आजु ॥ बैठी सखी समाज मैं भूलि
गए व्रजराज ॥८१॥ अंगको विस्तार ॥ दोहा
कालिंदी सुंदर नदी सुंद र पुलिन सरूप ॥
वृंदावन घन छांह तकि कुंजनि रूप अनू-

प॥८०२॥प्रकृति विपर्यया:॥दोहा॥निरख
ते नैन सहस्र सों सुंदरता सवि सेष॥रंभा
की मघवा दुखित लागत होत निमेष ८४
अनुचित वर्ननं॥दोहा॥विरहिनि नैननि मे
सुरभि वारुन लेस नवीन॥विन देखे पियके
रहे मनौ स्याम मुख कीन॥कहूं कार्न आदनंत
हूत याहि पदन को दान॥सं निधान दुन्या दि
के बोध हेत सज्ञान॥८५॥जहां हेत पर सिद्ध
है तहं नरहे तन दोख॥सव अदुष्ट अनुमा
न मे इनते नहीं अतोख॥८६॥चिंता मनि
गोपाल कौ वर्नन करे वनाइ॥वक्ता दिक्षौ
चिंत्यते दोषौ गुन ह्वै जाइ॥८७॥इति श्री
चिंता मनि विरचिते कवि कुल कल्प तरौ
दोष निरूपणं नाम चतुर्थ प्रकास्॥ ॥४
दोहा॥पद वाच्यक अरु लाछनीक व्यंजक
त्रिविध वखान॥वाच्य लक्ष्य अरु व्यंग पुनि
अर्थौ तीनि प्रमान॥१॥विन अंतर जा शब्द
का र जाकौ होत वखान॥सो वाचक पद होत
है कहत सुकवि परमान॥२॥लछक ताकौ
कहत जो होत लछना जुक्त॥चिंतामनि ता
वि कहत है यह प्रमान है उक्त॥३॥मुख्यो र

पकौ बाध अरु जोग लक्षना होइ॥होत प्र-
योजन पाइकै काहू रूढि हित सोइ॥४॥गंगा
घोषक है तहां होत तीर कौ बोध॥सीतलता
पावनता तहां प्रयोजन सोध॥५॥तहां विं-
जना वृत्ति यह होत लक्षना मूल॥जहां प्रयो-
जन जानियै कहत ग्रन्थ अनुकूल॥६॥*॥
जहं अभिधा अरु लक्षना और काहू भि-
न्न प्रकार॥होइ अर्थ कौ बोध तहं व्यं-
जक व्यापार॥७॥शब्द अनेकार्थकरनि अ-
ति काछु भिन्न प्रकार॥होइ संजोगादिका
गनन इत अवाच्य कौ सार॥८॥तहां व्यंज
ना वृत्ति इत यह मं भट तत्व है॥चिंतामनि
जानत्यमे कवि इत वरनन आनि॥९॥संजोगा
दिक जोगनो प्रथम एकासौं जोग॥चिंता मनिका
वि कहत इत वरनो बहुरि बियोग॥१०॥अर्थो
प्रकरन चिन्ह पुनि॥दोहा॥*॥आनरु इत्यात
चिन्ह पुनि आन शब्द तल संग॥सामर्थ्यौ औ-
चित्य औ देस समै पर संग॥११॥औरह्वा भल
आदि ते शक्ति नियम इत रीति॥एको
अर्थ मैं औरको व्यंजन तें पर तीति॥१२॥
संयुच्चना जात हरि तजो शंख चना दारि आनि

राम लछमन दसरथ तनय होहु च्यरि ते जानि ॥१४॥ रामअर्जुन तिन दुहुन की पदवी राम कृत मानि ॥ सहस बाहु अरु जनि कौं दृष्टी विरोधि न जानि ॥१५॥ सकार ध्वज दृहि चिन्हते मानत कहत न कोहि ॥ देव पुरी लछमी नपद कौमलहू को पेखि ॥१५॥ मधु सत्या को कलभितु राधा सामर्थ उर आनि ॥ रह्यो सुंदरि सन मुषता चौथि यो पहिचानि ॥१६॥ इत राजत परभे फवै यह रज धानी देस ॥ चिन्ह मनि कवि जानि ये तहा नृपति को देस १७ रहौ दिन निसि अमन रवि चिन्ह मान ते होवि ॥ इतनौ बालक बड भयो यह अभि व्यते पेखि ॥१८॥ व्यंजन व्यंजन जुक्त पद विष्नु सुता को अर्थ ॥ वाच्या लच्या लच्छ निकौ को काहि लच्य समर्थ ॥१९॥ औ अर्थो व्यंजक बरनि शब्द संग ते होइ ॥ व्यअपलच्छना मूल यह तहा सुनौ कवि कोइ ॥२०॥ अ लच्छना मूल व्यंग को उदा हरन ॥ दोहा ॥ भई अनूपम चोपतनु प्रफुलित नैननि चैन अंकुस है फेसौ हियो बालापन ते मैन ॥ २१ ॥ कवित्त ॥ जोबन को आगमन दोसे मकर

ध्वजके नीकी लगी लगन सखी की रस बतियां चिंता मनि पल पल पर प्यार चढ्यौ उपज्यौ वियोग व्यापी बिथा दिन रतियां ॥ मोहहीते जहां तहां पियको देषन लागी हंसि खेलि बोलि तहां लह्यो है सुख तियां ॥ याही समै आये वेई सांचे आपु आपुही ते नवल लपटि लागी लालन की छतियां ॥ २२ ॥ अर्थ अनेकार्थ पद व्यंग ॥ दोहा ॥ राखी है सखियो कैसै अबही भई अचेत ॥ मै मनु दीन्हो आपनो वे दूत पाउ न देत ॥ २३ ॥ अर्थ व्यंजक ॥ वर्तिस्य मान सुरति गोपना ॥ कवित्त ॥ ग्रीषम मे बापी कूप सरवर सूखे सब जल नदी भिरनाते आवतु नगरमे ॥ जहां जात आवत लगत कांट झारन के होन जैहो होहि पानी पीवनि हौं घरमे ॥ अति दूर ही ते भरी गागरि लै आवति हौं छूटत पसीना कांपै अंग थर थरमे ॥ चाहति हौं पुनि लालजन चिंतामनि कौन मोपै जाउंगी तो आऊंगी भरि दुपहरमे ॥ २४ ॥ इति श्री चिंतामनि विरचिते कविकुलकल्पतरौ शब्दार्थ निरूपणं नाम पंचमं प्रकरणं ५ दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधम ए त्रिविध कवि-

त पहिचानि ॥ तिनको लक्षण॥ उदाहरन देत लेहु मन आनि॥१॥ वाक्य अर्थते काहत मति व्यंग अधिक जहं होइ॥ सो उत्तम उत्तम कवित यह जानत कवि बोइ॥ २॥ उत्तम व्यंग प्रधान गन अप्रधान गन व्यंग॥ सो मध्यम पुनि अधम गन त्रिविध चित्र अव्यंग॥ ३॥ वाच्य लक्षते भिन्न जो कवित सुनोते अर्थ भासेते सव व्यंग कहि वरनत सुकवि समर्थ ॥४॥ उत्तम काव्यको उदाहरन॥ दोहा॥ सखि निसि ते पहिसौं जिती रति रन मदन प्रसाद॥ सुंदरि जय दुंदुभि सज्यो वाल किंकिनी निनाद ५॥ कवित्त॥ कीन्हो मधु पान सुधि काहु चैन रही मन भाई को अंवर स्याम वोढ़ो चित वाढ़के॥ चित्त मनि कोहे लाल लोचन ललित सोहे लाल भाए वोहे एल जोहें अल साईके॥ हमसों वरी कैसे गएते कहि आवन सो दीन्हो मन भावन दरस भोर आइके॥ एतो नवल नायका रसिकानिसि चांदनी की ऐसे हाल आए ग्वाल वाल को सुवायके॥ ६॥ * ॥ दोहा॥ एक विवक्षित वाच्य ध्वनि अरु विवक्षित वाच्य॥ द्वैविधि उत्तम काव्य यह सतका-

वि पंडित राख्य॥७॥जहां की द्युति न जहं
वाच्य अर्थमें होइ॥सो अविवक्षितवाच्य है
कहत सकल कवि लोइ॥८॥अत्यंततिरस्कृ
त वाच्य अर्थ संक्रामित वाच्य द्विविध मू
ल ध्वनि बरनै अविवक्षित वाच्य॥अत्यं
त तिरस्कृत वाच्य को उदाहरन॥दोहा॥
रजनीतौ प्रग दिन करी कियो बहुत उप
कार॥ऐसो काज करो सदा जीवो बर्ष हजा
र॥९॥अर्थांतर संक्रमित वाच्य॥दोहा॥तो
सों पद हम कहत हैं सकल संगलि मति जा
हि॥कीजै काम बिचारि कै भलो आपनो
चाहि॥१०॥वाच्य अर्थ सुविवक्षित वाच्य
द्विविध यहि आनि॥लक्ष्य अलक्ष्य क्रमानि
सों व्यंग्य सुमन जे आनि॥११॥धृति प्रका
शल लक्ष्य क्रम व्यंग्य सुद्विविध बखानि॥
शब्द अर्थ गुण सक्ति भव मूल ध्वनि भेद
सुजानि॥१२॥शब्द सक्ति उद्भव व्यंग॥
दोहा॥अलंकार की वस्तु जहं व्यंग्य शब्द
तै होइ॥शब्द सक्ति उद्भव सु यह बरनत
हैं कवि कोइ॥१३॥शब्द सक्ति मूल व्यंज
ना कार को उदाहरन॥दोहा॥मधु मोदित

ग्नलि मंजरी मंजु सौलियहि जाल॥ पत्र
राग पल्लव ललित दल लसत लला॥ १५
यहां नायक ग्रर ग्नायकों उपमा नापमे
यते उपमा लंकार होत है॥ शब्द शक्तिमू
ल अर्थ उदाहरण॥ दोहा॥ चौपर
खेलत हैं कहा उन हूं कीनि सुभाय॥ ला
ल जानिहैं शावते ग्नली जुबैं पट दाय॥ १६॥
यहां शब्द शक्ति सौं नायका अनु नयोति
है है अोतल चलियह अर्थ॥ दोहा॥ केछ
पद गति दावप न जो पति गति भवाव॥
अर्थ लक्षि सब भेद सों कारत विरुध्य बिस्ता
र॥ १७॥ अर्थ शक्ति उदभव ध्वनि दोहा॥
दोहा॥ स्वत संभवी स्वक्ति की प्रौढ उक्ति
पर सिद्धि॥ कविनि बद्ध वक्ता॥ दुवी प्रौढ उ
क्ति पर सिद्धि॥ १८॥ त्रिविधि अर्थ व्यंग्य दा
दशविधि वस्तु अलंकृत हेत॥ सों व्यं
ग्यक भेदसों द्वादस भेद सुहेत॥ १९॥ स्व
तानि ग्राप्नु उन ह्वि .... नि॥
सुनत तिहारो नाम की .... ग्नि॥
२०॥ यहां नाम श्रवण .... प
स्तु बारि तुम्हें वह चहति है मिलो ......॥

व्यंग्य होतिहै काहू देखेकान्ह काहू कान्हौ का-
न्ह कैसोकान्ह कान्ह कान्ह कौरे यों लगन
अधि काईसों॥ वाही कै विकाल तुम्है कछु
पर वाहि नाही भलेहो गुपाल जू निपट नि-
ठुराई सों॥ चिंतामति काहे तुम कैसोहो निह
चिंत वैठ काहा जादू का होगी विरहताप तई-
सों॥ वाकी यह दशा भई तुमतो न सुधि लई
जानि कारी दई कोऊ नेहु निरदई सौं॥२९॥
यह ऐसी अनु रागवती निठुर जे तुम तिनमें
असक्त भई याते विषमालंकार व्यंग्यहै॥
कवित्त॥ लही घन लहि भान तोही मैं हरिको मनुते
रैही रिझाइबेकी रीति मैं प्रवीन हैं॥ चिंता
मनि चिंतानिलतेरी [illegible] विरह षिन
षिन होत षीन है॥ [illegible]
नि वूत काहु [illegible] आधीन
हैं॥ तहै पीके [illegible] आपी-
वे [illegible] लीनहैं॥ ३०॥ इहां प
र। पहिल [illegible] नायकाकी और अव
लेकिबो नाहीं [illegible] अलंकार नाहीं वस्तु
व्यंग्य है [illegible] हंसति हां
त निहारि [illegible] छवी-

ली नारि ॥ २३ ॥ इहां स्वभाव उक्ति कारि मोपर स-
काम है इह वस्तु ध्वनित होति है ॥ स्वतःसंभवी अ-
लंकार कारि अलंकार को उदाहरन ॥ दो ॥ कोव सो उन दु-
हुन को कौन धरावै धीर ॥ दोऊ प्यासे जेठ के
दोऊ सीरे नीर ॥ २४ ॥ इहां नायका अरु नाय
का कौ असम सेठ मास पिपासित अरु जेठ
मास को सीतल जल इन सौम्य भेदन रूप
नति रूप अलंकार कारि दोऊ परस्पर निर
वधि प्रेम पात्र है तातें समालंकार ध्वनित होत
है ॥ कवित्त ॥ कर वास गिरि कोमल कमल
कर तें उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलात
है जीवैगो सो हीवे जो मरैगो वहु मेरे मोसो
कैसे निरख बालक कौ क्लेस देख्यो जात है
मेरी कही कान नातो निकसि मारोगी कहि-
चली जहां कारिका सिलान को निपात है ॥
जहां कढे गोपी गोप गन संग नंद रानी तहां
रहकी वकी अचल अधिकात है ॥ २५ ॥ ॥
कवित्त ॥ दोऊ जन दुहू कौ अनूप रूप निर
खत पावत कहू छवि सागर को छोर हैं ॥ चिं
तामनि केलि के कलानि के विलासनि सौं
दोऊ जने दोहुन के चितन के चोर हैं ॥ दोऊ जन

ते मंद मुसक्यानि सुधा बरसत दोऊ जनेष
के मोद मद छके होरहे हैं ॥ सीता जू के नैन राम
चंद्र के चकोर राम चंद्र नैन सीता मुख चंद्र
के चकोर हैं ॥ २६ ॥ राम चंद्र के नेत्र चकोर (
सीता को मुख चंद्र राम चंद्र मुख सीता के ने
त्र चकोर यह पर रूप कारि दोऊ सम प्रेम
सुषा है तातें समा कार व्यंग्य है ॥ इहां कवि प्रो
ढ़ा वस्तु करि आपन को आधि कारि के को
जो बरनन सो स्त्री प्रेम की दशा में सब सा
मर्थ्य है यह अर्थ द्योतित है ॥ कवित्त ॥ बाजे ज
व बाजे महा मधुर मनावी च नागरि निरखि लल
लकनि आछी लाई है ॥ चिंता मनि कहे अति
परम ललित रूप अंग पर दूलह बिलोकन
को आई है फैली महलनि मनि मेखला मान
के महा मनि नूपुरन की निनादन की भाई है
पहिले उज्यारी तन भूषन मयूषन की पाछे
ते मयंक मुखी आलोकन आई है ॥ २७ ॥ इहां
चंद्र मद प्रदीप्ता दिक जो ल्हादक तेजस पदा
र्थ तिनके आगमनि ते पहिले ही जैसे दीप्त
लति है तैसे उनके मुखादि अंगन की अवर
लन की दीप्ति फैलति है पहिले उज्यारी तन

भूषन मयूर के पीछे ते मयंक मुखी भारी ख
नि आई है॥ यह कवि प्रौढोक्ति शब्द वस्तु का
रि इनसों चंद्र प्रदीपा दिक तिनसो उपमान
उ पमेय भाव है याते उपमा लंकार व्यापे है
२॥ कवित्त॥ परम अपार भवसागर तनको सका
सक नामकी सकाति उमहति हैं॥ चिंतामनि
कहै राम भगति अगिनि तेरी कोटि कोटि मल
पाप पुंजनि दहति है॥ पवन अगोचर जोम
हिमाति हारी ताहि काहि कोसकत जाहि स्रुतौ
ना कहति है॥ आपनी साहिबी सब देते निज से
वकान जु सेवकानि साहिबी अनंत है सोवे सि
ये रहति है॥ २॥ इहां कवि प्रौढोक्ति॥ सिद्धिर
ता और प्रभुते औदार्य अ धिक बरनन में
व्यतिरेका लंकार परमे श्वर्य संपन्न रामसे ए
मे और नाही याते अनन्व या लंकार व्यंग है॥ क-
भत्रकी आचनि असंख्य अरि जोधा जोरे प्र-
गटी ये विक्रम की रचना विशालसी॥ चिंताम
नि कहे खड्ग परसु दंड वर व्योम छिति भरि छ
तज्ञ आगार गन लालसी॥ जरा सिंधु नृपन्व
तुरंग चमू आगनित निकरी रुधिर धारि तेज
अगिनि ज्वालासी कान्ह धनु मंडलते कदी सर

पांति मुले चंड कार मंडलते चंड कार माल सी॥
२९॥ इहां कवि प्रौढोक्ति उपमा अलंकार के मुले
कालिंदी सूर्य्य मंडल ताते निकारि कि रवि
मंडल मैसे जुगति को संहार करत है ऐसे
मंडलित श्रीरामके धनुषते सरवृंदनिकारि
कारि जरा सिंधुकी सेनाको मुले कीन्हो यह
वस्तु द्योतित होतिहै कविनिवद्ध वक्ता प्रौढो
क्ति सिद्ध वस्तु करि॥ वस्तुव्यंग्य धुनि को उदा
हरन॥ दोहा॥ मै समुझो यह आजुही है अनं
त बल वंत॥ मो तुलमासों इंद्र जित जितिय-
ल भयन अनंत॥ ३०॥ अंतक वलवंत है यह
सायन रूप वस्तु करि रावन के अंत काहू को
भय नाहीं यह वस्तु द्योतित होतिहै॥ कविनि
वद्ध प्रौढोक्ति सिद्ध वस्तु करि॥ अलंकार व्यंग
धुनि को उदाहरन॥ कवित्त॥ जवते आपुन र
ल्याये जानुकी लंका बीच भये ताही दिनते भ
यंकर निमित्त हैं॥ परी सेना समुद्र के तट मे अ
संख्य कपि रिछन के कटक वढत उत्त नित्त-
है॥ जौलौं राम लखन तेवे तेज बानन सों
भये लंका पुरी के न भट भिन्न भिन्न हैं॥
तौलौं रघुनाथ दिग जानुकी पठाइ दीजै ऐसे

ऐसेउनम विचार होत चितहै ॥ ९१ ॥ कहूं का-
हि पैद्दोत्त सिद्धको अलंकार असंदेहनामको
अहिवो सोतुम्हारे विनास्यको उपदिष्ट न-
येहैं जो सीता रामको निकट पठाइ दइ [illegible]
नको विनासु नहोइ ॥ कवित्त ॥ [illegible]
नबोले वृक्ष धर [illegible]
लघु भाइहो ॥ चित लनि आसुरी [illegible]
कर राषि गोपी गोप गोधन के [illegible]
हो ॥ * ॥ दूर कै गुमान वर्षा [illegible]
न को झालो महा मघवा को रोदन [illegible]
वाही के हजार एकलोचन के आसुन [illegible]
दर पुरंदर के मंदिर बहाइहो ॥ ९२ ॥ कहूं पर-
स पर कार्यकारि वोसो अन्यो न्यासंस्कार [illegible]
होवे कार्य वहसनी हेतु वे ॥ अस्त [illegible]
इ असत कार्ज कीन्हो इनके [illegible]
सकारिवो प्रलैकालीन मेघन को [illegible]
मान जैसे दूरि होतु ऐसो इंद्र के [illegible]
नके आंसू वरसादु की मंदिर बहाइ [illegible]
को बदलो हो काविनि वज्र [illegible]
सिद्ध अन्योन्या संस्कार वारि आपनो परिपू-
रौ स्वर्ग आरहसको रमा धान वहविधि

वस्तु ग्रभि व्यंग्य होतिहै॥ ३३॥ कवि निबद्ध
बक्ता ॰॰ ढो॰ ॰ सिद्ध अलंकार ध्वनि को उ
दाहरन॥ कवित्त॥ अमल अमोल मुकता
हल को हार तैसोंह सनि अमोल मुक्ता हल
के हारसी॥ चिंतामनि चारु चीर खुल्यो छी
र फेन सम सरद जुन्है या सुख सुखमा के
सारसी॥ जगत हमारी परं रीझिहै हमारी ॰
री राधा रिझ वार सारदा को अवतारसी॥
धवल पुलिन मध्य जमुना की धार ध-
सी कुंद रदन धरपर जनु आरसी॥ ३३॥ इ
हां गन पर ॰॰ श्री हास को देखि प्रनय को
प कार अप्रसन्न हृदय श्री राधा को समु-
भि श्री हास्य उनके मन उदास को स्तुति
कीन्ही सरस्वती अवतार की साम्यदै सा-
भिप्राय विशेषन कहे की प्यारी हमारी रा-
धा रिझवार रीझिहै ए बातें सुनि रीझि
वे की उनमुख भई सोई उन जुक्ति कही
धवल पुलिन पर ॰॰ ना की धार धसी
कुंद रदन धर पर मानो आरसी॥ यह उत्प्रे
क्षा लंकार कह्यो प्रसाद को और हेतु कह्यो
ताते समाधिसुकार कार्य कारनां तर जो बात

यह समाधको लछन है ताते। श्रीराधाजू प्र
सन्न भई अधर सुधारसुधा प्रसाद दीन्हो
ताते अलंकार व्यंग्यहे॥ यह स्वतःसंभवी
के उदाहरन मै जानिवो॥ दूसरोकवित्त॥ उम
डि घुमडि घन अंबर अडंबर लौंवाहूं लग प्रले
घन घटा घोर घिरिहे॥ चिंता मनि वाहे चि
त चिंता जिनि करो कोऊ वाहा लौं विचा
रो धों विचारो इंद्र चिरिहे॥ एकावो वाहा है
कोटि धरा धर धरे रहो जोलोंकोटि विधि-
की उपज फिरि फिरिहे॥ जानो जानि वडे र
पर मान भारी गिरिहे सोमेरे कारपर परमान है-
न गिरिहे॥ ३४॥ इहां परत द्रव्य पर मान र
कारि दिखायो यह विरोधा लंकार कारि नंद
पुत्र जे आपु तिन कहा अघटन घटना प-
टी यत्व साधारन धर्म कारि आपनो गर्गो-
क्ति नारायण साम्य व्यक्ति करतभये है॥ दो०
अर्थ शक्तिउदभव अरथ बारह भेद विचा-
र॥ सोपद वाक्य प्रबंध गत छंति सभी ति-
नि हारि॥ ३५॥ सिद्ध कहत सब सकल फल
देत तुरत ज्योनाम॥ व्यापक अस गुन भूप
जसु धवल कियो श्रीराम॥ ३६॥ इहां व्याप

कि निर्गुन आत्म स्वरूप सों व्यापक थवल
जल कीन्हो निर्गुनते सर्गुन कीन्हो यह वि
रोध कारिये सो कार्य करिवो सामर्थ्य रामही
मे है और मे नाही ताते रामसे राम यह का
वि निबंध वक्ता प्रौढोक्ति सिद्ध अलंकारक
रि अलंकार व्यंग्य है॥पद गत संभवी वस्तु
करि वस्तु को उदा हरन॥दोहा॥लोग ज
गत है काज पर धरत नामको नेम॥तुम्
व कारि हरि साह जिक दीन बंधु सों प्रेम
२७॥सा हजिक दीन बंधु पदके अर्थ विना
प्रयोजन दीन बंधु हैं यह स्वतः संभवी व-
स्तु करि परमेश्वर परम दयाल हैं स्वतः संभवी
वस्तु द्योतित होत है॥प्रबंध सक्ति उद भव
को उदा हरन॥सवैया॥ व्याकुल दौरि कै
दोऊ जने उठले उत आइन जानकी देखी
दिव्य अमोलक लाल गयो गिरि आश्रम
भूमि अमा ठिके लेखी॥दुक्ख पयोधि अ-
गाध वढ्यो गति दीन कछू रघुनाथ की पे
खी॥मानो अरन्य भई अमरावति ऐसी
अरन्य की भांति विशेखी॥२८॥*॥राम
कह्यो इन्दु सीतक दंबज तेरे तरे संग मै र-

है बेली ॥ तेले फूल रची जिनमाल गूहै सनिसे
रिये बांटमै मेली ॥ माल दैहौं तुमदुःखकी जिनकी
यह हास बिलास की केली ॥ मोहि बताइ न्म
बेली बिले यह पूरन इंदु मुखी अलबेली
४९ ॥ सवैया ॥ बेलसे चाह झरोखन बेलीके ल
खी कहूं जाकी लगै रति चेटी ॥ मीत असोक
बिलोकी कहूं जिनहै जग रूपकी रासि समे
टी ॥ पीत दुकूल लसे पट भूषनश्री मिथिला
महिपाल की बेटी ॥ सुंदर रूप धरे जनु दामि
नि राजत दामिनि दाम लपेटी ॥ ५० ॥ तैं मृग
देखी कहूं मृग लोचनी बोलि बिलैं अब ला
इ छपीहै ॥ छाडि छबीली घने परि सासन
छाती बिछोह के ताप तपीहै ॥ तैं नहि जान
त तेरे छुटे पल तेरो री जीवन मोह तपीहै ॥ दो
लिते हरिके याको गुमान जो को बिलखुं जन
मे जल पीहै ॥ ५१ ॥ ऐसे सबै बनके द्रुम जं
मुन पूछत जानकी जीको पुकारे ॥ व्याकु
लह्वै मुरझाइ गिरे उछले मनि नैनन नीर
की धारे ॥ दुक्ख महोदधि की लहरैं जनु मर
छा आवति जाति अपारे ॥ लछमन के उपचा
र जगे मुख भाई को दीननि हगिन सम्हारे ५२

मेरी भई यह भांति दसा दूत रैन छुपीजो न्म
ह्मौ नहि न्प्राई॥ राम जू ऐसे काह्यौ कावलद
न सीताजु ऐसी कारी निठुराई॥ वाघन वीच
मृगीसी भई सु कहा मृग लोचनी आपदा
पाई॥ मैं जिनको अपराध कियो तिन रा
कस वृंदन घेरि कै खाई॥ ५३॥ इहां दूसरे क
वित्तते अंत को कवित्त छोडो प्रबंध कोऊ
न माद व्यंग्यहै॥ उभय समुद्भव को उदाहर
न॥ दोहा॥ लसै हारके मध्य सखि सोभा धृ
रे विसाल॥ ह्रियैतरविवो योग्यहै यहु मनि
नायक लाल॥ ५४॥ इहां वाच्य अरु व्यंग्य
अर्थ के उपमा नो प मेय॥ भावते उपमा
लंकार व्यंग्यहै सलक्ष्य भेद यों कहे एका चा
लीस॥ दोहा॥ असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि
आनि रसा दिक चित्त॥ ठूतै आदि पदलक्ष्य
है तिन्है गनावत मित्त॥ ५५॥ प्रथ महि रस पु
नि भाव गनि तिनके पुनि आभास॥ भावसां
ति अन भाव को उदै वखानि प्रकास॥ ५६॥ भा
वसंधि पुनि सवलता भावन की मन आनि॥
असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि तिनके भेद वखा
नि॥ ५७॥ अथी तर रस स्वर रूप निरूपनं॥ *

गनि बिभाव अनु भाव अरु संचारी करि [illegible]
द॥ जिन थाई है भाव सो [illegible]
४८॥ काहू को यथा नाम अभिधान यह तीन
हू को स्याम कोइ॥ कंजन कोउ लखौ [illegible]
तो अल्प ज्ञान होइ॥४९॥ भाव लच्छन॥
दोहा॥ मन बिकार को है भाव सो [illegible]
नारूप॥ बिबिध ग्रंथ बरनत कहत ताको [illegible]
प अनूप॥५०॥ जो नहि जाति बिजाति सों
होइ तिरहे पूत रूप॥ भाव [illegible]
ता सुथिर थाई भाव अनूप॥५१॥ [illegible]
दिक रसादि सब द्रुमको मूल [illegible]
बिकार संचारि लखि यह [illegible]
पावे लखावे आपने रसहि और [illegible]
बिरुद्ध भाव लखि रहि बिरुद्ध पद [illegible]
५४॥ सो थाई है सप्त सो [illegible]
[illegible]॥ लखु लाति यह नव [illegible]
नि बाइ॥५५॥ प्रथ [illegible]
नि बहुरि सोक गन [illegible]॥ पुनि [illegible]
जुगुप्स पुनि विस्मय सम दरबोध॥५६॥
यह थाई नव भेद जो ताको जुहै निदान॥
कारज सहकारी जगत कारन तामें दारि [illegible]

५७॥ तिनि विभाव अनु भाव पुनि संचारीय ह नाम॥ विभाव नादि अवलोकि कै व्यापा र्न अभि राम॥५८॥ तिन तिहु के अवलो किबै करि व्यापार गनाइ॥ विभावना अनु भावना संचार ना बनाइ॥५९॥ सब जन सा धारन त्रिविध व्यापारन सो तीन॥ सुहृद य हिय थिर भाव को व्यंजन धरम नवीन॥ ६०॥ साधारन व्यापार बल सब साधारन हो हु॥ नियत प्रमातहि मै यदपि तहां अपर मि त होइ॥६१॥ महा नंद उल्लास वह सुकृती सेवन योगु॥ सज्जन सुखद जु ग्रंथ मे रस नि रूपना सोइ॥६२॥ रत्या दिक के हेतु जे का ज औरु सहचारि॥ जग मै तेई नवकत मै भा व नाम निर धारि॥६३॥ विभाव नादि को लौकिक व्यापारनि सुमित॥ ते विभाव अनुभाव अरु संचारी धरि चित्त॥६४॥ साधारन व्यापार सों रसा साधारन जानि॥ ते विभाव अनुभा व अरु पुनि संचारि बखानि॥६५॥ थाई सा भावहि सहृदय कमल वासना रूप॥ व्यक्त वि- भावा दिकनि मिलि रस है लसत अनूप॥६६॥ प्रथम चाहत शृंगार के विभा वादि कुल आ

नि॥आगे सिगरे सवन के कीहहौं सिगरे जा-
नि॥६७॥थाइ हेतु जग मध्य जो कहित म-
ध्य सुचि भाव॥आलंबन उद्दीप लौ द्विवि-
ध प्रसिद्ध गनाव॥६८॥नायका लं०॥दोहा॥
आलंबन शृंगार को तिय नायका बखानि॥
कलाकि प्रवीन सिला सिनी सुंदर तावदी खा
नि॥६९॥कवित्त॥वदन मैं विधि कौन तो-
रीकी नक्काली जाति गोरे गाल दोऊ नारि कै
सरि के रंगकी॥चिलासनि कहै चारु सेंदुका
सी हासी लसै निसि नखलावली सुगन पां-
ति मंगकी॥मानो ओस बुदलाल दिंव पर वि
ल सतु अधर की आभा मुदाता हल को सं-
गकी॥पग परको सरंग अंगन अनूपमोय
अंगन मैं हाढ़ी मानो अंगना अनंगकी ७०
दोहा॥दिव्य अदिव्य कहे सुकवि दिव्या दि-
व्य विचारि॥त्रिविध नायका जगत मैं दं-
पन वद्ध निहारि॥७२॥दिव्य देव तिय जानि
ये नारि अदिव्य वखानि॥अमर नारि भुव
अव तरी दिव्या दिव्य सुजानि॥७३॥नलते
दिव्य तिया बरन सिखते विबुध अदिव्य॥
नखते सिखते वनिये औतिय दिव्या दिव्य ७२

हांनख सिख वर्ननें जानबौ ॥ दोहा ॥ प्रथम २ सुकीया नायका पुनि परकीया जानि ॥ पुनि सामान्या समुझिये यौं कवि लसत बखानि ॥ ७४ ॥ स्वकीया लछन ॥ दोहा ॥ जो गृह नेही पुरुषमें प्रीत वंत निर धारि ॥ कहत स्वकीया नायका लछन सुकवि विचारि ॥ ७५ ॥ सील सुभाई लाज जुत गुरजन सुकवि विचारि ॥ पुनि तम को पिय जानिसो वाही स्वकीया नारि ७६ कवित्त ॥ चिंता मनि सखी कोऊ सीख देति काहे जब ममता को जानिहौ पीतम सो जायसो जीपको आरके वाहि वस्यो चहै लजाइ काहि पेन सखी कछु लछ चरी लियासौं ॥ गुरजन २ संमत सकाल भांपरन वानौ कजल होत २ लाह चाहियसो ॥ पीउ जाने गुरजन हूमें नवाल जाने गुरजन जाने वाहा बोलि जाने पियसौं ॥ स्वीया भेद ॥ दोहा ॥ मुग्धा मध्या प्रगल्भा तीन भेद निर धारि ॥ तुम स्वकीया नारिके लछन कवि मंथ विचारि ॥ ७७ ॥ जाके जोबन अंकुर बिस सो मुग्धा वर नारि ॥ दुहू वलि काम संधिसे तन वय संधि निहारि ॥ ७८ ॥ जुवन चहत जीवन सजै सुंदरि वाला निकेत ॥ मंद मधु

र मुसक्यानि सुबस किधौ कन्हैया खेत ॥७९॥क
वित्त ॥ माधव के अंग संग राचि रह्यौ हरि
र धाम गुलाबन को रंग राचि रह्यौ गलिन में
भिरी ॥ फिरतहि चुरावति सबको दिल दौन
की लगी कानन छिटौनि छूम नदकी मनौ
भिरी ॥ चिंता मनि सोही है रसाल मोरहु
जनि मैं अलिन के पुंजन सुनावै बेनि आ
छिरी ॥ बालन के बीच बनमाई आइ मिलि
रहै माघ सुदी पंचमी मैं रह्यौ वसंत होरि
ही ॥८०॥ दोहा ॥ मुग्धा आदि दिन जो वना
आविर्भूत काम पेषि ॥ विदित मनौ नव जोवना
बहु बिन बोढ़ा लेखि ॥८१॥ पुनि विश्रब्ध न
वोढ़ गनि कोमल कोपा जानि ॥ चिंता मनि
कवि कहत हैं बहुबिधि मुग्धा मानि ॥८२॥
आदि दिन जोवना ॥ सवैया ॥ बांकी भई
भृकुटी बिन कारन लोचन कानन आनि
रहै हैं ॥ छाती कछू उचकी बिन ठौर दंतो
छितौ इक आनन लहहै हैं ॥ पाइ उठाइ धरै
गरूर मनि कैन सकोच न जान कहै हैं ॥
मोनहि मौन बिचार करै नैरै अंगनि दो
न सुभाव गहै हैं ॥८३॥ आदि दिन जोवना ॥ नवो

विल कूक सुनै उमगौ मनि और सुभाउ भयो अबहीको ॥ फूली लता द्रुम कुंज सुहात लगे अलि गुंजत भावत जीको ॥ कारन कौन भयो सजनी यह खेलु लगै गुडियान को फीको ॥ काहेते सांवरो अंग छबीलो लगै दिन द्वैकते नैननि नीको ॥ ८४ ॥ विदित जोवनी · काहूको पूरव पुन्य लता सुतो बेलि अपूरव तू उलही है ॥ सोने सो जाको स्वरूप सबै कर पल्लव कांति कहा उमही है ॥ फूल हंसी फल हैं कुच जाहि के हाथ लगै सुकृती सो सही है ॥ आली कियों सुनिकै बतियां मुसक्याइ तिया मुख नाइ रही है ॥ ८५ ॥ विदित काम ॥ कवित्त ॥ काम बालानि की चोप चढ़ी चित अंग अनूपम ओप भई है ॥ केसरि सो धो सुहान लग्यो मनि चंदन बेलि बनाइ दई है ॥ भौंह उचाइन चाहका नैन कछू मुरिकै मुसक्यानि लई है ओठन ऐं-ठि सखी अंगुठानि सो वैसउ नीकी ठौनि नई है ॥ ८६ ॥ वैसरि बारहि बार उतारत केसरि अंग लगावनि लागी ॥ आई है नैननि चंचलता दृग अंचल बाम छपा

वन लागी॥ दूलह के अब लोचन नवो द्राग्य
टनि भरो स्वनि आवनि लागी॥ चोप दीनी
नक ले बतियां मन भावन की मन भावन
लागी॥८७॥ नवोढा लक्षण॥ दोहा॥ जोल
ज्जा भय पर थीन रति होति नवोढा सोइ॥ अ-
लिसे पतिहि पत्याइ कछु विश्र ब्धनवोढा १
होइ॥८८॥ जोल वधू की रति संसे लज्जा अ-
ति अधिकाइ॥ अति सुख दायक होति न-
व जब कछु पतिहि पत्याइ॥८९॥ सैवया॥
राखति जो नहि सामुहे नैन सुवैन न कान नि
बसै मिलि भाखै॥ बांह गहे सिसिसी करि
भौं पचौरे कहसों हम नीचति नाखै॥ चोल
न बोढा बधू क सकी वेको सो अपने मन में
अभिलाखै॥ एक छिनो छुरिवो छिब ज्यों
जल बिंदु पुरैनि के पात में राखै॥ ९०॥ चौथा
लबो मिलन आस रस चिर लाल लाल
लल बात पल स्वा धीरज न रहै॥ नई
सब ल्याई नवला को छल बल करि छवी
लौ छबीली के सबाल अंग हेरै॥ कोरि सोर
करी प्यारी सखी सेज ऊपर सु आखिन पै क
पर है आसू पों दर हेरै॥ चारु चोस मध्य न-

धुकर अकुलाने मानौ छलकी रही जन
के ऊपरहूं लहैरै॥८९॥ विश्र ब्ध नवोढ़ा॥
सवैया॥लालकी दीठिबचाइ के बालकि
यो च्हैदूरि प्रदीप की बाती॥पीके हियेसु
ख पुंजबढौ सुलै पूछलही कछु बात न
सुहाती॥लागत ही तन मै पतिको कर चं
दू मुखी चित चौंकि सकाती॥सोईहै आ-
ईके पीतम साथपे सूहरि हाथ छपाइ कै
छाती॥९०॥सोइबी मेरी प्रतीतिले देखौ-
हौ भाजिन जांउगी योंही डरौ जिन॥नेकु
हुया कौ काहे खि भीवत रातिकी भांति
सौ अंग भरौ जिन साथ निहारहौ सौंहि
रहौ पर छाती को ऊपर हाथ धरौ जिन॥
जो कछु की केसी काल्हि परौ पिय पायप
रौ कछु आजु करौ जिन॥९१॥कोमलरू
पा॥सवैया॥और तियाकी सबै छवि या
पिय तौल बधू सौ कहू नहि पाई॥ आं-
कि भरेतबहू अंचल ओट दृगंचल ताकि
के भौंह चढाई॥अंबर ओट छपाइ के अं
गन पौढ़ि रही पलका सिसुनाई॥मेरी तू प्या
रो है प्रानहूते मुंह चूंवि लडाइयो कांहलगा॥

है॥९४॥मध्या लक्षन॥दोहा॥जानिय जे तिय होतुहै लाज मनोज समान॥ताको मध्या कहत हैं सिगरे सुकवि सुजान॥९५॥सवैया॥ पैस्यो चहै पियको चितओट वंचैन कछू वि न घूंघट खोले॥ भोंहन संग छुट्यो पतिको सकु चैनकोरै कछु काम कलोले॥चाहति बात कह्योन कह्यो पर जातरह्योन रहै अन बोले॥झूलतुहै मन प्रान पियारी को लाज म नोजके बीच हिंडोले॥९६॥दोहा॥बाढ़ि आ रूढ़ जोवना आरूढ़ मदना जानि॥पुनि विचि त्र सुरता कहू प्रगलभा वचना मानि॥९७॥ आरूढ़ जोवना मद उदाहरन॥सवैया॥मन नैन बिसाल रसाल चितोन पै लाज सुभाव लए अपनी॥कचला वेलचे कुच भारसों लं क लसैव तन कंचन रंगसनो॥पग पैंजन औ बि छिया झलकें कल किंकिनि ने वरनादघनो यह पूरनजोवन चंद्र मुखी चली आवति मं द गयंद मनो॥९८॥आरूढ़ मदना मध्या॥ कवित्त॥अव लोकनि मे पलवोन लगे पल को अवलोकि बिना ललकै॥पतिके परिपूर न प्रेम पगी मनि औरे सुभाउ लगेन लखै॥ति

यकी विहरैंहीं विलोकनि मैं मनि आनंद आल
नि यों झलकै॥ रसवंत कवित्तन कौ रसु ज्यौं अ
रथ तनकौ ऊपर ह्वै छलकै॥ ९९॥ कवित्त ॥
चैतकी चांदनी कौ यौं चंद अवलोकन तैं छीर-
निधि छीरवो पूरन पूर उमगे॥ चिंता मनि र
चौहै मन आनंद मगन ह्वै कै विहरति दंपती अ
रस प्रेमसौं पगे॥ अधखुली अंखियां सुरति
सुख रसबस मानौ भोर अध खुले कमल-
नि लै खगे॥ प्यारी के सकल तन श्रम जल
बिंद सोहै कनक लता मैं मुकता फल मनो र
लगे॥ १००॥ प्रगल भा जोवना मध्या॥ सवैया॥
रहै प्रवीन महा सिगरी यरि हास विलास ल-
हगुनै गी॥ मोसौं सदां रिहि बोलनकी चतुराई
कौ वैन विचारि चुनैगी॥ नेक रहो मति बोलो
गावे जनि पाइन पैंजनि भोंन उनैगी॥ जानती
हैं सगरी सखियां मेरे नेवरकी भनकार सुनै-
गी॥ प्रौढ़ा को ल०॥ दोहा॥ केलिकला मैं चतुर
अति प्रीतम सौं अति प्रीति॥ लाजत जे व्है मद-
न वस प्रौढ़ा की यह रीति॥ * ॥ प्रौढ़ा भेद॥
दोहा॥ प्रौढ़ा जोवन प्रगल भा मदन मत्त पुनि
जानि॥ केहि पति प्रीति मती सुरति मोद प्रस्वसा॥

मानि ॥१०३॥ प्रौढ जोवना प्रगल्भा ॥ सवैया ॥
कोटि विलास कटाक्ष कलोल बढावै हुलास
न प्रीतम हीतर ॥ यौं ललि यामें अनूपम रूप
जो मैनका मैन वधू नाहि दूतर ॥ सुढार सारी
सुपेद मैं सोहत यों छवि ऊंचे उरोज की तर ॥
जोवन मत्त गयंद के कुंभलसै जनु गंग तरंगनि
भीतर ॥१०४॥ आवति नि सूंदि वके मिलि आनि
अचानक पीठि उरोज लगावै ॥ वेंहू काहू मुस
क्याइ चितै अपराइ अनूपम अंग दिखावै ॥
नाह छुडै छल सों छतियां हंसि भौंह चढाइ
अनंद वढावै ॥ जोवन के मद मत्त तिया छित
सों पति को नित चित्त चुरावै ॥१०५॥ गतिप्री
ति मती को उदा हरन ॥ सवैया ॥ लोनसी है त
न प्रीतम के सुभरै अति आनन सों जियको ॥
मानि आपुहि ते मुख चुंवन दै सु हरै मन मोह
न के हियको ॥ छन मान दिखावति है छन वै
सु छना छन दै सुख यों पियको ॥ रति वोलि वि
लासिनि छूडि दै और न भावै कछू नख्नी ति
यको ॥१०६॥ रत्या नंद परवसा ॥ सवैया ॥ प्रीतम
कौ रति रंग रसे लसनो रसको वरसा उनई मै ॥
ऐसे भुजा भरि भौंटि रही जनु है टन की करिए॰

कलई है ॥ सुंदरि मोहन के मुखसों मुख लाइ आ-
नंद में लीन भईहै ॥ ऊंचे उरोज लगाइ हिये जनु
अंगन बीच विलाइ गईहै ॥१०७॥ दोहा ॥ मध्या
प्रौढा मान में धीर अधीर त्रिविध बखानि ॥ धी
रा औरु अधीर तिय धीराधीरा मानि ॥१०८॥ व्यं-
ग कोप प्रगटै जु तिय मध्या धीरा होइ ॥ को-
प वचन बोलत प्रगट मध्य अधीरा होइ ॥
१०९॥ मध्या धीरा ॥ सवैया ॥ सांझ ते चंद को-
लंदा उग्यो मन मेरो लै साथ रहे तुम न्यारे ॥ बैठि
रची मनि मंदिर बीच लगे सब दीप प्रकास
अन्यारे ॥ प्रात हि पाइ सुधा मध पार ना नैन
लखौ रन मोहन प्यारे ॥ वैसोंन अनूप कला प्रग-
टो अकलंक कलानिधि मोहन प्यारे ॥११०॥ म
ध्या धीरा ॥ कवित्त ॥ कहा जागे रैन आस निपट
उनींदे हौ जू सोइ रहौ प्यारे बिछौ आछौ पर
जंका है ॥ खेलत हैं चांदनी मे ग्वालन के संग काहू
ग्वालन को नाम लीनो कहा काछु संका है ॥ योंही भले
मानसैल गावती कलंक हौ के देख्यो कहूं चिंताम
निरतिहू के अंक हैं ॥ पीत रंग अंबर सुनील रंग भयो
लाल झूठी हौ गुपाल तुम्है काहे को कलंक है ॥११
दोहा ॥ वचन सहित के संग कहि कोप प्रकासै नारि

मध्याधीर अधीर तिय कोंह क्रम कह्यु विचारि ॥११२॥ उदाहरन ॥ सवैया ॥ रातिरहे मनि सालकहूं रमि इहां दुखु लाल वियोग लहें। आगरे अरुनी रुप होत रुरोस तिया रून वैन कहे हैं ॥ लाल भये दृग को रंग आलि वो यों अंदु जालवो नु ह रहे हैं ॥ चोंच न चोप लसी सिथिले विच्छन जाल दाड़िम बीज गहे हैं ॥११३॥ दोहा ॥ प्रौढा धीरा नेकुनहि कोपै करै प्रकास ॥ पति को अति आदर करे रतितें रहै उदास ॥११४॥ ताकहि त्या को उदाहरन ॥ सवैया ॥ बोलति काहे न बोल सुने मधुरी वतियां मन मोहन भावें बोले कहा कहु चित्त में है दुख पिन वदेखत लागती हावें ॥ ठाढे हैं लाल दिलो ले नवाल कों तेरी विलोकनि को अभिलावें ॥ लालभ ई विन काज हि आजु रहे सौ कहा मेरि देख ती आवें ॥११५॥ सादर धीरा ॥ सवैया ॥ आज क्यों पलकाते धरी पुहमी पर साथ हमारे न पाव धरी ॥ काहे बोलो सखीन सौं संभ्रम सों हंसि बोलि हमारे न ताप हरी ॥ दिन जात हो पान न आन को मालसों आन सुजा भरि अंक भरे दुख देत सबै दिन वादर ज्यों यह आदर आप

नौ दूरि करौ॥११६॥रत्यु दास धीरा॥सवैया॥
बोलौगी बैनतो कानन चैनन बोलौगी बैन अ
नंद भईहो अंचल सों मुख मूंदि रहो लख्य
लगे जो धरि चित्त लईहो॥बैठति काहे न
हो ढिग सुंदरि मोको दई सुख रास दईहो॥
मोहि गनो निज दास मनो तुमकों बिन काज
उदास भईहो॥११७॥जावक रंजित भाल र
चिये मन भावन भावती गेह सिधारे॥ढूरिले
भौंह कमान चढ़ाइ कै सुंदर नैन कटाछ लेडा
रे॥आइ कै बालम बांह गही ढिग चंद मुखी
मुकि कै भभकारे॥चंपक मालसी कोम
ल बाल सुलालन भैली की मालसों मारे
११८॥दोहा॥प्रौढ़ा धीरा धीर लिय बोले धी
र अधीर॥चिंता मनि कवि कहत है समु झ
त बुद्धि गंभीर॥११९॥कवित्त॥मेरी कहा च
लीहोन आपनी कहति बात कहो भली कारो कछू
काहूसो निबाहिजो॥मोहि आजि रात जाइ वासों
सुकरम कियो यह कौन धर्म लाज अवगाहिजो॥
चिंतामनि कहै बैनवाकी सुधि लेत जाइ जाको
मनके [illegible] ॥जापै रति मानि
प्यारे आस हो हमारे घर एको घरी करो वाकी

प्रीति कौ मुलाहिजौ॥१२०॥दोहा॥जहां होति
है दैतिया तहीं रीति यह जानि॥पुरुष अ-
धिक यह प्यार ते ज्येष्ठ कनिष्ठा जानि॥१२१
कवित्त॥एक पलका पै बैठी सुंदरी सलोनी
दोऊ व्याहिवे छबीलो लाल आयो रतिकेलि
घर॥चिंता मनि कहै दिग बढ्यो आनिप्रीतम
पै काहू सों कछून कहि सकत दुहूं को डर॥
सुख के मनाइवे को एक को दिखायो नाह
बिपरीति रतिको सुरूप लखि चित्र पर॥जौ
लौं सकुचन वह आंखें मूंदि रही तौलौं प्रान
प्यारे प्यारी के कुचन पर रख्यो कर॥१२२॥प
रकीया को लक्षण॥दोहा॥प्रीति करै पर पुरु
ष सों परकीया सो नारि॥ऊढा और अनूढ
गति सोहै भांति विचारि॥१२३॥ऊढा होइ वि
वाहिता अविवाहिता अनूढ॥परकीया है भां
ति की जानत जगत अमूढ॥१२४॥ऊढा को उ
दाहरन॥सवैया॥अति सासु भके ननदी स-
त रातलखै कुल कानकी हानपरी॥घर बाहि
र सों बलि बैर बढ्यो सु अजों तुमको नहि जा
नपरी॥मनि मांझ गली तुम बांह गही सु-
तो कौन अहो यह बान परी॥यह बात घरी

कुती कानन मैं सुनै कानन कानन आन परी १२५ ॥ दोहा ॥ सुरत गोपना चतुर कहि कुलटा बहुरि बखान ॥ कहत लछिता मुकविजन अनुसैना उर आन ॥ १२६ ॥ सुरत गोपना को उदाहरन ॥ कवित्त ॥ ग्रीखम मै वापी कूप सरवर सूखे सब जल नही भिर नाले आवत १ नगर मे ॥ तहां जात आवत लगत कांटे भरन के हैन जैहैं हैंहि पानी पीवति हैं घर मे । अति दूरिहीते भारी गागरि लिआए वे सो छूट पसीना अंग कांपे थर थर मे ॥ कहति १ हैं पुनि सासु ननद भुकैन मोपे जाऊंगी १ तो आऊं मे भर दुपहर मे ॥ १२७ ॥ दोहा ॥ बरनत सुकबि जु नायका द्विविध चतुर सिरमौर ॥ वचन चतुर कहि एक पुनि क्रिया चतुर पुनि और ॥ १२८ ॥ वचन चतुर को उदाहरन ॥ कवित्त ॥ एहो तुम कौहो नेकु घरे क्यौं न रहो देखो चिंता मनि बागन मे को पै लहलही है ॥ तुमको धरम है है देव अरचन काज सुंदर चमेली की कली कछु कच ही है ॥ बाग मे अध्यारी डसलागतु है जात उत ताते हौं कहति इहां जो लोग और नही है ॥ कैसे करि जाउं फूलले

नहीं अकेली इहांतौ आछे आछे फूलनकी
वेली फूल रहींहैं ॥१२९॥ क्रिया चतुर को उ
दाहरन ॥ सवैया ॥ कैसेहू देव वधूनमें कोउ जु
होइतौ ताकी बराबरि वाछै ॥ सो हतिं नरवते
सिखलों मनि अंग अनूप सिंगारन वाछै ॥
सील बढ़ाइ जनाइ बिनै चलै सासु औ नंद
जिठानी के पाछै ॥ नैनकी सैननि मोहनकौ
मुरिके मुसक्याइ बिलोकति आछै ॥
१३०॥ दोहा ॥ जाहां प्रीति परपुरुष की प्रग
टित जगमें होइ ॥ ताहि लछिता कहत हैं
चिंता मनि कवि लोइ ॥१३१॥ सवैया ॥ लोग
की लाजसों काज कहा मन मोहनते कुल
कानि डगीहैं ॥ बोलें कहा हम बावरी हैं वह
सांवरी सूरति देखि ठगीहैं ॥ जानति नंद जि
ठानी औ सासु चहूं दिसि मेरे रवा रे जगीहैं
जाने सो कोउ हजार कहो हम नंद कुमार
के प्रेम पगीहैं ॥१३२॥ दोहा ॥ बहु पुरषनि
की केलि की जाके मन अभिलाख ॥ कुलटा
तासों कहत हैं सब सज्जन वालि लाख ॥१३३
सवैया ॥ छैलनि गैलमै आवत देखिकें भां
ति भांति भरोखनि रीभि रिझावै ॥ चंचल अंचल

डारे नहीं श्रृंगारदु अनूपम रूप दिखावै॥ ला
कुह की गति नैनन की निरखै निरखेहू किन
चैनन पावे॥ जोवनके मद मत्त तिया तजि
काम की बेलिसु औरन भावै॥ १२६॥ अ
नु सैना॥ दोहा॥ संकेत स्थलके नसत भावि
स्थान अभाव॥ मीत गयो हों ना गई जो पोछ
पछि ताव॥ १२५॥ होइ अनु सैना त्रिविध
विधि कहत सबक वि राइ॥ कमते देत उ
हा हरन रूप संज्ञानन सुनाइ॥ १२७॥ प्रथमा
कवित्त॥ रहेहैं सजीव कोउ काहू के गोइ न केह
त अधरम लेत कौन ठाट सब ठाटत हैं॥ सिगरे
जरायहू है इनको कहा सुभाइ औरनको तो हाइ
हाइ हियरा फाटतहैं॥ चिंतामनि सज्जन इहां है
तिन्हैं पूछदेखो आवैजाउ कहैहैं वेतो इनको डाट
तहैं॥ दैख्यहि दैस आली रूख विरदई लोग हरे
हरे सब अंकुरको काटतहैं॥ १२८॥ दूसरी सवैया
आरी श्रृंगारी चोवारे त्यो मंदिर बैठको मन सुहावन
जीको॥ खेलन को तुमको यनं ठौर है जैसे उ
ते सुख पावे गी नीके॥ हैमनि सुंदर लोग उ
जा गर नागर नेह पगो परतीके॥ ज्यों इहां
त्यों सखु रावरे विहारी में बाग बडे दिग हैं

खिरकीके ॥ १३८ ॥ तीसरी ॥ सवैया ॥ अपने सी
त परोसमी सौं सुंदरि सूने चौवार सहेट बता
ई ॥ कहुँ उन बोलि कपोत की बान अटा पर
आनि दूलरत ठानी ॥ जागत है भरत यह जा
नि मनोजके बान लगे पह रानी ॥ आइ म
यौं तनमे परसे द्‌परी पति संग रही अकु
लानी ॥ १४० ॥ मुदिता ॥ सवैया ॥ है दिन कौ
पथ तीरथ न्हान कौ लोग चल्यौ [illegible]
सिग सोई ॥ सासु बहू सौं कह्यौ यौं रहौ घर
और रहे नहि पारिवय कोई ॥ सुंदरि आनंद
सौं उमगी यह चाहति ही सु भयो अब सोई ॥ प्रेम
सौं पूरन दोऊ जने घर आपु रही कौन [illegible]
नन दोई ॥ १४१ ॥ दोहा ॥ परकीया [illegible]
ता सुतो अनूढा नारि ॥ सव ग्रंथन [illegible]
कवि मन कहत विचारि ॥ १४२ ॥ [illegible]
जामे कछू मनि सोचु स वो [illegible]
सो तो कछु लरकाइ ॥ आवत ही [illegible]
रस मोहन के वसिको लल चाई ॥ [illegible]
ना काल नेकु नहीं अरु देखेगो गोकुल गाँव
च वाई ॥ जामे हंसे हू कलंक लगे [illegible] कौन
धौं वैस विरवा सिनि आई ॥ १४३ ॥ [illegible]

कहि स्वाधीन प्रिया बहुरि वासक सज्जा जा
नि ॥ बहुरि विरह उत्कंठिता विप्रलब्ध सु
नि मानि ॥ १४४ ॥ पुनि खंडिता बखानि ये
कलहंतरिता नाम ॥ पुनि कहि प्रोषित
भर्तृका अभिसारिका सुवाम ॥ १४५ ॥ सोरस
व भेद तिहून के भेदन हू के होत ॥ जे जैसे
संभवत ते तैसे लहत उदोत ॥ १४६ ॥ सो स्वाधी
न प्रिया कही जाके नाह अधीन ॥ सुतो सदा
आनंद मय बरनत सुकवि प्रवीन ॥ १४७ ॥
मुग्धा स्वाधीन पतिका उदाहरन ॥ सवैया ॥
जोसी छबि मोहि दिखाइ भारे बहे सा छ
वि पाइ कहीं सुर अंगनि ॥ चलि नीलवधू
मनि नैन चकोर रहे ज्यावे वाही है सुधा रस
सींचनि ॥ अंबर लाल में यों मुख ज्यों प्रतिबिं
बत चंद्र सरस्वति वीचनि ॥ मानो उदे गिरिकं
दरा अंदर इंदु रम्यो कुरविंद मरी चनि ॥ *
१४८ ॥ मध्या स्वाधीन पतिका ॥ सवैया ॥ फू
ल्यो फल्यो मृदु बाग बन्यो मनि मंदिर कीग
ति त्यों चटकीली ॥ प्यारे यों प्रेम की खानि खु
ली अंखियां बिलसें मुसक्यानि रसीली ॥ कं
चन के रंग अंग लसें पिय के रंग रंग रंगी

है रंगीली॥मे रेही संग विहार करि है अब लाज सौं काजु कछून रुईली॥१४९॥ २ प्रौढा स्वाधीन पतिका॥सवैया॥आपुही पाइन देत महावर वेनी गुहे अरु वेनी छुडावे आपुही वीरी बनाइ खवावै अनेक विलास नि रीभि रिझावे॥तेरी सखी मनि आपने मित्र सौं ते रेही प्रेमकी वातें चलावे॥तोते ? त्रिलोक मे को वड भागिनि जो तिय जो पिय को बस पावे॥१५०॥ देखें न वैसो सुख मान थनो मनि जासुख मान को मोर भयो है॥ सांवरो सुंदर जो सिगरी कुल नारिन को चित चोरि लयो है॥आपने आइ कादवे कहू घन चोरि घटान को मोर भयो है॥ ...र मोर भारो रखकी चोर सुतो सुख ... भयो है॥सामान्या स्वाधीन पतिका॥दोहा॥ या पर नेह निवाहु तू है ... लाल तन धन मन सद तो हि है ... १५२॥पियको आगम जानि कै ... रै वाम॥ सोध सेज संदार कै ... नाम॥१५३॥ मुग्धा वासक सज्जा॥सवैया॥ मंदिर सुंदर धूपे सुधा मय जोन्ह...

जहां अधिकानी ॥प्यारी सिंगारी प्रवीन स
खी मनि मोतिन की सुखमा सरसानी॥से
ज रची पथ फेनसीयांपिय आगम बेरी
जौ नियरानी॥ हेरी अली सौं चली हंसि
नोल वधू मुसकौ लन बाढ लजानी॥१५४
अध्यावा:॥ सवैया॥ मंदिर धूप करै एके मं
दिर ढूंढिकै देखी सुतल्प निहारति॥सेज सं
वारै दुकंत नै आपु सकंलहि आपुन अंग
सिंगारति॥ फूलनि हार सुगंध रच्यौ जन
मेरसे गोर सखी को सुधारति॥चंदमुखी
पिय आगम औसर योंरति केलि की साज
संवारीत॥१५५॥ प्रोढान्याः॥सवैया॥चंदन
लीप्यो मनोहर भौनसौं धूप्यो भले अगरै
भव धूपनि॥चंदु कला मिल सेज रची पिय
आगम सुंदरि सेदु सरूपनि॥अंग सिंगार
धरे गहने जवने मुकता मनि वृंद अनूपनि
तासमे ऐसो खुल्यौ वह मंदिर मंदिर मा
नो खुल्यौ रस कूपनि॥१५६॥परकीयावा
सकसज्जा॥सवैया॥सेज रची मनि मंजु प्र
सूनि आवनहीसुख पावहै जोपी॥देखत
सौ भगवान वनी जिन कान्ह वधूहूकीदीपति

ति लोपी ॥ बाहिर चंद्रकी चाँदनी पूजत भीतर जौं ॥ सुख चंद्रकी चन्द्रिका चोपी ॥ देखि पर प्रानके पुत्र कुलाइ असी कह्यो सुक्ख विरागत गोपी ॥ १५७ ॥ सामान्या ॥ सवैया ॥ सांझ समै नखते सिखलों सजि चंदन मुकुत ग्रंग सिंगारे ॥ नेकु चितै मुसक्याइ चाइ सुरंगना रूप गुमान निवारै ॥ कोर दुकूली-जाको बार वधू मुक्ता पाल वंदन वार संवारे ॥ सीस धरे नम लोर लखी पति आनन जाको अमी के कुलारे ॥ १५८ ॥ दोहा ॥ नायका को आगम समै सुंदरि अंग सिंगार ॥ विलासनि है आभरन पहिरि मुदित वर नारि ॥ १५९ ॥ नु रधा विर होत्कंठिता ॥ सवैया ॥ बाल सखी पहिले पतिसों जु सूठ्यौ त्यों लाल बना न घटाइ ॥ नेकु उदै निलि लैक बाल दुदूलह की यह लाली सुहाई ॥ दूसरे छोर त्रि जामलों बाहि दातमें बालम वार विताइ बोलि सकैन सहै लिह सों चित चंदमुखी के भई दुचि ताई ॥ १६० ॥ खंडिताबोडका रूप सवैया ॥ कामिनि को पहिलो लव जास वितीत भयो पिय गेहन आयो ॥ लाजान ...

सवै नसरवीनसौं वाम कोकामहिमोअकुला
वो जोमन दीन्ह विचार करै उनके हून मोहि
वियोग दिखायो ॥जानति हौंनकहा गति है
मेरे प्रानन को पति वे विलमायो ॥१६१॥
प्रौढा वि:उ०॥सवैया॥आजु विलंव भई
काहु काज से औरपै प्यारे को चितनजैहैं
कोक पदी वहु जाति वडी तुम पीउ तुम्हा
रो प्रभात मे ऐहै॥आनंद कैहै री कोकउरो
जन नैन सरोजन सों सुख पैहैं॥तेरो का
हा लवकैहै सखी यह पूरन चंदको जीव
न देहै॥१६२॥जीवति क्यों अव मारत मा
र वडे दुख जामिनि जाम विताई॥देख वि
ना जग सों पल जातु सुजानि के प्यारे
हों त्यों तन्न फाई॥होंलखि हों मुख क्यात
नी हर श्री मुख चंद कावे सुख दाई॥आ
इ परौ धों कहा गुरु काज जो वालम आ
जु विलंव लगाई॥१६३॥परकीया वि:उ०
सवैया॥इंदु उदै पहिलेही संकेत मैं आ
येही दूती यदे ठह रायो॥नागरि आइनि
कुंजके भीतर नागर नेकु विलंव लगायो॥
तौलगवाके हजार विचार भए अतिवाही

को मैन जगायो ॥ चंद्रिका लौं दासनहूं जासमें प्रभु गोकुल चंद चिते चित भायो ॥ १६४ ॥ स्वकीया वि०उ० ॥ सवैया ॥ जाइ रखो चलि ल्याइहूं उन्हें यह बोलयो नाहि ठंहै तनिकहू पहि ॥ आयो न तेरो मनु सुरहै मेरो हौं चाकृति रुका लिहादे मिला पहि ॥ लाल वा मोहि उ लाल मिलाउ कहा तू रहे उप चार सभाप हि ॥ मोतिन हार मनोहर सौं वह रेट तो मेरे वियोग सता पहि ॥ १६५ ॥ विप्रलब्धा लक्षण ॥ दोहा ॥ जाहि बोलि संकेत पिय जाय आन तिय पास ॥ ताहि विप्रलब्धा वधू कहि कवि करहिं प्रकास ॥ १६६ ॥ मुग्धा विप्रलब्धा ॥ सवैया ॥ पीतम भीतर जानि सखी निजपेलि के मंदिर केलि पठाई ॥ पैठ गयो गृह मध्य छपे मग ओर पै इंदु मुखी दुत आई ॥ जोवन चंदकी चांदनि में मग प्रेम को चाहि हिये अकुलाई ॥ सेज निहारि कै सूनी सरूप गुमानके अंगकी भीति ढहाई ॥ १६७ ॥ मध्या विप्रलब्धा को उदाहरण ॥

॥ सवैया ॥

इंदु मुखी मनि इंदुकी रैनिकाहू गुर रंगवनमें

मै विलाई॥पाइ नि देशनि वासहि आइ सखी सुखदै यतु नेह पठाई॥सोधके ऊपर खंड सिधाइ जहां रति मंदिर सेज सुहाई॥नाह निहारि नौन द्वै सिगरी सुख दायक सेज भई दुख दाई॥१६८॥प्रौढा विप्रलब्धा॥सवैया॥कांति कपूरन चंदकि चांदनि पूरन छीरधकी छवि छीनी॥सूनो विलोकि विहार को मंदिर क्यों करि जीवैगी प्रेम प्रवीनी॥वाहि वुलाइ हौं औरपै जात सुवैसे वने यह वात प्रवीनी॥वंचन मेरो कियो सजनी यह रंचन प्यारे दया मन कीनी॥१६९॥परकीया विप्रलब्धा॥सवैया॥आइ मनोरथ मे चढ़िके दूत वाके थके सुकु मारथकीहै॥ कीन सके रहि और नि कुंजन खोजनहू कौन जाइ सकीहै॥फूल प्रसूनको खान हूजारन मारन कारन मारतकीहै॥गौन भुलानी मृगीसी विलोकति सूनेनि कुंजको चाहि चकीहै॥१७०॥सामान्या विप्रलब्धा॥कवित्त॥सुंदरि धनिक नव यौवन निरखि कौ ऊ संदरी सुगंधले गावन कौ लगीहै॥वोली मुसुकाइ नेकु वैठिये हमारे गेह इन काही स-

न मुख छवि जगमगी है॥ चमेलिन की १
कली सें रचना अनूप रची मंदिर में चंद
की उदोत जोति जगी है॥ यह तौ अध फूलै
फूल हंसत हैं याहि जानु जग की ठगनी १
काहू भले ठग ठगी है॥१७१॥ खंडिता लक्ष
न॥ दोहा॥ आन बधू रति चिन्ह धरि आ
यो जावो पीउ॥ प्रात घरै सो खंडिता यह
रसिकान को जीव॥१७२॥ मुग्धा खंडिता॥
सवैया॥ आन बधू रति चिन्ह धरे इत प्रात
हि प्रीतम आगम कीन्हो॥ आली के हाथमें
आरसी दै मनि नोल बधू भजि भीतर ली
न्हो॥ बोली सखी यह रूपकी रेख कहां य
ह वेष उप दूष कीन्हो॥ यामृग नैनी पत्या
नी मृगी को कहा चित लाल को काइल १
कीन्हो॥१७३॥ उत्तमा॥ कवित्त॥ जोपे प्रान
प्यारे चितचाहन तिहारे काहो तुमही यों
काहा गति मेरी तो बिहारी है॥ नेह रस भरे
डीठि राखिये अधीन हों मै स्याम सचि प
र जात काम रुचि हारी है॥ चिंता मनि तें
सों लह जहे जौ लौं सींचि यतु अनसींची
कुम्हिलानी मालती निहारी है॥ ऐसी पा

॰॰॰ई मरजों उगी चारने जाउ जीवनि हमारी
॰॰॰ि बोलनि तिहारी है॥१७५॥ मध्याखंडि
॰॰॥ कुंकम लेपसों कीन्हो सबै तनु लाल हो
दीपति पुंज उज्यारे॥दृकव हरे हम सों चक
ईन वो फूले ए लोचन कोल यिचारे॥वाहि
रआइते नारिनि की खुली नीविन के हैं बंधा
॰न वारे॥आइ प्रभात दिखाई दई तुमली
॰॰॰ मित्र ए प्रान हमारे॥ १७४॥ प्रौढाखं॰
॰॰॰॰॥आन अंगना के अंग संग चिन्ह॰
॰॰॰ आयौ पीउ जीउ दूखित जो अ राध दो
॰॰॰॥ कोप रूद राई पर चोपसी चढाई भ
यो ॰॰हन केसनु प्रेम कोरी भिती समै॥ रे
॰॰ ॰॰ देखि जगी पीतम पै आइ परी नीर
॰॰ अखियां अगन अति रोसमै॥ऊपर ह्वै
आई जल लहरि आइ वालमले अलि मानो
॰॰॰॰नंद को समे॥१७६॥ परकीया खंडित
॰॰॰॰॥ ए सपने की रंक निधि समुभि आ
॰॰ पछिताहि॥ भली करति इनसों सखी जो
॰॰ चितवति नाहि॥सामान्या खं:॥दोहा॥१
॰॰॰ ॰॰॰॰ लखि कंठले लीन्हो हार उतारि
॰॰॰ नैन कारि हाथ सों गमन बतायो नारि

१७८ ॥ रिसते पिय अपमान करि पुनि पी
छे .. छितात हैं तिहि कहत हैं नाही
सोऊ पिराहू ॥ १७९ ॥ क्षुध्या कलह ॥ सवैया ॥
... मैं पहिले ... निवेरी पुनि हों पहिले
... ना ... ॥ पेन्हू सीं ... नद
... अर्द्ध सन प्यारे को ... विहा
नी ॥ ... लिये सेज मैं सोइके ...
न ... मैं ... ॥ प्रात ... म
... गयो उठिही पछितानि
१८० ॥ ... कलह ... ॥ सवैया ॥ ...
र सेज ... पर प्यारेवो प्रातमै ...
... ॥ ... बिलोक्यो ... वधू ...
... के ... मुसकानी ॥ नाथ के हा
थ दई उन ... वैतो ... सुमै ...
... ॥ पीउ ... ते ... ता ...
ते ... ॥ १८१ ॥ प्रौढा ॥ कवित्त-
... किवो ...
न ... रे ... सौन ... ॥ ताको
... वधू ... वियो
... सब ... ॥ ... हती
... रयो ... कहा ... कर

त जो आये काहू जागरी॥ अवकैौन भौंहैंता
नि मानि करि वैठी कत लागी पछितान
मन मैन वान लागरी॥१८२॥ परकीयाकं
दोहा॥ प्रेम कियो कुल कानि तजि पठ्यो
रिसन रिसाइ॥ गयो लाल मो हाथते कहा
लेउं पछिताइ॥१८३॥ ॥ ॥ ॥ कलहंतरि
ता॥ दोहा॥ भई विपुल धन वंत हौं जाके
पाइन सेइ॥ तासौं रिसि अनुताप यह
मोहि महा दुख होइ॥१८४॥ प्रोषित भर्तृ
का को लक्षण॥ शृंगार मंजरी यथा॥ प्रोषि
त यह भावर्थ द्यो नितितिहूं कालप्रवासहि
कहत आन॥ सो जामे सो प्रोषित विचार
यह प्रिया प्रोषित भर्तृका जान॥१८५॥
*॥*प्रवत्स्यत भर्तृका और जानि॥ प्रव
त्स्यत प्रिया पुनि और मानि॥ प्रोषित भर्तृ
का और एक॥ योंतीनि भांति याको विवेक
१८६॥ वडे साहिव अपने ग्रंथ माह॥ निर्नय
कीन्हो कवि वुद्धि नाह॥१८७॥ दोहा॥ प्रिया
वासके हेतु काहि ताप धरे यों होइ॥ कही
सो प्रोषित भर्तृका समुझ लेहु सव कोइ
१८८॥ याके भेद कहत॥ दोहा॥ प्रथम प्रव

त्स्य प्रिया पुनि प्रवत्स्यत पतिका जानि॥ पुनि प्रोषित पतिका कहीतीनि भांति यों मानि ॥१८८॥ प्रवत्स्यत पतिका को लक्षण॥ ॥ दोहा ॥ प्रिय विदेस को गौनको उद्यम ल खि दुख पाइ॥ होति प्रवत्स्यत प्रिया तिय व्याकुल चित्त बनाइ॥१९०॥ मु प्र उदा॥ सवैया॥ जाने अजौ कुल हीन कछू यह आजु मिलापते रातिहै सातें॥ दूलह की दु लही बनि भूले कहा जुर हो हैं संकोचि स मातें॥ हौं दुख सागर मे सखि बूडति आ नि कही कतते चरचातें॥ दंपति के पहि चानि समै कछु नीकी न पीके पयान की बा तें॥१९१॥ मध्य प्र॰ उदा हरन॥ सवैया॥ ॥ प्रीतम मारयो विदेसनि देस सुने तिय के बिरहा गिनि जागी॥ नैननि मे असुवा झलकैं तियके हियते सिगरी सुधि भागी॥ सुंदरि सीस नवाइ रही सुमई मतिहै अति ही दुख पागी॥ यों निरख्यो मनो जीवसो पीवके संग सिधारिवे पूछन लागी॥१९२॥ प्रगल्भा प्रवत्स्यत पतिका॥ सवैया॥ नाह विदे सकी चाह सुनी वह साहस काज विचार

कायोहै॥ विजुलिसी सी हली न चली व पुमा
नो वालतनु सों अकुलीहै॥जैवे कोलाल १
अभिमान कीन्हों सुवाल इहु मुकसौं जक
यौहै॥ बदत कुदसपयो निधिमें पिकको १
तियमानौं गायौ बकसौहै॥१८५॥परकीया
प्रवत्स्यत पतिका॥दोहा॥लोगन बूझति
लाल वह पुरीकिती यों दूरि॥तिया कह्यो
सखि आज है चंद आजुही पूरि॥१८६॥ १
सामान्या प्र॰वः॥दोहा॥सखी कारन तुमको
उचित सबन हीके पत्र॥सुंदरि बहुत ग
दाइके पुनि व्है है सवात्र॥१८७॥वदत पी
उ पर देसको अपने आखिन देखि॥प्रव
त्स्यत पतिका नाम कहि नयो भेद यह ले
खि॥१८८॥मुग्धा प्रवः॥दोहा॥यह मुग्धा
मन कुमुभ को रावे अंजलि जोरि॥नि
कुर होम सवार वह नई दुलहि याछोरि॥
१८९॥मध्या प्रवः॥सवैया॥लाल विदेस
की साज सजी सब सुंदरि हैं हियरें अकु
लानी॥चाहै कह्यो अहो प्यारे रहो तव ला
जन तेनकढ़ी मुख वानी॥तो लगि यों अस
वार भयो गुरु काज भयो गुरुता अधिका-

नी॥नैननिह्वै जल पूर वढ्यौ मृग लोचनी। दुक्खसमुद्र समानी॥२००॥ प्रवत्स्यत पुव-त्स्यत ॥सवैया॥ मंगल साज पयान को वे हते प्यारे दियो पहिलो पग भूपर॥देखत लाल अलक्त भयो निकटे मह आनन को जैसे कूपर॥ ता सम व्याकुल सुंदरी है असुवां परे टूटि उरोज दुहू पर॥ प्यो अब ओट चढावे मनौ दृग मोतिन माल महे शके ऊपर॥२०१॥ परकीया प्रवत्स्यपा॥सवै या॥ सुंदरि मंदिर के ढिग मंदिर सुंदर वो-प्रस्थान वनायो॥ झांकि झरोखे ह्वै नारि सं देस पठायो वही यह दूत पठायो॥बावरी लगी ते चिट्ठी जु लई उन वांचि प्रवास उदोत जो पायो॥ आपनो आनन चंद मुखी पहु-होसको आनन चंद दिखायो॥२०२॥सा मान्या प्रवत्स्यत पतिका ॥दोहा॥ लाल-लत लखि लाल उर वोली तिय मुसिकाय॥ अपनी प्रतिमा लाल यह लाल निसानी देहु॥२०३॥जाको पति परदेस को चाढ्यौ-सु दुखित नारि॥ प्रोषित पतिका होति है पंडित कहत विचारि॥२०४॥मुग्धा प्रोषि

त पतिका ॥ सवैया ॥ जाके उरोज बढ़े उ
रमै तजि लाजनि बाल मसों अनुरागी
ऐसे मे पीउ बिदेस गयो यह जानै नहीं
तो महा दुख पागी ॥ पूनो को चंद कला
सी मनोज कलानि बढैगी जु जोबनजा
गी ॥ * ॥ पूनो तो याकौ जो आवै घरै
पति दंपति तो गनि है बड भागी ॥ २०५ ॥
मध्या प्रो: ॥ कवित्त ॥ मोसों बूझिभली भां
ति समा धान कस्यो तेरो कितनो वियोग
ताहि सूझत [illegible] है ॥ सु नु सखी सपनो
मे लख्यो आजु नीको आप चित्र रूपवो
न्यो भगवान जो छगुन है ॥ तिहारी सखी
को कंत या वसंत पंचमी को आवत वसं
त याको भयो सुभगुन है ॥ पूजेगो कबै धौं
मेरे मन अभिलाख यह छपिकै छबी-
लो काहा पूछत सगुन है ॥ २०६ ॥ प्रौढा प्रो
षित पतिका ॥ सवैया ॥ जीवित नाथ वि
देस गयो हम जीवति हैं बिरहा गिनि (
दागी ॥ तिरलि यां काल पंत भई पियके संग
ते निमि रहे समजागी ॥ मोपर आपने
प्यारेको प्यारे कहीजे अनूप कथा रस पागी

जोन्हतियां लागिके बतियां रहुनितें छति-
यां अव सालन लागी॥२०७॥परकीया।
प्रोषित पतिका॥दोहा॥कूलह होत पति
को काछू ललित दिखा वतिवात॥वाव-
रेहे प्यारो सखी मोहि काछू नसोहात २०८
सामान्या प्रोषित पतिका को उदाहरन॥
दोहा॥रोइ काहतिहेआइहे मेरो धन मोपा
स॥सुंदरि पिय मग लखन को कीन्हो द्वार
निवास॥२०९॥अभिसारिका लछन॥दोहा
सुभ वेख धरि जोन्ह मे दोरे जुतिय अभि
सार॥सोजो लखा अभि सारिका सकल र
सिक रुचि सार॥२१०॥कवित्त॥तन सद
सुबरन दरपन समता मेमेन अधि लाई
जो गुराई गहिराईहै॥तामहपूर चांदनी सा
लका सोंही सारी सेत सुखमा समूह सर
साईहै॥आभरन जाइ मुकुता पाल दिख
दुति अंग अंग तारागन तेई जनु आई
चली इंदु मुखी उत इंदु अधि देवता सो
सुकृती तिहारो कोऊ हर सन पाईहै॥२१
तमोभिसा॥स्यामवेखधरितन समय चलेंव पि
यपैनारि॥वह काहियतु अभि सारिका स-

ज्ञान लेहु बिचारि ॥ २९२ ॥ सवैया ॥ मेचकरंग के अंगनि कौं लगि कुरंग मद दूबदो कि उज्यारी ॥ चोवकेरंग रंगी पगिया पहिरे तन नील ऽ अनूपम सारी ॥ है बिरखी मग है निकरी सु अंध्यारी जो वे हुलसी अति कारी ॥ बाग मे आनि रमी मन मोहनप्यारेके संग मनोहर नारी ॥ २९३ ॥ दिवाभिसारिका ॥ दोहा ॥ ब्याज प्रगट अभिसारजो द्यौस करै वर नारि ॥ सो बाहि दिवाभिसारिका सज्जन लेहु बिचारि ॥ २९४ ॥ तन सिंगार आईजु करि बागबिलोकन काज ॥ पिय मिलाप लहि आप यह सफल भयो सब काज ॥ २९५ ॥ दिवाभिसारिका ॥ सवैया ॥ कातिक पुन्य महा नदी न्हान चली तिहु संग सखी मन भाई ॥ न्हाइकैनीके सिंगारि कै अंगनि बाग बिलोकनि काज सिधाई ॥ कुंजहु वातमै मित्र मिल्यो धनि मानि उतै दिन राति बढ़ाई ॥ लोग मिले मेरे नेहरके घर बातमै आई यों बात बताई ॥ २९६ उत्तम मध्यम नीच ए तीनि भांति करि जानि ॥ नृपके लक्षण उदाहरण कहत लेहु मन आनि ॥ २९७ ॥ जोपै प्रानप्यारे कछू चाहिन ति

हरे कवित्त पीछे लिख्योहै ॥ प्रिय छल हि
त अरु अहित मैं करै हिता हित नारि ॥ क
वि चिंता मनि कहत है सो मध्यमा विचारि
२१८ ॥ सवैया ॥ पाछेहु जो प्रीति करी मोसन
री अब आनिपरी तुम्हे औरन की टव ॥ ते
मनरीति नई सी लई तुम ऐसी करी अरु
काइ कहो कव ॥ कोकिल काज करै वक
वादहो जैसी हुती सुतो तैसी हुती तब ॥ आजुन
राजु करो वलि जाउं सोवा न वाकहमेरो तुमसो
अब ॥ २१९ ॥ दोहा ॥ हितो करत लखि नाहकों अ
हित करै जोनारि सोअधमा है नाइका कृक
न कहत विचारि ॥ २२० ॥ कवित्त ॥ चिंता म
नि होइ कोऊ नीकी की अनसी सोभा
पावै जामे प्रीति पतिकी उदोति है ॥ तुही
विचारि दूरि करि मोती हार गरे पहिरै ता
कहा छवि पावति वोति है ॥ कहा
कुतहै पीके उर वसी नतो वेनी सेत लिखि
उर वसी कैसी जोति है ॥ कैसेहु निकाइ
ठ वैठी मुख नायको ॥ नायका निकाइ
निकाई नीकी होति है ॥ २२१ ॥ कवित्त ॥ गी
म सर सिज अंग गहै सर सिज

रह्यौ सिरपर घनस्याम रंग अनुराग॥चिंताम
निकहै मानो वदन कमल पर मधुकर पुंजम
नो प्रगटत परभाग॥पीठपर बैठीतन सहज
सुगंध लोभ मानौ अलि अवलि बिसारि कै
चमेली बाग॥वेनी मृगनैनी की यौं मंडित सु
मनि रूप लिपिकी रचीहै मनौ दसामनिअ
नुराग॥२२२॥स्यामा जूके सनेह की स्यामता
सै रिसि स्यामता मे सबरीभि रह्योजगुहै॥चिं
तामनि कहै जु और वचनकी दौरमैन ऐसौ
कछू सुखमाको समूह उदगुहै॥पाटीद्वै सिं
गार घन घटनके वीचमें मयूष सीसफूल
बाल रवि लाल नगुहै॥सेंदुर सुभग तियमांग
रंगभरे अलि मानौ पियमनुके गमागमको
मगुहै॥२२३॥स्यामाजूको सुंदर सवाल अंग
चीत स्यामनि पायो ससिसेन सैनको अलंक
है॥वृषभान नंदनीके नैन निहारि हारिमानि म
हा दुवबन कुरंग भयो रंक है॥चिंतामनि कहै
स्याकमनि बेंदी भाल लयो जु अलंकृत कीन्हों
परजंकहै॥दीपति वितान मध्य मंगल निधानम
नो संगमिलत दसर आठ को मयंकहै॥२२४॥
प्रीतप्रफुल्लितयहि देखिकै छिरयाऊसी है केलि

सरवर अर विंदजो आनिं दुहै॥ यौं कछु है
बात अलि मधुर मधिक छवि कवि वि
ता मनि ज्यों नरन विंदु है॥ सरद की पूनो-
की निसाको महा नीको ताहा पीको सो
लगत याको आगो यहु इंदु है॥ सुंदरी स्वामिं
दरि के सुंदर बदन आगे सुंदर लगत हमें
इंद नार विंद है॥ २५॥ याही की लै सुभ देस
कारत है गंध बंध ऐसो वासै साह जिवारी
रम चंमेली को॥ अंग मनो नाना रंग फूल-
नि की रासि उन अंगन मै विमल विला-
स अल बेली को॥ चिंता मनि चंपक कु-
सुम होय अभि राम दिव्य रूप कोल काल
आनंद के केली को॥ जाके अव लोके स्व
दूरि होत दुख सोहै नैननि को सुख सुख
कोमल नवेली को॥ २६॥ लोहन मोहन
मंत्र देवता विराजै राधा यासों देव कहूं होत
केस अक सत है॥ मुख विधु विंब पर रच
ना रची विरंचि जासै बडी सरसा सर
सर सत है॥ चिंता मनि सु ललित भाल भौं
कला है लसै भाल पर मृग मद विंदु निरख
तु है॥ वृष भानु नंदनी की सोभै अनि लोभै

ऐसो अरथ गुविंद जाके वस मै वसतु है ॥
२२७॥ जाकी नासिका मै तिल फूल भाव
प्रकासक तिल रख्यो विधि यो जोति लो २
तमा मा सोभा घर ॥ तेरी छवि देखि वाकी
ऐसी छवि छीन होति मुख द्युति दीन जै
सो प्रभात को सुधा कर ॥ चिंता मनि काहे
कहा चंपक सुमन ऊन लै सात कीन्हे मु
क्ता हल प्रभानि भर ॥ कहा अति रिजु २
नील नायक रिझायो रीझी नाक नाय-
की है तेरी नाक की निकाई पर ॥ २२८॥ अम
ल कपोल प्रति विंवन सहित मनि जटित
ताटंक चारि चारु छवि धाम है ॥ चिंता म-
नि वदन मयंक रथ रचि रुचि मीन नहे-
मंजुल द्वै महा रथी काम है ॥ सारी जरता-
री हेम पंजर मै खंज मुख सुखमा सरोव
र कै सरसिज स्याम है ॥ चाहे नैननैन जाने
जैसा चैन होन वैन कहांलौं कहैगे जैसे
नैन अभि राम है ॥ २२९॥ चिंता मनि का-
हे तारा वृंद नील आननि सदा विलस
ति प्रति विंवित चिहारहै ॥ सोहे नैन मैन २
वान खंजन सपच्छ मानो मंजुल अंजन गु

नंगुम्फित निहारीहै॥मोद मंदिरन विरा
नावली की छज्जनकी छवि अवलोकि
नि रुचिर सचि हारीहै॥द्वारन मेंलागीमि
न मृगकी द्वारि मनो धनी वाकी वरनी र
तमनी तिहारीहै॥२३०॥सोहै अंग चिंताम
नि नगन जटित दिव्य कंचन की केली की
से सुंदर नवेली को॥सकल जगत पर एक
सुकती हो तुम नायकान वल रंगसी नाय र
का नवेली को॥एक ठौर देखौ छवि आप
नी नहकी प्रति विंदित है आरस रूप आन
दके केलीको॥सुवरन आरसी से अमल
अमोल काहि गोरे गोरे गोलहै कपोल अ
ल केलीको॥२३१॥अह निसि चरचा सखि
न संग स्यामा जूकी स्याम सुमिरन और
काज सब नाखेहैं॥वृख भान नंदनी की ना
ह नंद नंदन पै व्विता मनि नेह वाहतोसों
जात भाखेहैं॥गोविंद के चरित अठार हौं
पुराननमें सुनि हियो भरि पुनि अभिला
खेहैं॥सुवरन रेख नव अंक दुहू कानन में
दुगुनित दुग्ध निधि मानो लिख राखे हैं
२३२॥केसरि सो अंग नाग वेसरि कीछवि

यन ल्सति छबीली अप सरन को चेतुहै॥
चिंता मनि वाहै आल बेली अक लंक हू
ढ़ी सरद मयंक आंखि यन सुख देतुहै॥
लखित वालको मय वालप लतामे लग्यौ
सुधा मय बिंद पाल सुखमा निकेतुहै॥
लाल यौं चाहत धन्य जीवन मुकतये ध
न्यजो मधुर ऐसे अधर कों लेतुहै॥२३॥ह
व भान नंदनी की दसननि की कांति काधि
चिंता मनि वाहै ऐसो कहांते प्रवीनोहै॥
सुंदर भीनको वास रचना रची विरंच या
तेउन विरंच वधू संग लीनोहै॥हरि गुन
सुनिवाको आपने समीप जी भनापाकोस
मन सुललित पुन्य कीन्होहै॥सुललित वृं
दावे मंदिर के द्वार वानतार कुविंद राज श्रा
वन कीनोहै॥२४॥सवैया॥ न्हातु भयोजन
कत लसते तिय एक लखी मनि आजु अन्
लसे॥दामिनि ज्यौं जमुना प्रतिबिंबित सोभा
लसे तनु लाल दुकूलमें॥देखत ही सुखहोत
विना दुख जाहि नहीं कितहे उत भूलमे॥ठो
ड़ीमें स्याम लसे बिंदु गुपाल मनो अलि बा
स गुलाबके फूलमे॥२५॥सारी लपेत प्र

चाहै मनौ मित पैल रह्यो तनु मोनिको सुक
ग्रासोरी ग्रंरु खवाइ खवाव लनो ग्रं…
जतिहै ग्रुन्द ऊपर॥ वांदते ऊपर ग्रानन की
छबि यों वरनै कविराक काहू पर॥ दिव्य धुनी
मधुनी सीधि वांदन वंधु लसै जनु वंधु -
को ऊपर॥ ३६॥ ४१॥ श्री नंद नंदन कीनि
सिंगार गुरु लाजा पहार कुचासन पेलिकी॥ दा
न्हु कसौटी के सोने की रेखसी सोचन ग्रंग-
न ऊपर मेलिकी॥ मैन महा धन सोधन सो
कांति स्याम तमाल ग्रलिरान वेलिकी॥ पी
न विलासिनि बाहु लसै मृदु सारद सनो कु
न कंचन बेलिकी॥ ३७॥ दूरिते दीपति दू
रहीपति पद्म वधून के शोन तजाहैं॥ दाम न-
वोंद घटान के बीच मनो विजु री ग्री ग्राय ग्र
नु जाहैं॥ वीछ विसों ग्रधि कांति सनी हर
राधिका की ग्रभ राति मुजाहैं॥ का…
न ग्रलंकृत ग्रंकित मैन की सानो…
भुजाहैं॥ सरको ग्रंगते गंग की…
हैं सुभ हार धसेहैं॥ चंदन की…
हैं जनु यो सित कंचुकी कीन…
हीं कवि नारि के तारको यों भांति पै…

लसेहैं॥तो उर सौं उर नाह घसे व्है घसे कुच आपु समाइ धसेहैं॥२३९॥बाल पने की निकासी भई बल बाको अयान दै आदि अ कुठाउ॥जोवन को विधराज दियो उन आन कियो सब काज सुठाउ॥ चूचका से चका वे मनि छत्रन के कालसा कारि कात- नु ठाउ॥देवता द्वै रति मैनके द्वैकुच सोने केद्वै मठ मानो उठाउ॥२४०॥कवित्त॥ दू ष भान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि कहासवसु नारि वृंदजन के। चिंता मनि लाल दर सन हेत लल कात सुबरन संभु जुग सोहल सुलज्ज के॥मैन रति मंगलके सुव रन कुंभ कोधौंकेधौंकुंभकुचजुगुलजोवन म द गज्ज को॥रवगकेधौंकुंभ कोधौ श्रीपाल सु दारके धौं श्यामजूकोमोहनकेसोभन गुच्छ कंज के चिंतामनिसोहैं कुच कांचन कलस चारु नव गन पति कुंभ रोचन के रंगको॥ विम ल वदन दुज राज रुचि गुर कीन्हो सेवत विमद जाहि जगन दुसंग को॥हरिजूकी प्रीति हेत जग उल हायो पायो जोवन नरे- स राज राधाजूके अंगको॥२४१॥सवैया॥

और त्रिलोक मे कौन त्रिया अति रूपवती वृ
षभान लली तें। चोर भये को मैंयान चल्यो
उत जोबन राज प्रताप भली तें। मैन महा
बली सौंपि दियो मनु छूदन पावनु बेंचि
वली तें॥ श्री नंद नन्दन मोहन हेत विधाता र-
ची मनो बाज्ज वाली तें २४३ वो महा मृद छबीले
के अंगन जाय परयो ज्यो ससारो बहीर में॥ ठा
नै अनठान अधीन जो आपते ताहि को आ
नि सके पुनि तीरमें॥ जोबन पूर विलासत
रंग ऊठे मनमोद उमंग समीरमें॥ सैल उरो
ज ते कूदि परयो मनु जाइ प्रभानदी भौंरगं
भीरमें॥ २४४॥ जोवन को आगमन समुझ
के पद छोडि चंचलता चारु चख पद चा
हि धाइ है॥ जघन पुलिन लागी आइ थिर
ताई चरव छोडि पग चाहि के उर जतट
आई है। पानिपमे त्रिवली तरंग नाभि भौंर
रूप नदी मध्य आनंगने प्रकासी यौ निकाइ
है। चंचलता थिरता उता रन कारन रोम
राजी नील मनि सेत रेख उरू लाई है २४५
कोट कटाछ तुरंगम है पुतरी अम चारन वी
छवि छाजे॥ मत्त गयंद वो कुंभ उरोज किलो

कात मानस धीरज भाजै॥ज्यौ मनि चाप र-
थंग निलहे पन्नविलासन ते जनु रसाचो॥
संदरिको चतुरंग चमू नृप मंजुल मथ अनं
ग विराजे॥२५६॥कवित्त॥सोहत छवीरि
ग्रंथ फोरि ति नंदनी को हेरि मंद मुसकानि
चाक चंदहु तुलन है॥चिंता मनि इंदिरा को मं
दिर अनूप आगे विदतो प्रभात हूं में सबाल
तुलन है॥सेत सारी सारी सेनिहारी नेकु मन सु
ख सुख निरषि मन सकात डुलन है॥सरद ऐ
मै प्रगटत नीरनि घटत मेरु मही पर मानो
मंदाकिनी को पुलिन है॥२५७॥अभिनव उ
दित मदन रवि रथ चक्र पर पंथी वाल द
गन निशासय वेली को याही को सुर दसन स
मभात घन स्याम खंडन विरह वैरि सेना चे
रि मेली को॥चिंता मनि याते कहावे चक्र चि
त चकित भये है लखि चक्रपानि मेली को
※ कुंकुम के मानो कुच कुंभ दै भवाइ धरे
जोवन कुलाल चक्र नितंबन वेली को॥२५८
सोभाको सदन अवतरे हो मदन तुम देखिवे
ललित रूप रीति रति केली को॥२५९॥चिंता
मनि कहत गुंजरत भौंर आस पास मंजुल-

मै साहि जिदा वामुहै चमेलीकी ॥ दीपतिदी
दीपतिसी दीप जव वसन जोट कदलीवार
लसी सुमंजुल नवेली की ॥ सुर पति सुद
हूलै सुख सरसैगो उरपरसैगो लाल ऊरु
मूल वेली की ॥ २४९ ॥ चिंता मनि मोहन
सुभग हेम खंभ चास जोवन मदन मंद पुं
डरीकलासी ॥ सोनेवी तरवासी दैवामवी
सुरन नख चंद फूली अंगुली कंधुवाकली
वानसी ॥ केहरि रतन जोति छिव रंग अंग
भवर सोवह सित गोपन निदान की ॥ गध्या
नकी जंघा मकरध्वज प्रधान कैधौं सिर
को निधान रसै गर्भित निधान की ॥ २५० ॥
सवैया ॥ यौं जनि मैन महीप प्रताप तिया
तन वैर सुभाउ मिलेहैं ॥ आनन सूर निसा
कर वो ढिग वार घने तम आनि हिलेहैं ॥ वै
सुखमा के समूह कछु अंगुरी पद्मीन पु
वार खिलेहैं ॥ छोडि सदा को विरोधु वाह
वारवंशन सौं नख चंद मिलेहैं ॥ २५१ ॥ का
वित्त ॥ कनत इनको सदाहै सुनि चितास
निकीन्हो जो मुदित मन महा मोद मढतें ॥
नाह मनु मन मोद उल हावै नीवो अभिन

व ललित वाल पलता छदतें ॥ स्यामकोहैं
सं जीवनि वेलको पल्लव ए ज्याइ लियेजो
वचाइ विरहा गिनि हृदतें ॥ महा उरंग रं
गे रंगत है लाल उर राधिका को चरन अधि
क कोक नदतें ॥ चिंता मनि तेई कहै चंद
मुखी याकी वडी वडी छवि छाती जिनि
सौतन की दहीहैं ॥ चंद मुखी औरै को
कहि सकत याके आगे अर्धे रात चंद
हू प्रात सचि चाहीहै ॥ विमल वदन देखि
याको तुमहू तौ चंद मुखी कहि कान्ह मोह
नदी अवगाहीहैं ॥ निरमल दसननपचार
सुंदरि के चरन अंगुरि यन सेवत सदाही
हैं ॥ २५३ ॥ इति श्री चिंता मनि विरचिते कवि
विकुल कल्पतरौ श्री राधा वर्णनं पचमं प्र
कार णम

॥ अथ नायका वर्णनं

दोहा ॥ सकल धरम जुत निपुन धनविकाम
पूरहोइ ॥ ताको नायक कहतहैं कवि पंडि
त सवकोइ ॥ १ ॥ प्रथम धीर पदहै गनौ नाय
क ए निरधारि ॥ कहि उदात उद्धत बहुरि ल
लित संत ए चारि ॥ २ ॥ महा संत गंभीर अ

र क्रिया सिद्ध जो होइ॥अवि वाम्मन धीगति मन योउल्टात कहि सोइ॥३॥धीरा उदात्त लक्षण॥कवित्त॥पिता राम राज अभिषे क कौ बुलाए पुनि वनकौ पठाये नहीं वद ल्यो वदन रंग॥प्रवल वैरीको भैया रूर न हि आयौ तासों कारन निकेत आपु रहौमि लि एक संग॥हन्यो इंद्रजीत कुंभकरन औ रावन ए एक एक तिहूं लोकन के जेता अ भंग॥इंद्रादिक देव तानि करी वड़ाई आ ड नेकु नव नाही काहू प्रगटयौ गरव अंग ४॥दोहा॥प्रवल गर्व मत्सर सहित चंडादि कत्थन होइ॥मायावी जो जगत मे धीरो द्धत है सोइ॥५॥सवैया॥याहि यो उनन सु भाउ परयौ सव छत्रिय वार इवो संघारे॥ गर्भ लगे इन छत्रिन कौ कुल खंडित की न्हे भयंकर भारे॥तैं लराके गुर संकर कौ धनु,तासौ कहा मन मोह विचारे॥राजकुमा र यो तीखन धार परयोहोइ कान कुठारतिके म हे॥धीरललित लक्षण॥दोहा॥सुंदर अ ति मन हरन गन सुरवी कान्ह सो होइ॥वि लासक्त निहि चित कहू धीर ललित है

सोहू ॥७॥ सवैया ॥ मोर किरीट लसै चप-
ला पट नील वला हक रंग हरेहैं ॥ गोप के
कंध धरे भुज दंड अनूप विलास प्रभा-
ति भरेहैं ॥ कान्ह लिये नव मंजरी मंजुल
वंजुल कुंजन तें निकरेहैं ॥ सुंदर मार हुं
तें सुकुमार सो वे लखि नंद कुमार खरेहैं

॥८॥ धीर सांत को लक्षण

दोहा ॥ विप्र सखा गोविंद को धरम ज्ञान
निधि सुद्ध ॥ इंद्रिय विषयन तें विरत सो प्रथा
न अति शिष्ठ ॥ ९ ॥ शृंगारी नायक बहु
रि चारि भांति के जानि ॥ प्रथम कह्यो अन
कूल पुनि दक्षिण नाम बखानि ॥ १० ॥ बहु
रि धृष्ट पुनि सठ कह्यो लक्षण फिरि अ
नुरूप ॥ बरनत ए शृंगार के आलंबन मृ
दु रूप ॥ ११ ॥ एक स्वकीया में रमै सो अनु
कूल बखानि ॥ सब मे सम बहु नारि रत सो
दक्षिण मन आनि ॥ १२ ॥ अनुकूल को उदा
हरन ॥ सवैया ॥ पीतम और बधू सो मिल्यो
नहि जाने सबै गुन दोख बिसेखै ॥ मै सब
को ते उपाय रचो पिय के सहूं और तिया मु
ख पेखै ॥ मेरो विचार अच्यो वच ह॰ १

मो पै ज्यु उतरु दै हसि देखै॥ पावै वाको कि
त दूसरी वात चकोर जो चंद्रमा के समलै
खै॥ १३॥ दक्षिण को उदाहरन॥ दोहा॥ स
व अपने सन मुख लखत होत सकल सा
नंद॥ कालनि कलित मनि अति ललित
प्यारो पूरन चंद॥ १४॥ धृष्ट लक्षण॥ दोहा
पुरुष प्रगट अपराध जो निरभै आवै गेह
कहै धृष्टति य धन्य तें तासों करै सने
ह॥ १५॥ रिसनि निकारो गेह तें निपट नि
ठुर करि जीउ॥ कर वटलै देखै कहा सं
ग सोवत है पीउ॥ १६॥ सठ लक्षण॥ दोहा
॥ छपि तिय को विप्रिय करै वाहिर प्री
ति दिखाइ ऐसो नायक होइ जो सठ कवि
वरन्यो जोइ॥ सठ को उदाहरन॥ सवैया॥
प्यारी कहो हमसों निसि वासर यों कछु
प्रीति की रीति निहारी॥ कैहूं कृपा करि
मोहि चहो मनि हैं तो उपाइ घने करि हा
री॥ कैसे छपै हमसों जो छपाइ सखी निसि
ल और के संग विहारी॥ और कहूं दिय
अंतर की हमसों सुख की प्रिय प्रीति निहा
री॥ १८॥ अथ श्रृंगार लंक्षन॥ कोन ...

वर्णनं॥सवैया॥कैसी उज्ज्यारी नलेसु
रह्यो तम साया निसाको सहायन के॥कु
रबिंद सुधा भरे इंदु भरे अक लंक अनू
प सुभायन के॥अंगुरी मनि नीलकी पा
सिनको मनो अंक परे सुभ दायन के॥उ
र अंतर सुंदर आनि उये नख इंदु गुबिंद
के पायन के॥१९॥तेरे नहोइ संतोष त
ऊ जो रहे तिहुं लोक की संपति को गिलि
टी थिति वे मकरंद सुधा भरे वेलि संतो
ष की रासन मे खिलि॥तोहि सुहातु हे रा
त घनो मनि राग लसे जिनि मे तिनिमे
हिलि॥चाहि जो सीतल ता हियरे हरिके
पग मंजुल कंजन सों मिलि॥२०॥कान्ह
की ऊरु लखे जग को कदलीन के मूल
न की छबि लाजे॥यों बल खानि उदंड
लसे लखि दिग्गज सुंडन के मद भाजे
जो हरिके हर रोमके कूप अखंड वनी व
र भंड समाजे॥ता गुर भारके धारन को
मनो नील महा मनि खंभ बिराजे॥२१॥
खेलमे सैल उठाइ लियो बलकी अधि
काइ सुयों दरसे॥कर ऊपर सोहत भृंग

मनो मांह पाइ दवाइ सुभाइ हसै ॥ मनि मेचु
क मंजु महा गिरि की सुखमा द्दीग शृंगनि
मेचु लसै ॥ मनो नील पयोधर वीच मनोहर
दमिनि की प्रतिमा दरसै ॥ लोचन मीन लसे प
ग कूरम कोल धरा धरकी छवि छाजे ॥ र
वल मोहन सांवरे रामैहं दुर्जन राजन कोह
नि काजे ॥ हैं वलमे वल ध्यान मे बुद्ध लखे
कालकी विपदा सव साजे ॥ मच्छ नृसिंह हं
कान्हजू मे सिगरे अवतारन के गुन राजैं ॥
२३ ॥ कान्ह की देह कलिंद सुता त्रिवली सोत
सा की पांति नचीहै ॥ नाभि गंभीरद हारनि
हारि के रीझि समान समान सचीहै ॥ लाल
महा मनि मालके वीच रोमावलि रूपकी
रासि रचीहै ॥ दिव्य दिये दुहु तीर नदीय
सुमध्य मनो तम रासि वचीहै ॥ २४ ॥ श्री ह
रिके उर ऊपर चारु खुले मुकता हल हार
खरेहैं ॥ व्है प्रतिविंवित ऊहां नए दुगुने सुखमा
के समूह धरेहैं स्याम महा मनि शैल सिखा
नखता वलिके प्रति विंव परेहैं ॥ आपने वंधु
समाजको साजके वंधुन मानो मिलाप करे
हैं ॥ २५ ॥ एई उधारत हैं तिन्हें जे परे मोहस

द्रै दधिके जल पेरे॥ जेइनको पल ध्यान थ
रैं मन तेन परैं कबहू जम घेरे॥ राजे रमार
मनो उप धान अभे वर दानि रहै जन नेरे॥
हैं बल भार उदंड भरे हरिके भुजदंड सहा
क सेरे॥ २६॥ कान्ह को कंबुजु कुंकुम रं
जित भागनतें मनहूं मन आनो॥ श्री कम
ला वल यावलि अंकित सुंदरता जग ऊपर
जानो॥ हैं रम नीय त्रिरेख मनो अब तामें ल
सी मुकतालि वखानो॥ एक निवास के नेह
मिले सुभ संख सों सूतिन के सुत मानो॥
२७॥ लखि लोचन नील सरोज मिलेहैं प्रका
सत प्रेम प्रमोद घनो॥ मनि कानन मे मुकु
ता झलकें उठिहैं परिवार मनो अपनो॥ मुस
क्यात सदा नद नंदन को मुख यों सुख मा
को समूह गनो॥ यह सांवरी स्वच्छ पसारत
चांदनी सांवरी सुंदर चंद मनो॥ २८॥ कान्ह
के अंगन की छवि देखत नीकोन अंग लगै
आरसी को॥ ऐसी मनो हर मूरति मे मन
लागत है मनु धन्य जसी को॥ सोहै सुभाव
कपोलनि मे नद नंदन को मृदु मंद हसी र
को॥ नील महा मनि आरसी माहं मनो भा

लखैा प्रति विंव ससीको॥२९॥लीन्हे याको तौ स्वादु अचेतनहूं मुरलो कियो नादविलाेकाय वयो॥पुनि याही के स्वाद सिरी भई पूजि त जे वसकै कोटि कानन वेयो॥इत वाको तो स्वाद लिये कवहूं सव लाेग सदा विन वुद्धि त- वयो॥मनि मंजुलता हरिके अधरो वह वेयों करिपावत विज पवो॥३०॥जाहि लखे व्र जकी वनिता जिनकी कुल कानि लियं सव लाजे॥भूलि गयो गुरलोगनि कैा डरछो डि दियो सिगरो ग्रह काजे॥पूरन चंद तें जाे अधिके मनमानन चंद वड़ी छवि छाजे॥ऐसी अनूपम ओपधकी नाका सुनं दकुमार की नाक विराजे॥३१॥कान्हकूका म स्वरूप धरो पठये मनैा है सव अंगनटा ने॥मोही सवे व्रजकी वनिता घरनी तरुनी नई आईजे गौने॥भैाहें कमान सों भ्रकुट वान चलाइ लगाइकै कानन कोने॥वेधां नि कोरे मनवों हिय रामेलगे नंदलालके लायन लाेने॥३२॥आपने कां सदा सील भरी कोऊ वूझै तो तासों करे मन सैाहे॥ सज्जन काे सुख रास प्रकासही दुर्जन दा-

नव दाहक जोहैं ॥ मानिनि के मनकौ धौं जु
री सर नैननि मैन कमान मनोहैं ॥ वेदनिवी
च विचार यहै सदा सेइये नंद कुमार की
भौंहैं ॥ ३३ ॥ पैठि जवै सुख मा जल न्हान
कौ व्याकुल ह्वै विरहा नलडाढे ॥ जोराव
री जिनरँ चलि मनिहै व्रज नारिन के
मन गाढे ॥ श्री नंद नंदन जू के मनोहर का
नन कुंडल यों छवि वाढे ॥ वे ध्वज वाहम
नो मकर ध्वज राखि सुधारस कुंडल गाढे
३४ ॥ कान्ह की मूरति देखी हुती जिनते ।
सिंगार व्रज ऊपर जानौ ॥ कोहिन ध्यान ध
री निसि वासर भागनतें मनहू मन आनौ
ऐसी लसी नंद लाल के भाल मे कुंकुम
की अस नाइ वखानौ ॥ दिव्य उदै के समै भ
लकैयो विध भाग मे राग विराजत मानौ ॥
३५ ॥ लाग निरंतर जाहि वखानत हैं सिंग
रे निगमौ पचि हारे ॥ स्याम की सोभन रू
प कला कहं पावत कोटि अनंग विचारे ॥
आनन ऊपर मोर किरीट सुवार विराजत
घूंघुर वारे ॥ इंद्र के चाप समेत मनौ विधु
मंडल ऊपर वादर कारे ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ जे

रस उद्दी पित कौं लेउद्दीपन जानि॥ चंद्र चां
दिका लालित मलमु बिन्तै मैं चूर्तन॥ उदाहर
न॥ प्रफुलित बाग कुंज मल्लिका पराग पुं
ज लुपाई जौन्ह बोपसी चढाई उजराईमें
चिंतामनि कोहे ऐसी सोंधी मध्य मारुर्दमें
घन सारकी सघन गुन गाई में॥ ... ॥ दूध
कैसी धारा धोरी धरा में पसारी चंदन दुराई
कंदरप कुटिल कसाई में॥ भीर कु. निन्ना
को कैधौं मेरी मंद भागिनि कौ बातौ है लिहु
स या बसंत की जुन्हाई में॥ ३४॥ सवैया॥
वा मनि मंदिर की छवि छंद छपा परकी
छवि पुंजन पोल्यौ॥ पाइ कै रूप मनोहर
चांदनी चायलै मैन महा बल रोल्यौ॥ सुद
रि के मुख चंद को छोडि चकोरन चंद म
यूखन चोरयौ॥ चंद सिलानते नीर भरयो
सो सबै तियके विरहागिनि सोरयौ॥ ३५॥
कवित्त॥ लालन की सिलनि को लालित
पटाऊ लाल जटित दिवालनकी चौकी
चहू वोरकी॥ लाल वहु भूमिहै महल मंड
खंड लाल खंभन खुलनि छाँनि छदवि. मनो
रकी॥ चिंतामनि मानै सब मोरे मन पा

वेऽकानि सान मृदु घूघुरू मृदंग धन घोरकी
सुंदर रतन मय मंदिर सुदामिनि संग खेल
नि ललित लाल ललित किसोरकी॥५०॥ प्रा
तीप सद्दीप वर्त्तो यो उद्दीपन विभावको वि
वेक कियोहै॥दोहा॥आलंबन गुन इंगितो
अलंकार रसलीन॥पुनि तटस्थ चौथो कह्यो
उद्दीपन सवीन॥५१॥आलंबन गुन रूप अ
रु जोनादिक चित आनि॥बहुरि हाव भावा
दिये चेष्टा ताकी जानि॥५२॥नूपुर अंगद हा-
रइन आदि अलंकार देखि॥मलया निल
चंद्रादि ए सव तटस्थ अद्व रेखि॥५३॥यापर
हम यों कहत हैं॥*॥दोहा॥उद्दीपन के भाव
ए सुने काहू हम नाहिं॥चंद्र याना दिका वा
हैं समुझे नीके जाहिं॥५४॥आलंबन को गु
न मंमे आलंबन को कीन्ह॥लै उद्दीपन को वा
है कथन लगो यह नीच॥५५॥सौंदर्यो दिका
गुन रहित आलंबनै नहोंहू॥आलंबन गुन र
हित जो वरनि सको नहि कोनू॥५६॥चेष्टाला
की आकुती वरनेवो अनु भाव॥अव उद्दीपन
कहत हैं वैसो वुद्धि प्रभाव॥५७॥आलंबन
की अलं कृत है आलंबन माह॥ले उद्दीपन

हेतहै जो वरनत कवि नाद ॥४९॥ रस उद्दीप
न कैधौं कहै रस प्रधान है जानि ॥ जो आलंब
न मध्य है ते आलंबन मानि ॥ ५०॥ जे तट-
स्थ उन को है चंद्र बाग बन आदि ॥ ते उद्दीप
न कहि सबै है यह बात अनादि ॥ ५१॥ उ
दाहरण उद्दीपन ॥ कवित्त ॥ मधु मद माते मंजु
मंजरी रसाल भेद वार मधुर मधुकर वाला रस
चिंता मलि कहै फूल पाल निवाल तडत दं
खी महा राज आनि ललित लता वली ॥ कुं
जाले मै छाह घनि वाहली कदंबन की बिम
ल सुगंध जल नलिन नदी चली ॥ नव आ
भिषेक समै आपनी संपति सबलै रसा
ल कीन्ही रितु राज हू महा बली ॥ ५२॥ आ
न पास मंदिर वनै है दिव्य लखु वेदी चांदि
नाम चंदु देखी सुखमा हराई है ॥ चिंता म
नि मन्दिर मंदिर पति जातन की सकल दिस
नि मै सुगंध सर साइ है ॥ नहि पर मत मं
जु भोरन ए आमन मै गत वास कोकिल
न मधु सुर गाइ है ॥ आगम ऋतु राज को
निरखि मानो वन्दी जन ललित सुरन मङ्ग
नाई बजाई है ॥ ५३॥ इति श्री चिंतामनि क

॥ जाति कुल बाल्यु तरौ पञ्चमं प्रकारणं ॥

॥ दोहा ॥

तीत कारक अनु भाव गनि एकाटाक्ष देखा
रि ॥ मधुर आ देहा कहे सुहृदय सुखद
अनादि ॥ १ ॥ जेसुनि पाइ भावको प्रगटका
रै अनुयास ॥ ताहि कहत अनु भावहें स
ब कवि बुद्धि बिलास ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जोवन
सिंघासन मैं सुंदरि को रूप भूप पीतम
नैन जाके उप सर पनमैं ॥ चिंता मनि क
वि बिलोकनि मुस काइ पाइ होतहै मु
दित जैसे पित्र तरपन मैं ॥ सोहत बदन वा
ल घूंघट की ओट पिय कीन्हो तन मन
धन जाके अरपनमैं ॥ बिलसत मनो प्रतिबिंबि
त सरद चंद बिमल पदुम राग मनि दरप
न मै ॥ ३ ॥ लाल रंग कंचन किनारी दार सा
री तैसी नाककै नखत मुकतान की उजेरी
है ॥ बीजुत की छटासी छबीली की कद
नितैसी खिला मनि नील घन घटनकी घे
री है ॥ सोहि देखि मुरकि मधुर मुसक्याइ
नाइ कीन्हो चित चपल कटा छन की चे
री है वाके घेर घूमर ललित पदुलहगा

की मनोहर भुमत मैमुमत मनमोहै॥ ४॥ दोहा॥
स्वेद तंभ रोमांच कहि स्रुति सुर भंग बनाइ॥
बहुरि कांप वैवर्ण्य गनि ग्रासु अवलीना
इ॥ ५॥ आठ सात्विक ए कहत सज्जन बान
मन आनि॥ इनके हेत उदा हरन एक कवि
त मै मानि॥ ६॥ कवित्त॥ लोचन नि ल्पल
कौ प्रमोद जल कांप स्वेद सलिल अचल
तनु पुलक पसार्यौहै॥ पीत रंग भयो मुख
बैन निकरैन भैन हूं गति हरन करि खेल
यौं उघार्यौहै॥ देखत परस पर यहै गति भ
ई उनदेखा स्वरूप ध्येय आपनो बिचार्यौहै
वचन अगोचर जो परम आनंद नंद नंदन
सो वृषभान नंदनी निहार्यौहै॥ ७॥ सं
चारी भाव लक्षन॥ दोहा॥ जे विशेष ते था
इको अभिमुख रहै बनाइ॥ ते संचारी ब
रिणये कहत बडे कबि राइ॥ ८॥ रहत सदा
थिर भाव मे प्रगट होत इहि भांति॥ ज्यों
कल्लोल समुद्र मै यो संचारी जाति॥ ९॥
सो निर्वेद विस्मम्र जडता धीरज हर्ष
दैन्य उग्रता चिंतना सा ईर्षा है अपर्व॥ १०
गौरव सुमिरन मरन मद सुप्त नींद आसुदा

थाक्रीडा पत्त मार मोहमत आलस वेगो वोध ११॥काहि वितर्को अव हित्थ पुनि मिलि उन्माद वि आद॥उत कंठा अरु चपलता ती स काहे निर्वाद॥१२॥ए सिगरे सव रसनभेद न को कहे सुभाउ॥जोर समे नीको जुहैता को कहां वनाव॥१३॥तत्व ग्यान दुख ईरषा दिका नि: फलता ग्यान॥होत ग्लानि संसार ते सो निर्वेद वखान॥१४॥निर्वेद लछरण॥* साहित्यदर्पन मत॥दोहा॥तत्वग्या विपतीर षा विरहा दिक अपमान॥जहां कीजि यतु ग्यानसो तह निर्वेद वखान निर्वेद को उदा हरन॥१६॥कवित्त॥मिहिर मरी चिन मे मृग जलके सो अम सुखन मेतो यकै तरंगको ई गुहै॥छोडि सदा शुद्ध ग्यान आनंद परम पद वीर काहु काहू विसराम कोन अंगुहै॥चिंता मनि कहे कहो कोन सो सनेह कीजे सवही सो घाट वाट हाटके सो संगु है॥नीको हैतो काहू परनाम सव फीको होत तन धन जोव न कुसुम केसो रंगु है॥१७॥मानि जो परमार थ चातुरी की चरचा ही भयो चितु चैन चहे कनाकी विना काज की वातनको विन काज

को काहे को कीजै हाहा॥ परमेश्वर तेो ... वं
कान सों परतीति सों प्रीति भई जु महा॥
अब ता पर विद्या जो और कछु जु सिखी
तौ सिखी न सिखी तो कहा॥१८॥ आजु का
हा मनि रूठि सी बैठी हौ क्यौं अति ... त
सासन ली जतु॥ मोसों कछु अपराध प
र्यो कंत अंचल लोचन के जल सींचतु
॥*। *॥ क्यौं तुमसौ अपराध परे पियक्यौं
तुम ऊपर रोसु है कीजतु॥ ऐसी ... है
यो सबको मन मोहन जू तुम्है दीजतु ...
जतु॥१९॥ दोहा॥ रत्या दिवा ते होतु जा
हु जो निवलिता जानि॥ वे वनी दिन
सों वाहू वहुरि ...॥ ...जानि॥२०॥ म
ग पग मंद गयंद गति धरति ... च
मार॥ छकि अभग रति रंग के ...
ग सुकुमार॥२१॥ कोनो के ...
रवनि कुराई हेत॥ जो मन मैं ...
...का काहे सचेत॥२२॥ ...
न॥ सवैया॥ जाने बिना ...
हु जानि रहै मुह नाइ लजानी॥ ...
हू कछु बात कहै समुझै सब ...

पै कहानी कोहू हसै जो सखी जनतो गाडि जाति सकोचन बाल अयानी॥ स्याम ति हारे सनेह रहे मृग लोचनी सोच संकोच समानी॥२३॥ स्त्रमको उदाहरन॥ सवैया॥ रति अंतकाछू अल साइ उठी तकि यामै तिया करि एक दिये॥ मनि वनी है पीठ प री विथुरी अपने कर हूसरी वा मलिये॥ भालके श्रम विंदु छुटी अलकै विह सोहैं से गोल कपोल किये॥ अब वेउप जावत लोचन को सकुचोहें सलोचन आनहिये॥ २४॥ धैर्यको लछन॥ दोहा॥ ज्ञान रूका आदि कनते जो संतोष घूत मानि॥ निज अहष्ट परि पाक भो व्यग्र चित्त यहि चानि॥ २५॥ धैर्यको उदाहरन॥ कवित्त॥ पूरव कारम वस भ्रमत है भूलत मे पूरब जनम जो दियो है सोई पायहे॥ तिनसों महीप काऊ काहे को गुमान करै चिंता मनि जिनके सहज चित्त चाहहे॥ कोसद सबीस को नरेस वि सरायो कहा होत विस राये परमेस्वर सहा यहै॥ सबके सदाही साथ अनाथन के ना थ हमै काहा दीन बंधु विश्व नाथ बिसरा

यह ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सकल आचरन ज्ञानको अहमनो जिहँ होइ ॥ प्रिय अप्रिय देखे तु लै जड़ता कहिये सोइ ॥ २७ ॥ जड़ता कोउ दा हरन ॥ दोहा ॥ अन मिख लोचन देखिवो चुप रहिवो इत्यादि ॥ होत काज वरनत रहत यों सब सुकवि अनादि ॥ २८ ॥ अन मिख लोचन व्है रही हली चली नहिं चा ल ॥ चित्र पूतरी कीहि ज्यों अप ल्याल ल ॥ २९ ॥ इष्ट वस्तु पाए हरख मन पूजा इ जो होइ ॥ आंसु स्वेद गद गद वचन वरन तहै सब कोइ ॥ ३० ॥ सवैया ॥ यों मन देवी विरह रति ह्वै मधुमै अब होत वंयोगी अ गसों ॥ पीउ अचानक आइ गयो सु गयो व गयो सिगरो दुख अंगसों ॥ वारिज मो जन पूरन ऐसो भयो घट मेरो अनंद तरंगसों पूर उमंग भगी रथके लप जैसे गिरीं द्र ड्ल गंगसों ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ जो दारिद विरहा दिते होइ मलिन ता कोइ ॥ चिंता अलिसा दि करि होत दीनता सोइ ॥ ३१ ॥ तापत नहीं तपत हो जग मै पाप प्रदान ॥ अब द्रया सुदीन पै कीजतु दया नदान ॥ ३२ ॥ द

सरो उदा हरन ॥सवैया॥मोहके वोसन नांह विदेसन चाहि संदेसपाती पठाई॥सोच तिराति सवे पलक्यौ पलको नभरै सुत हाई॥ वैठति नारि जहां सुकुमारि है लोचन वारिन आंखि लगाई॥सांई मिले मनो यापलको मनि वैठिहै आंसुन की जल साई॥ ३३॥दोहा॥काछु अपराध लखे जहां रोस चंड उत होइ॥तर्ज नादि कारन जहां हेइ उगनता सोइ॥३३॥राम सील जग तापहर सीतल सुखद अपार॥एकसंन के संहरको अनल भयो इक वार॥३५॥चिंताकहि यत ध्यानहे सून्य तादि जित होइ॥आसर स्वासिता पतित वरनत हैं सव कोइ॥३६ चिंताको उदा हरन॥कवित्त॥संधति है मानो मुकता हलको हार वह चारु नीर नैननि रकौ धार यों दरतिहै॥अरुन अधर कहिका है को दुखित कोरे कौन हेत आजु ऊंची सासन भरतिहै॥अचल व्है रही केलि मंदिरमें चिंता मनि सघन वदन चंद्र चंद्रिका परतिहै॥वैठी कात आजु कर कमल कपोल धरि ध्यानतू कमल नैनी कौनको करतिहै

३७॥ दोहा॥ कछु उपाइ कोपादि का उपजत
भय जो चित्त॥ ताही सों खंडित कहत ना
म जानिये मित्त॥ ३८॥ सवैया॥ मानवती
को मनाइ रह्यौ वह चंदमुखी त्रिय कैहू न मा
नी॥ एते मैं आइ गई पुरवाई लगी वरही
गन वोलनि वानी॥ ऐसे समै आइ उमंडि
अचानक कारी घटा घनकी घहरानी॥
चौंकि परी चपला चमकै चलिकै पति
की छतियां लपटानी॥ ३९॥ दोहा॥ जान
सृद्धि पर गुनन की उत्तम सही न जाइ॥ सु
भंगा दिक ईरषा वरनी वुद्धि वनाइ॥ ४०॥
कान्ह काह्यौ देखी न कहुं राधा की अनुहा
रि॥ कह्यौ सत्यभामा सुनी राधा गोरी ना
रि॥ ४१॥ श्रम रख अपमानादि ते चित्त च
चलित जानि॥ लेन राग सिर कंप अगत
जे नादि कर मानि॥ ४२॥ कवित्त॥ वोल्यौ
हनूमान रावन सो सकल सुरासुर सिद्धन
आगे॥ जंगम अनय रच्छरच्छ मत वचन
काहो कहां कपिकुलसे भागे॥ कुज साघ
न चदि सुडपक्क फल तोरत पुरवर म
भति जागे॥ पाइ रुधिर वल देउ भैरवन

भर भाव भरसो अनुरागे॥ ५३॥ गर्वलक्ष
ण॥ दोहा॥ विद्या द्रव्य प्रभाव कुल रूप
अहं कृत गर्व॥ होत अन्य अप मान का
जामे चेष्टा सर्व॥ ५४॥ क०॥ मेरी आखें देखें
... ... नाना गर काहा को मृग नैनीक
है ताको काहा काहनो॥ फिरि जनि काहो का
हू प्यारे ... रहौ हमें चंद मुखी काहे दे
खो चंद्रमा को लहनो॥ जानु हूं न जातका
हू ... लोने गात पर मोहि पिय सोनेको
... किन गहनो॥ ५५॥ दोहा॥ सहस
... ... भू ... ... जित होइ
... सुख अर्थ को स्मृत काहियत है
सोइ॥ ५६॥ चिंता मनि घन स्याम मे यो ...
वि घटा उमंग॥ सुमिरन ... कादंब को ...
... सुन्त मद ... ॥ ५७॥ सवैया॥ मोही
है ... गुपाल लखे ब्रजबालकी ... कान भे
... पावे॥ बोलन बोल ... सो लखे मनि
... को ... ही यों अनुलावे॥ ... अंग
कादंब काली मनमें घन स्याम की यों छवि
छावे॥ साखति मंद कपोल हंसी उमगी ग
... अखियां भरि आवे॥ ५८॥ मत्त ल

हरणा॥दोहा॥प्रान प्यारो प्रोषित करन लै
तौ प्रगट जान नाहिं॥संकासा हिय हेलि
कै और बरन बैनाहिं॥१६९॥जो नइ थार
हू वीनि यै तौ ताकौ उद्दीपन॥श्रृंगारादि पूर्व
धरै मार नन वर लन [illegible]॥५०॥कवित्त॥
दुरि धर प्रबल विरह दल जुपभूति नौर
भास वारवैकाम चोर दलहैं॥एक [illegible]
दुरि धर मारौ कोप कर अंबर मैं जाइ [illegible]
अंबर चंचलहैं॥औरवाल लवातन पाव [illegible]
कू मान तन प्रलवै प्रवल भए [illegible]
चलहैं॥भ्रूलति से परे सुन स्यंदन [illegible]
सेना साथ दुर धर कू मिलाए सखी [illegible]
५१॥महलहरण॥दोहा॥धन विद्या [illegible]
व आसव जोबन जात॥*॥उपजात हैं
मद भावतित चाहति अलस मान वात॥
५२॥मदको उदा हरन॥दोहा॥रूप छकी
जोवन छकी मदन छकी मृदु वानि॥प्रेम
छकी आसव छकी [illegible] छावति छवि स्वा
नि॥५३॥आन नैन गति लटकि [illegible]
त लट बलि हार॥छकी छबीली नारि
रि आसव छकी निहारि॥५४॥स्वप्न लच्छ

ग॥ दोहा॥ स्वप्न नींद अरु अर्थको अनुभव जो कछु होइ॥ सुखदुःखा दिक हेतुयुत स्वप्न कहावै सोइ॥ ५५॥ प्यो आयो परदेसते सुनि सपने कीवात॥ पति आगम प्रतिबिंब सखि साचु भयो वह प्रात॥ ५६॥ सपन संग जागि दुख उठै पिय आगमन निहारि॥ सखी कलप तरु वाग ह्वै बीच अरन्य उजारि॥ ५७॥ मन सं मीलन नादकहि श्रमा दिकनितेहोइ॥ स्वासा दिक तहं देखिये सब इंद्रिय लय होय॥ ५८॥ सवैया॥ मांगते छूटी ललाट लटै लसे लर मोतिन की लटकी चट वीली॥ वेसरि की मुकता झल डोलत यों मनि प्रा सन लेति रगीली ढीली भुजा करि पीठि छुवै लपटाइ रही रति अंतर सीली॥ सोई अजो छतियां हेलगी सइ ज्यों छतिया मन माह छवीली॥ ५९॥ दोहा॥ निंदा को अवसान जो सो विवोध मन आनि॥ दृग मर दन अंग राइ अरु जंभा दिक इत जानि॥ ६०॥ उघरत तियदृग जुगल छवि निरखत नंद कुमार॥ खुलत जलज जुग जागि जनु चुल वुलात अ

लिचार॥६१॥लज्जाकोलक्षण॥दो०॥ढानिकि
ढाई कीजुहै सोलज्जा मनि आनि॥मुग्ध
ना बलि आदिका वाछू होति तहां है वा
नि॥६२॥वैठी पिय पट मैं लगी लीन्हों अ
ली उनारि॥वूडि गई अब लोविहत सवु
च सिंधु सकु मारि॥६३॥जो ब्रह्मादि आ
थै समय दुख वादिक ते होन॥अप स्मान
भूपात तित पोन सोन अधिवान॥६४॥
मोह लक्षण॥दोहा॥मोह वाहत है नांह
कों जहां ज्ञान मिटि जात॥विमल दुख
चिंतानि ते जहं अनि विह वल गात॥६५
खान पान परधान सव ज्ञानविसारयो वा
ल॥यों माही तुम कों निरखि तुम निरमोही
लाल॥६६॥मति लक्षण॥दोहा॥नीदपं
थ अनु सारहै आदि अरथ निर धारि॥
मति ताते काछू हास्य रस अरु संतोष अ
पार॥६७॥विना प्रयो जन मित्र जो सोहोमि
त्र वखानि॥मित्र प्रयोजन तेजुहै मनौ मि
त्र जिय मानि॥६८॥विन मतलव को
यार जो तासों कीज्यो प्यार॥मतलवलोंया री या
रै काहा मतलवी यार॥६९॥निराटिक

मे हैं।नहिडज ऋालस श्रंग राइ॥नैन ग्रंथ
नकूलो भाँति यह वरनन सवकविराइ॥७०॥
ऋालसको उदाहरन॥कवित्त॥ टूटे हारमि
हैं सिंगार सव अंगनि पे कोटिन सिंगा
र की अंग माल वानकी॥चिंता मनि
कहै अहो कापै कहि जात गोरेइंदु सोव
दन पर आभा अल वानकी॥गुरजनि२
लखिवैहि अगो छले सलोनी यह लागी पी
की ललित कपोल पल वानकी॥रतिर
ति रंग पति संग लाज खुली वोली खुली२
छवि आजु ग्रंथ खुली पल कनकी॥७१॥
दोहा॥काज माह उद्योग जो मंदसु आल
स जानि॥यह आलस लछन गए विद्या
नाथ वखानि॥७२॥औरवरे को काम न
नु कामहु सिथिल जुवाम॥जो करिवे पि
य संग सो प्रवल करावत काम॥७३॥दूर
निरा दिकानते संभ्रम अप्रस्मिक होइ॥ता
ही सो आव सकवि वरनत ग्रंथनलोइ॥
७४॥आवेसको उदाहरन॥सवैया॥ब्बी वृष भा
न कुमरि के संग मे केलि रची हरिजू जमु
ना तट॥दंपति कुंज के मंदिर मे वदलीव

नमाल वनीमुकता छूट ॥ भूखन वास गि
रे रति रंगमें पायौत्यौं काहू के बोल को
आहट ॥ आकुल ह्वै हरि मैंन्चक अंबर
राधिका वोढि लियौ पियरो पट ॥७५॥
चिंताको उदा हरन ॥ दोहा ॥ मिलन गई
कुलकान वन मिले मुई यह कालि ॥ नि
रखि तुम्हे नंदलाल जो सोचति है वह सा
ल ॥७६॥ वितर्कः लक्षणः ॥ दोहा ॥ जो
विचार संदेहते सो वितर्क यह जानि ॥ सि
र भंगुन तेनहै जहां चिंता मनि मन आ
नि ॥७७॥ संगो पन आकार को सो अव
हित्थ वषानि ॥ प्रस्तुति तजि कछु और
को कवि कोकथन स्वानि ॥ ७८ ॥ जान
त लोका अलि न लागि कोन लालए को
न ॥ दोऊ एकै ह्वै गए कहा मोनही मौन
७९ ॥ व्याधि वियोगा दिवान ते रुसता
दिक निरधारि ॥ कंप ताप भूपात दृत २
आदिक यों जु निहारि ॥८०॥ सवैया ॥
काहू की वात सुनैन न वाढ्यु नवा है कहा
चित्तके वीच विचारै ॥ नैननि नीर भि
रासें भिरैकछु अंगन हूं की नवानि नं-

भोरे ॥ गाल लगो बिरहा नल मख्खन भोज न भूखन भोन बिसारे ॥ सुंदर ऐसे भए नैद नंदन बारकसी मुख चंद निहारे ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ मनके भ्रम उनमाद कहि बाम भया दिकजात ॥ बिन कारन रोदन हसन काये अनर्थक बात ॥ ८२ ॥ उछलति रोवति लखि रहति हसत कहति गोपाल या ऊपर अब और कछु होन होइ नंद लाल ॥ ८३ ॥ जहां उपाय अभाव ते होइ चित्त को भंग ॥ सो विषाद लछ्छन सुकत बहुत तापके संग ॥ ८४ ॥ सवैया ॥ मोहि कछू नहि सूझि परे हग देखत हू दिन होति अंध्यारी ॥ कैसे बचौं बृहि आगम ... चहुं ओर लगी निसि चंद उज्यारी ॥ ... उपाइ चलै न कछू बिरहा गिनि ... आधि बढ़े अति न्यारी ॥ होइ हों कौन ... उपाइ रचौं यह जानै को प्रेम की पीर पियारी ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ तरुनि बदन बिधु ... निसि आगम लखि अधिकात ॥ प्रात होत पति संग ते छूटत छबि छुटि ... ॥ ८५ ॥ उत्कंठा लच्छन ॥ दोहा ॥ अ

भि कवित्त श्थ लाभ में नाहिं विरुद्ध लखि जाइ ॥ उत्कंठा यामें कछु ग्याकुलता ग्र थिकाइ ॥ ६६ ॥ दुल हिनको हिय वन्त वरमें कृत उत जात ॥ ज्यों ज्यों होइ वि लंब ग्रति त्यों त्यों ग्रति ग्रकुलात ॥ ८७ ॥ रोमा दिवारे होत है थिरता कछु जाता ॥ स्वछंदा रचनादि को है चापल्य निदान ॥ ग्राबति दिग ग्रबतिन तन हसत हगन निमषि छरका पल ग्रति मद छकी छकी छवी लो लागि कुलिग्री चिंतामनि हिरचिते कविकुलतरोपस सहस दोहा ॥ भाव हाव माधुर्य वहु हेला धैर्य वखानि ॥ लीला ग्रौर विलास कहि पुनि विछित जोमानि ॥ ९ ॥ विभ्रम किल किंचि त कहौ मुद्दा यत पुनि ग्रानि ॥ वहुरि कु टुंवित वरीयि पुनि विवोक वखानि ॥ ललित कुतहल चकित गन समुझि विहत ग्रमस हास ॥ चेष्टा ग्रष्टा दस गनी या श्रृंगार प्रकास ॥ ३ ॥ जो कुनीप कान्हों यके साहित दर्पन माह ॥ दस स्वरूप तन काम कहे विस्व नाप कवि नाह ॥ ४ ॥ जो वनमें सत्वज कहत ग्रलं कार न ग्रंग ।

इस रूपका मै तिन कहि सुनहु सुकविसमु
देस॥ ५॥ साहित्य दर्पन मे कहे आठ औ
र अधि काइ। विस्व नाथ सत कवि कह
त ते अव सुनहु वनाइ॥ ६॥ भाव हाव
हेला प्रथम तीनौ एवै जानि॥ सोभा कां
ति कही वहुरि दीपति और वखानि॥ ७॥
पुनि माधुर्य प्रगल्भता औदा रज गनि
और॥ धीर्य सांत अज नाम यह कहत
सुकवि सिर मौर॥ ८॥ लीला और वि
लास कहि पुनि विछित्ति व ानि॥ वि
भ्रम किल किंचित वहुरि मुट्टायत पुनि
जानि॥ ९॥ वहुरि कुट्ट मित वरनिये पु
नि विवोक विचारि॥ चिता मनि कविक
हत यो लछन लेहु विचारि॥ १०॥ ललि
त विहत दस ए कहे ए दस रूपका माह॥
आठ और वरने उसे विश्व नाथ कविना
ह॥ ११॥ तपन मुग्ध विछेप पुनि वहुरि कु
तूहल मान॥ हसित चकित अरु केलि
पुनि अष्टा दस ए जानि॥ १२॥ इत प्रता
प सुदीपके कहे अठा रह भेद॥ तिनके
लछन उदा हरन वरनत सवे अखेद १३

है सब जोबन संधिमें मनके दशा विका
र ॥ भाव वरन यों कहत हैं विद्या नाथ प्र
कार ॥ १४ ॥ कोकिल कूक सुने उमगो म
न्य पीछे लिष्यो है ॥ दोहा ॥ भ्रू नेत्रादि
वि कारजो कछु उपजै मन माहि ॥ कछु
सलष्य विकार वह भाव हाव है जांहि ॥
१५ ॥ हों निकस्यो दिग है सुयों अंगन पु
लक जनाइ ॥ * ॥ हेरि तिहारे दृगन सों
चली वाल मुसक्याइ ॥ १६ ॥ जहां देह
दृग भौंह मुख इंगित अति अधि कात ॥
अधिक प्रगट मन भावते हेला सो क
हि जात ॥ १७ ॥ सवैया ॥ कारसों कार जोरिके
आनन इंदु कोवहु लता पर वेख कंरै ॥
[illegible] अंग दिखाइ दुरे मन मोहन
को मुसकाइ हरे ॥ मृग लोचनी नैन वि
लासनि सों पियके हिय भीतर मोद भरे
मन मोहन मोहन भाव नदी सों वुलावै नि
सा सिनि कुंज परे ॥ १८ ॥ दोहा ॥ विना वि
भू षन मधुरता सो माधुर्य वखानि ॥ स
काल अवस्था मै सदा लसै छाँवन को खा
नि ॥ १९ ॥ कवित्त ॥ ओठमनो रवि विंव प

कैां मनो दामिनि दीपति अंग लिहारे ॥ *
वार वडे वडे नैन लसैं मनो अंबुज पातनि
भोर सुधारे ॥ पून्यो निसाके कहा नखता वलि
मैं मन मैं यों विचार विचारे ॥ ए अकलंक
मयंक मुखी तेरे अंग विना ही सिंगार सिं
गारे ॥ २० ॥ थम लक्षण ॥ दोहा ॥ कुला लिल
दिक भावन सो धीरज मन आनि ॥ पिय
को जो अनु करन सो लीला नाम वखानि
२१ ॥ कवित्त ॥ पीरी पीरी होति लागे सुर सुर
भिव यारि सीरी पीरी चंदका हू पे अन्चल
चित राखे जू ॥ चिंता मनि कहे मोहि लाल
मात व्याहि देइ देवतानि सेइ एही वात अ
भिलाखे जू ॥ लाल पान छाडे निज देह जस
म्हारे वह काहू सो वात निज मनकी न
भाखे जू ॥ ऐसो हाल करि वह विरह वि
हाल लाल केहू कुल वाल कुल कान पै
नेनाखे जू ॥ २२ ॥ लीला को उदा हरन ॥ *
कवित्त ॥ सांवरे स्वरूप मै मगन मन मृगनै
नी मृग मद अंग राग अंगमे धरति है ॥ २
वरह मुकुट धरि तन पीत पटकासि ललि
त लकुट हाथ हिरा हरति है ॥ चखि च्वं

द मुखी मंद समद गयंद गतिमोदनि कौ काह मन मोदनि भरति है॥ छबिनि की खानि पे म छबि यौं छबीली कान्ह राधिका तिहा रो अनुकरन करति है॥ ४३॥ दोहा॥ यौं ही अभरन नाहिं अधिक रस्यता होइ॥ सो विहित बखानि ये कहत सुकवि सब कोइ ४४॥ काहे को भूखन धरति सुरूप मृदुल बपु माहि॥ नायक नायका प्रीति सब ए की नाक सुकत नाहि॥ ४५॥ विलास लछण॥ दोहा॥ पिय को देखत अंगमे इंगित जो क छु होइ॥ तत कालिक सु विलास लखि वर नत हैं सब कोइ॥ ४६॥ ललिता जू लोलनि ल पर परे आन्ना नवा नेन॥ निस लग ह्वै कुच लो अवलि सर वर लै कनु लैन॥ ४७॥ प्रगटी नाज भए चपल अंचल हलन हम्॥ मंद रि मनि सो पानि मग उतरो रूप उदार॥ ४८ कबित॥ आनु अब लोकी सवा अलबेली बाल कुह मी तलमै आवत उरवसी बिल स तिहै॥ जाकी वा छबीली की बदन मयंक छ वि लोचन चकोरन को सुधा बरसनि है॥ भौ ने पट ओटकी करनि ताको भेदिकरि कौं

सी चारु चंद्रिका बाहिर निकसीत है ॥ मृग
लोचनी की वह काछु अचानक हंसिहेरि
बौ मूरति मेरे मनमें बसति है ॥ २९ ॥ विभ्र
म लक्षण ॥ दोहा ॥ आनदअंग आभार कौ
अंग अंग आवेस ॥ त्वरित समै विभ्रमय
है बरनत सुकवि सुरेस ॥ ३० ॥ सवैया ॥ देख
त कौन हंसे अवलोकिथौं आली काहा य
ह वेख कियो है ॥ कोकरि है कित जायो च
है मन मोहि गयो इहि भांति हियो है ॥
नूपुर हाथन पाइन मैं पहुंची कटि हार
लपेट लियो है ॥ तेरे काहा उर नैन महा उ
र अंजन ओठन बीच दियो है ॥ ३१ ॥ दोहा
क्रोध आसु अरु हास भय आदिक जहं
इक बार ॥ किलि किंचित तासों कहत स
व कवि बुद्धि विचार ॥ ३२ ॥ कवित्त ॥ दंपति
अनूप वैस सुरति आरंभ समै ते दोऊ रस
रीति मैन सर सति है ॥ तरुन चढ़ाइ त्योरी
भूठे भिभि कोर कंप मानि मन छतिया
की छुवनि सुहाति है ॥ वहिया गहत पिय मा
न तिन प्यारी भारी कोपते निहारि टेढ़े
नैनन कारति है ॥ * ॥ नाहिं यां करति नीवी र

खोलति नवेली बाल रोवति निसानि यह
माहि मुख बथातिहै॥ ३३॥ दोहा॥ कहै पि
यकी बातें सुनति भाव पुरुष विन होइ॥
ताहि सुइ मिल वाहत हैं थों वरनत कवि
लोइ॥ ३४॥ सवैया॥ काहूको रुपको पांये
नवे विधि कोटि अनंग गन कोप विलासे
मैमे वाल्यो सुनि कौउत जैसी भई वह वे
सीव आपु निहारे॥ रोम उठे दुवा देह सो
नीर सो कीन्हो वह मन सोह विहारे॥ तो
हि बाढे मन मोहन जू मन मोहन मोहन
मंत्र निहारे॥ ३५॥ दोहा॥ पिय कर तन म
रदनहु मन सुख पावे वर नारि॥ पिगि दृ
ग सिर कंपन करे सो कुट्ट मित्त विचारि॥
३६॥ कुट्ट मित को उदा हरन॥ सवैया॥ का
छु देखति चित्रहु त्यो जितमे तिन अंक
अकेलि ये ठाढी भई॥ विह मोहे
से ताभिसो मनको मनि प्रीति मई
कुच गाढे गह्यो कर जोचकने
कारत हाथ अनूप भई॥ हिय पीरि
य पीर जनाइ कछु सिसको मुसक्याइ न
ई॥ ३७॥ दोहा॥ रुठहु को अप मान जानि

रै गरव गाहि नारि ताही को विवोक तहं वर
नत सुकवि विचारि ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ बस
उठौ लोगै दीठ भये लगे चोरन जो अखि
यांन हटाई ॥ मोसों सुनौ दुहुं वंसकी प्री
ति सुलागति वंसकी रीति मिठाई ॥ मा
खनकीन मिठाई भयो सुख लागे जुमा
गन अोठ मिठाई ॥ रेसुनु ढोटा जसो म
तिके अब छोडिदे आजुते दीठ दिठाई
३९ ॥ दोहा ॥ ललित अंग विन्यास जो
ललित कहावै सोइ ॥ चिंता मनि कवि
कहत यों सुनो सुकवि सब कोइ ॥ ४० ॥
कवित्त ॥ रासको बिलास देखि चिंताम
नि धुनि सुनि मेखला की भनक नूपुर
विछियानकी ॥ चंद मुखी चंद्रिका पसा
री आलि अवनि मैं देखत जो धन्य दसा
ताहिके त्रियनकी ॥ तुम्हैं देखि प्यारी ऐ
सी मनाज भई है जाते दरवि गई है त
नी अगीया सियनिकी ॥ देखो लाल ल
लित छबीली ऐसी नीकी चली आव
ति कछु पीकी करै लीपति हियनकी ४१
सुत हल स्व... ॥ दोहा ॥ बच्च बसुकेल

खन को जो चंचलता होइ॥ताहि कुतह
ल बरणिये यो बरनत सब कोइ॥ ५३॥ ✻
कवित्त॥ बाजे जब बाजे महा मधुर नगार
बीच धुनि सुनि नगारे की भलकावे अकु
लाई है॥ पौली मह लानि मनि मेखला भा
नक संग महा सनि नूपुर निना दनकौं
भाई है॥ मीठे मीठे सुरनि जो बोलति मृगानैनी
तहां मुखते निकसि गंध इत उत छाई
है॥ ✻॥ पहिले उज्यासन जो भूखन मयूखन
की पाछेते मयंक मुखी देखन को आई
है॥ ५३॥ दोहा॥ पीतम को आये कछू भ
य संभ्रम जो होइ॥ चिंता मनि तासों चकि
त बरनत हैं सब कोइ॥ ५४॥ तिय संगम
भ अचानका गरुड वाह का गाहि॥ स
खी चकित अतिही भई अंचल लोचन
न चाहि॥ ५५॥ बोलन हूके समय मैं लाज
न बोलन देइ॥ विहृत बाहत हैं ताहिसों
चिंता मनि गुर सेइ॥ ५६॥ सवैया॥ पग
भूमि लखे वह ठाठी ही द्वार बिलोवति मा
ह हिये उलही॥ विह सौहैं से गोल कपो
ल किये सो सकोचन लोचन नाइ रही

उपसौ अधर लगि बोल कछू पर आयो नवौ
ल यौं लाज गही॥ सुधि आवत ही बासवै छ
लिया जो कछू बतियाबोतिया नकाही॥ ४७
दोहा॥ जोवन को आगम समै छिन छिन जाहि
जो हास॥ हंसति नाम सो तियन को लसत अ
नूप विलास॥ ४८॥ उवन चहत जो दुन ससी
प्रगटौ हास प्रकास॥ लो नीके आयो भाल
कि नैननि ललित विलास॥ ४९॥ रूप भो
गता प्रुग्यते सोभा अंग सिंगारि॥ मनमथ
उत्थापित सुतौ कांति कहति निरधारि॥ ५०॥
कांतिहु को विस्तार वो सो दीपति पहिचा
नि॥ चिंता मनि कवि कहत है रस ग्रंथन को
जानि॥ ५१॥ सोभा कांति दीप्ति प्रुमा धुर्य को
उदा हरन॥ कवित्त॥ बैसकी उठौन ठौन रूप
की अनूप कान्ह अंग अंग औरै कछू वो
प उल हतिहै॥ चिंता मनि चंचला विलास
वो रसाल नैन मदन के मद और आभा उ
म हतिहै॥ कुंदन की वेली सी नवेली अ
लवेली बाल कोतिक गरव की सो गोरता
गहतिहै॥ उझकि झरोखे तुम्हे चाहिवे को चं
द मुखी घोसहू मे चांदूका पसारति रहतिहै

पु॥ संभ्र॥ संभ्रम को साहित [illegible]
गलब लोनि॥ निहिता भनि [illegible]
सुवा विलैहू पहि [illegible]॥ [illegible]
[illegible] नाह को [illegible] गद [illegible]
कुंतल जो तिथा [illegible]
[illegible] तिलैको [illegible]
ताकौ हेत उक्त [illegible]
हु॥ ५९॥ विहू [illegible]
खलि हो पु॥ [illegible]
कारतिक री [illegible]॥ ५९॥ उद्देस्ता [illegible]
के भेद तिन को उक्त हरत [illegible]
खो विरह ते [illegible]
हल हैं ताहि सो [illegible]
सवैया॥ वामनि संदर को छवि छंद छपा
कर की छवि कुंजन पोख्यौ॥ पाइके स्व
त मनो हर चाँदनी चाहुंल मैंन महा दल पे
ख्यौ॥ सुंदरि के मुख चंद को छोडि चकोर
न चंद मयूखन चोख्यौ॥ चंद्र किरनि ने
नीर भखौ सवै लिय के विरहा गिनि सो
ख्यौ॥ ५० ॥ दोहा॥ [illegible] को [illegible]
रहै जहां नहि [illegible]॥ उपजे विद्रुप [illegible]

र नत सुकवि सुजान ॥ ५९ ॥ सवैया ॥ लो
ग लखै नंद लाल विलोकत वाल कहा
यह हाल भई है ॥ तोहि विलोकत मोहि
कहा दुख मोहि कहा इहि भांति गई है ॥
आनि धरी ढिग मै गगरी अपनी कत
रा यह छोडि दई है ॥ ताहि कहा मयो मै
री अरी नगरी सिर छूछी उठाइ लई है
६० ॥ लद को उदा हरन देखाये है संचारी भा
वन मै सोई जानवो ॥ दोहा ॥ तासो कहियत
मुग्धता कवि जन मनमै आनि ॥ जहां पी
व सों जानि तिय कहै आपनी वानि ॥ ६१
सवैया ॥ ह्वां इनको विवहार लख्यो मोहि
मंडल और प्रवीन कहाती ॥ ह्वां उते उजर
है वो सखे कहै बात सखी इन्है कौन स-
काती ॥ कौन फले विटपी मुकता फल
बोलो कहा कहि यों मुसकाती ॥ जावे जबै
पियके निकटै तवहीं सब दूजो अजान
ह्वै जाती ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ नायक के संग खे
लिवो केलि कहावे सोइ ॥ विस्व नाथ को
मत कहत समभा लेहु सब कोइ ॥ ६३ ॥
भूखति नभ दामिनि वधू जलद भए दूज

राज॥ कान्ह कुंवर की बनी श्री काका कृती छवि भ्राज॥ ९४॥ इति श्री चिंता मनि विरचिते कवि कुल कल्प तरौ सप्तमं॥

प्रकार रास

दोहा॥ जामें थाई रति सुनौ मलकी रसाल अनूप॥ चिंता मनि कवि कहत हैं सो सृंगार सरूप॥ १॥ सुनौ रचा संजोग है विप्र लंभ कहि और॥ द्विविधि होत सृंगार यौं बरनत कवि सिर मौर॥ २॥ जहां दंपती प्रीतिसों विलसत रचत विहार॥ चिंता मनि कवि कहत है यों संजोग सिंगार ३ शृंगारको उदा हरन॥ कवित्त॥ कांचन की सा कारन संजुत ललित मंच नग जडितन मैं उलहै मरीचवर॥ बैठी प्रान प्यारी सं ग राधा सुकुमारी जाके चिंता मनि अं गन विलास है अनंग सर॥ कोऊ मृगनै नी लिये हाथ मैं चमर चारु काहू बोऊ रासा रजे पानन कोड़ का कार॥ निरमल मनि मय महल मैं खेले चंद्र वदनी झु लावे लाल झूलत हिंडोले पर॥ ४॥ तीसरो उदा हरन॥ सवैया॥ चंद्रिका सौ

थकियो सिगरो जगसोध्यवो ऊपर दंपति सोहैं ॥ दूधके फेनसी सेजके ऊपर रूप अनूप प्रभा मन मोहैं ॥ ह्वां पिय प्यारीके चारु भुरे दृग दूव दुंहूही सखी जन जोहैं ॥ स्याम भयो ससि देखि मनो हिय द्वै मनि पंक जुरे दृत कोहैं ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ चैतकी चांदनी के थो चंद अवलोकनिते छीरनिधिछिरको पूरन पूर उमगो चिंतामनि वाहै मन आनद मगन ह्वैकें विह्वल दंपती परम प्रेम सों पगे ॥ अध खुली अंखियां सुरति सुखरस वस मानो भोर अध खुले कमल न मैं खरे प्यारीके सकल तन श्रम जल विंदु सोहैं कनक लता मैं मुकता फल मानो लगे ॥ ७ ॥ चुंवन आलिंगन हिदे आदि विविधि विधि भोग ॥ चिंतामनि शृंगार मै सो रचो संजोग ॥ ८ ॥ जहां मिले नाहै नारि अरु पुरुष कछु वरन वियोग ॥ विप्रलंभ यह नाम कहि वरनत सब कवि लोग ॥ ९ ॥ विप्रलंभको साधारन उदाहरन ॥ ज्यौं ज्यौं जलु डारत जलद त्यौंत्यौं जारत जागि ॥ सम उपाय विरहिन विरह यह पानी की आगि ॥ १० ॥

दोहा॥सो पूरब अनुराग अरु मान प्रवास
बखानि॥पुनि कहियै करुनात्मक [illegible]
हु मन आनि॥१२॥होइ मिलन तें प्रथम जो
सो पूरब अनुराग॥यामैं दस हू होत सब
त न भाखि दसा विभाग॥१३॥पूर्व अनुरा-
ग की दश दसा॥दोहा॥लखन सुधा सी
लव लगी सब जात है जौ आनि॥चिंतवि
ता मिलिबौ भई यह सुधि कौ गुनख्यान॥
१४॥प्रेम प्रीति अभिलाष की पुनि मन मं
गन जानि॥पुनि संकल्प बखानि कै सुनि
प्रवास उर आनि॥१५॥बहुरि अनादर पर
नियै न मता और विरानि॥अपनि लाज
को छोडिबो पुनि सब जात निरमान॥१५
पुनि उन माद बखानिये कहौ तौन प्रमा
नि मरन अंत की दसा है आगह भाँति प्रमा
नि॥१६॥प्रथम वरन अभिलाष पुनि चिं
ता चितसे आनि॥बहुरि बखानौ गुन कथ
न वहुरो सुमति बखानि॥१७॥पुनि उदे
ग प्रलाप गानि पुनि उन्मादो आनि॥ब्या
धि और जडता कही मरन अंत में जानि
१८॥कहूं ग्रंथ जानता दाहूं [illegible]

भेद ॥ दूलके लक्षन उदाहरन वरनत हैं नेो
अंखेद ॥ १९ ॥ आनंद सेों दरसन जु है वस्तु
प्रीति सेों जानि ॥ मन न लगान मन संगग
नि चिंता रुज मन आनि ॥ २० ॥ जु है म
नोरथ बृथा सेो संकल्प बखानि ॥ वाते
प्रिय संबंध की सेो प्रलाप मन आनि ॥
२१ ॥ संबंध रस की ताप गन सही जान
उन्माद ॥ सकल वस्तु ते नाहिना सेो तो प्रा
न अपवाद ॥ २२ ॥ नैन ताप को उदाहरन ॥
दोहा ॥ [illegible] चाहि निरख
[illegible] कंदर जेो को
[illegible] ॥ २३ ॥ मन लगान
को उदाहरन ॥ सवैया ॥ उलहै नंद नंदन
[illegible] बिहरै
[illegible] कुंडल कानन मैं मुख चंद
[illegible] ॥ अब लोकन कौत
[illegible] मालगो
[illegible] विरहि लसै नद नाग
[illegible] ॥ २४ ॥ दूसरो उदाहरन ॥
सवैया ॥ संग सखीन कौ आइ गयौ हंसि
[illegible] बेनी ॥ आइ

नाय उत लाल सखी छवि ज्यों कछु छंद
की दीपति देनी॥ ज्योंहि पै छाँह बांह
को लै के करयो उन्ही जौं दै जुपैनी॥ फिर
आ सखि ख्यालि बड़ै छबि लाल बड़ै
सुभ वेनी॥ १४॥ सो पाल्य को उक्त ॥
सवैया॥ जो बालक हूँ मान लखी कार
ज्योति जसो मति ह्यई छुलावै॥ कि
चित्त देह विलोकति लोकनि रीझि
भीतर आवै॥ सोहि विलोकत हीं लखि
भुज चंपक लाल रहे यहि टोले॥ लाजी
रही। छिपता में यही स्वच्छ है। छिपा छि
पता में लावै॥ सखी॥ भावि कबहूँ बालह
यो गली कहि देगा विकले हुं लोवा
को चन॥ ज्यों चरबौ स्वरवौ छिवै कर
आ नलिहैं मरजादूही सोकनि छहि छुर
लोलह सोहैं कापो लाल नेह जलो छवि
ते दुख मोचन॥ पाइ बाहुं लखि टौंके
कांत हो देखी जहां हांकौं लिश्नौं क
८७॥ पुलाप वो उक्त ॥ दोहा॥ दर
चाहत वैसे लखै दैवो दैखन जेह टोल॥
धुनि प्रुनि बातैं रावरी दैं छवि पूजनि दृगन बा-

स॥ २८॥ दूसरो उदाहरन॥ सवैया॥ रूपस्व
नूप कादंबके कानन कुंजनि केलि काल
ल वालाको॥ काम करोर की मूरति स्या
म की धीरज थोन कहा अवला को॥
मोर किरीट धरे बन माल बिसारि सके
सहिदर कपलाको॥ मंद हसी मुख चंद
मनो हर नंदको नंद गुविंद ललाको २९
दोहा॥ चंद मंद अनु मत सजनि मारत
मदन अराति॥ मोहन लों अखियां लगी
अखियां लगीं नराति॥ ३०॥ कुसलाको
उदाहरन॥ दोहा॥ खेवान मूलन मेंगडे
मनि वांधन हैं पात॥ तुम्है देखि जानन
उन पयहि जात गिरि जात॥ ३१॥ अर
ति को उदाहरन॥ सवैया॥ तीनो तिलो
क संवारन अन धरे हर आपने अंगम
हई॥ जामे वडी विष माई हती त्योंहीं
ताको दई पल माहउन्चाई॥ कंट लिला
टमे सीसमेई सब लो यह दाहक पां-
ति वसाई॥ तीरवे सूला हूल आगि कला-
नि सों जोरसुदेयान काला निधि माई॥ ❋
३२॥ क्रीडा त्याग को उदाहरन॥ कवित्त॥

चिंता मनि स्याम जकी सुंदर वदन
मैहैं विद्यानी कौन याते छल
हो कुल वालि जाति कौन पे
जात सरस है याही ताहि
पंद्द है॥ मधुर कपोलनि मधुर
नि माहिं मधुर विलोकनि मधुर
हैं॥ जैसे रस वातनि
हैं विमल अनंद रस
॥ संदर कौ उदा
चु मृनाल जल वालन
ज हैं विरह जल जालन को
है कवि चिंता मनि विरह
लिल आपार उपचार
बंदन आवार तासो
सिकता कपूर चूर
ते परप्रति पाल विरह
है परि होत पैन सोरे होत
दोहा॥❋॥ विमल वदन
रहे सदा दल पाइ॥
रनि परी वाल मनु माइ
न अभिलाष पुनि

बहुरि बरनि ये गुन कथन पुनि उद्वेग ब
खानि ॥ ७६ ॥ पुनि प्रलाप उनमाद मि
लि व्याधि जड़ता होइ ॥ दसौ दसा य
गनत हैं सुकवि ग्रंथ कर कोइ ॥ ७८ ॥ द
र्यो वस्तु अप्राप्य सम दुःखद यह ह्वै जाइ
चिंता सनि कवि कहत हैं सो उद्वेग ग
नाइ ॥ ७९ ॥ बचन अनर्थ पलाप कहि
उन्माद वृथा व्यापार ॥ व्याधि ताप त्या
दिक बरन कविजन बुद्धि विचार ॥ ८० ॥
जड़ता चेष्टा रहित तनु मन न बरनो
जोग ॥ चिंता मनि कवि कहत यौं काह
त ग्रंथ कर लोग ॥ ८१ ॥ अभिलाष को
उदाहरन ॥ कवित्त ॥ नैनन की मुसक्या
नि अनूप सुधैनि कीच सुधा रस नाऊं
या पल ऊपर मैं अपनो यह तो धन
जीवन भाग गनाऊं ॥ श्री गंगा नाथ
अभीष्ट के हात हि बार अनेक मैं शम्भु म
नाऊं ॥ ॥ चारु कहौ जु विलासिन को मु
ख चन्द्र विलास विलो कन पाऊं ॥ ८२ ॥
ज्यौं निसि बासर चाहत चाहि सुलो चन
हूं चाह धरै जौ ॥ हेरि हरै हौं कटाक्ष

न सों मृगा लोचनी सो दिव आनि ठैनी॥
या निरहै जिसा नाथ औरि चली बानन के
पन ताप हैरैं॥ आनन रूप वाला कवि
ता लियो नाथ सों मोहि सनाथ करैनी॥
५३॥ सवैया॥ मोहि कछू नहि देखि परै
हग देखत हू दिन होत अँध्यारी॥ बोलत
बौरहि आंखि सखी चहुं ओर चलौ ति
हि चंद उज्यारी॥ शीरै उपाइ चलैन काहू
विरहा नल व्याधि चढै अति न्यारी॥ ना
हु तै कौन उपाइ करौ वह पावै वैगै पुन
प्रीति प्रीतम प्यारी॥ ५४॥ स्वरूप को उदा ह
रन॥ सवैया॥ यो हियते निकरैन सुरंगो नि
सो सुवि सुंदर [illegible] की॥ [illegible]
हौरनि [illegible] सोहत [illegible]॥
लागि यो ललहै स्वति संजुत पंकज [illegible]
कटाक्ष वालो ललकी॥ मुसक्यानि मै दामि
नि सों दमकै चमकै मुख ओप [illegible]
की॥ ५५॥ पानीन पीक ति पानक होत न
वै तनको व्यवहार निहै रै॥ सुंदरि तें [illegible]
पको सोरत बोलेन बार [illegible] रै॥ चं
द्रिकासी मुख चंद हसी कछू धीरे [illegible]

लखे तनु हेरै॥ नैननि नीर भिरानि सरै वि
रहैन बिलास बिलासिनि तेरै॥ ५६॥ ना
यका की स्मृत ॥ सवैया॥ मोहिहै ग्वालि गु
पाल लखे छलकी वनिता वाकू भेदन पावै
बोलिन बोल ठगी सी लखे मन मैन के वा
न हिये अकुलावै॥ रोमनि अंग कदंबवा
ली मन मे घन स्याम की यों छवि छावै
सारिल मंद कियो हरिकौ उमगें असुवां अ
खियां भरि आवै॥ ५७॥ गुन कथन॥ पेखत
ही प्रगटी मनकी मनि वेनी महा वि षना
गिनि गाई॥ ताप चढाइ गयो निरखे सुर-
ची तरुनी मुख चंद ठगाई॥ नील सरोरुह
मैनको वानन नैन निसारिके पीर जगाई॥
आरति अंगार के रंगन अंगनि केसी अनंग
की आगि लगाई॥ ५८॥ उद्वेग॥ सवैया॥
मैनके वान गने विष संजुत वागके फूल
नि भोर विहारे॥ चंदउने निसि मे लखि-
कै वाहि जोग जगी जग आगिलि हारे॥ होत
नहीं लाल व्याकुल होत हित उप चारनि
कौ पचिहारे॥ ऐसे भये मन मोहन लाल
बिना सिखी बाल वियोग तिहारे॥ ५९॥

ताछिन तोहि विलोकि विलासिनि ताछि
नते कछु औरन भांवे॥ तेरियै वात सुप्री
ति सदा पुलकै कोउ तेरोजुनाम सुनावै॥ ते
को नहीं कल मोहन लालहि यो सव नंद
मयंक सतावै॥ तो वनि आंवे जो आनन
तेरो अरी अकलंक मयंक जिआवै॥ ५०
नायका को उदा हरन॥ वीछी को डंक म
यंक किधौं आगे लिखेहि प्रलाप॥ सवै
या॥ मूरति तेरी मनोहर मे रचि वोलत
यों कछु मोहन प्यारे॥ आवेजु वैठ किते
ही किते चली भाग खुले वाछु आजु
हमारे॥ वोलत क्यों यह संक गई जोक
है मृदु मंजुल नाम तिहारे॥ वोलतक्यो
हो जू वूभे जवैलक्वैन कछूक काछू काहि
डारे॥ ५१॥ उन माद॥ सवैया॥ माधो म
नोज की मोहन को वहु चाव रचे वहु रू
प तिहारे॥ सामुहे आवलि मूरति पै परिरं
भनको भुज दंड पसारे॥ हाहा करे मुख चुं
वन मांगे हसेहि कपोल लसै छवि वारे
ऐसे विलासिनी रावरे प्रेम पै वावरो सो
है कछू कर डारे॥ व्याधि॥ सवैया॥ जे

नि कंकन गाढ़े गड़े कर मूलन ह्वै छल
काहू निकाई ॥ तेगिरि भूमि पै नहि जा
नन ऐसी भई तनमै दुबराई ॥ नीनि नै
नति नींद काहू निसि पीरी कपोलनि मै
छबि आई ॥ तेरी छिलो कालि पाइ बिला
सिनि ऐसी दसा मन मोहन पाई ॥ ५३
छूटि गयो हसिबो सब खेलि बोलिब को
भयो आजु निबेरो ॥ ज्ञान काहू न रह्यो
... सब ऐसी बियोग की आपदा
हेरो ॥ ... अली नहले नचले ... मै
... यह साहस मेरो ॥ ऐसी दसा
सुनि मोहन लाल की बेगो मन होत ह
... तेरो ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ कबहू मनन बर
... जीवन कबहू होइ ॥ तोपुनि वाको
... यो कवि सिदा कोइ ॥ ५५ ॥ द
... की रिसि परस पर मान बखान्यो
... ॥ प्रनय ईर्षा भेद सो द्वै बिधि ता
हि जानइ ॥ ५६ ॥ प्रनय मानलः ॥ दोहा
... प्रनय की कुटिल गति बिन कीन्हे
... रोस ॥ दंपति कोइक सेज मै प्रनय
मान बिन दोस ॥ ५७ ॥ सवैया ॥ तू मन

इर्ष्याक खल विचिद्र भलीहि जो कोई काहीं
सिरद मांनि॥जाहि चाहै सो सदापुनि वि
वित तोसे काहातू रहै अकुलानि॥दाहिर
वीन सबाइ कछू जपै अंतरवाहि भ
ले पहि चाने॥जो मुस वयानि मे लीन
रहै तौ तू आप कौ ताप कछू नहि आंन
५७॥वात वाही अपने मनमें सुख चाहि
रके हम हू को सुनाइ॥ताकौन उत्तर दी
जिये आपु तो होति गुमानहि को अधि
काइ॥जौलको कौन सो वोलत को रहै
काहू के अंतर की गति पाइ॥जाको जु
भी मुस वयानि है चाहिय तासो सु कोन
कौ ऐसो सखाइ॥५८॥दोहा॥पूनव मान
वाल दुहन को है को मानजु होइ॥
वरनि है निघन मे यों वरनत सब कोइ॥
६०॥और तिया के देखते वार सवद नाना
वि॥लघु मध्यम गुरु भेद सु मानत त्रिवि
धि तियानि॥६१॥कौतुक हूलत मान न
हु मध्यम लीन्हे सोइ॥गुरु हूलन पाइन
परे पेम पदनि नहि भोइ॥६२॥लघु मा
सवैया॥मन मान कियो रूप मानजी

अनंते अब लोचन लाल लहे॥ उत आ
ऊ जुरी सखियां सिंगारी पिय आयो स
खी इक बीज कहे॥ दृग मूंदि रहो चित
रज्जु पे मान लला हसि ते दृग मूंदि रहे
मुख बचाइ के राधि का आनंदसों भुजमा
लसों लाल लपेट रहे॥ ६३॥ मध्यममा
ना दोहा॥ प्यारी की पदवी हमे दीन्ही आ
जु गुपाल॥ तेरीसौं लाईन उर समुझि
और तू बाल॥ ६४॥ गुरु मान॥ दोहा॥ हं
सति वाहा मोपै निरखि लखि लखि इ
नके अंग॥ नेहे और तिय नेह सों नेह
हमारे संग॥ ६५॥ सवैया चैतको चंद औ
मंद बयारि वहै अति सीत सुगंध भई
इन॥ जाको घनो लल चाति ह्वौ बाल सो
लाल सलोनो परयो मनि पाहुन॥ जोवन
के दिन पाहुन हैं पछ तावगी पीछे के
मेरी गुसा इन॥ केलि करो मिलि मोहन
सों कहा टीक जुठन तौ हो ठकुराइन॥
६६॥ दोहा॥ मान हरन के कारन को वर
ने छयो उपाइ॥ छोडत इन तेरो सति
य ऐसे सास सुभाइ॥ ६७॥ माना पमानो

भेद ॥ दोहा ॥ साम भेद अरु दान कहि
त्यौंही पुनि तब खानि ॥ बहुरि उपेक्षा बखा
नहैं फिरि रस अंतर आनि ॥ ६८ ॥ ६८
मधुर वचन सो साम कहि भेद सखी
की बात ॥ दान ब्याज भूखादि को प्रनि
त करन को प्रात ॥ ६९ ॥ साम दिक की
छीनता होत उपेक्षा चित्त ॥ त्रास हरख
इनआदि दै कहि रस अंतर मित्त ॥ ७०
साम्या पाइ ॥ कवित्त ॥ वैन सुधा तुली सी
ये विलासिनि मोमन मोद लता नित की
क्यारी ॥ मोहि कहा बल होत कहूं मनि
जो पल एक रहै जव न्यारी ॥ मेरियै नैन
चकोर छके मृग लोचनी तो मुख चंद
उज्यारी ॥ जो कछु जानो सु जाइ बोहा तु
म मेरेहो प्राननतें अति प्यारी ॥ ७१ ॥ क-
वित्त ॥ चिंता मनि जोपै तुम्है उनसोंहैं र-
सवैतो काहेको उनको मनु बांध्यो प्रेम
फंद सों ॥ वेतोहैं बिलखें मुख तुम बिन
महूं तो दुखित ह्वै बिरहित आनंद के
कंद सों ॥ हमतो जानति सहो तुम्है हैं स
यान देखो पूरन अयान मान ठान्यो नंद

नंदसों॥वैतुमसौं मिली तुम इनसौं मि
लकीरवृल्यो चंदजैसे चादनीसेचांदनी ज्यों चंद
सों ७२ चिंतामनि होइ कोऊ नीकी अनें-
ही कवित आगे लिख्यो है॥दोहा॥सो
तन को कुच दुरग तजि पिय मन मिल्यो
निदान॥अव मनि रुका पर चढ़ी कर
री भौंह कमान॥७३॥दानो पाइ॥कवित
मानसौं निहारि रूख भानकी कुमारि-
का हिल्यास नंदलाल गूंदि कर माल
तीकी माल॥आनि अन वोली कमरे मे
पहिराई काहो कैसी नीकी लागी प्यारी
दुति उलही विसाल॥नेक मुस काइ ऊं
चे हेरि फेरि नीचे हेरि पुलकित अंग र
चित मान यों लखे गुपाल॥चिवुका क
पोल चूंमि चूंमि गहि कंठ झूम झूमि हं
सि लाल भुज माल भरि भेटी वाल॥७४
नति को उदा हरन॥दोहा॥छोडि मान
पाइन परो जो पिय कहो अधीन॥नी
ल कामल से दृगनि मे तियके भाल वंधो
नीर॥७५॥उपेक्षा को उदाहरन॥दोहा॥पीठ
दयो उठि इकि यो ऐसा काछु वहु मान॥

यह नहि देखति चूनौं गहिबे दन कौं मनैं
गुमान॥७६॥रमात्तर॥सवैया॥सांझ भिरा
इ ष आन कुसादिक सावे गुवा मिला मा
ह मनाई॥औत उपाइ थवो सिर सब मौन
न थो तब बातै चलाई॥पीछै तिहुं नाह
हैं तिया वाहि जो वर्दियां ललमें मन लाई॥
यों मि. भावी उनको लपकी हेसि निन
नंदन कंठ लगाई॥७७॥करुना रस॥
दोहा॥जहां पुरुष तिय कहाल से दुखु
क की होइ॥पुनि जीवनि की आस
ना तम ग्राम सोइ॥७८॥जोवर नोवा
बरी पुंडरीक वृतंत॥सो करुना रस
हैं सब पंडित वल वंत॥७९॥प्रवास
रा॥दोहा॥तन मन होत तियान को
नि पास प्रकास।पीतम को परदेस को
स वरन प्रवास॥८०॥हीन हार
जो द्वै विधि वरन प्रवास॥ताको देन
हरन सज्जन सुनो प्रकास॥८१॥
न प्रवास॥क०॥केसी कारीम
तीन धरी क्रिय हेरि देखवा
न काहा सज्जनी उत लाइ

वो गान॥ पावस मैं परदेस गए पिय ऐसेन
है कान्हू लिखै मन॥ आए नहीं घन स्याम
कौं कहा देखें नहीं उनए उनए घन॥ ८२
दोहा॥ प्रथम हेतु अभिलाख पुनि विरहा
ईरषा मानि॥ पुनि प्रवास अरु सापपुनि वि
पुलंभ को जानि॥ ८३॥ अभिलाष हेतु॥
सवैया॥ नैननि की मुस वयानि अनूपम
नैननि वीच सुधा रस नाऊं॥ ओठन को
घन राग लखें मन मैं अनुराग प्रमोद वढ़ा
ऊं॥ यो जग ऊपर मैं अपनो यह तो धन
जीवन भाग गनाऊं॥ वार वाहो जु विला
सिनि को मुख चंद विलास विलोलन पा
ऊं॥ ८४॥ विरह लच्छन॥ दोहा॥ गुर जना
दि पर तंत्र जहं निकटहु मिलनन होइ॥
दंपति को वुध जन चाहत विरह काहा वत
सोइ॥ ८५॥ ललित कथा निसि केलि की वि
रह जलधि को सेतु॥ होत दुहुन को द्यो
स मैं नख पद पदको हेतु॥ ८६॥ सुंदरि
निरमल सौध चढ़ सरद चांदनी राति॥ ऐ
सैं रही पिय सौं अरी मिहरी मुख जाति
८७॥ प्रवास हेत॥ दोहा॥ मोहि तोहि चाति

को काहा जल अरु जीवन देत॥ यों उ पों उ बदि
रवि मंह निठुर काहा रूप्यौ लेत॥ ८८॥ सोयह
दूवा भेप दूत है॥ दोहा॥ विश्रित ओ भ्रान
बचन जो और है पै कछु होइ॥ ताते उप
जत हास्य जो कहत है सब कोइ॥ ८९॥
बचना देवा बैहात निरखि हूमन जु चन्द
विकास॥ निरपेक वहदेखिकैवादत सुकवि
जन हास॥ ९०॥ हास्यरत थाई भाव जिन
लौ हास रस जान॥ ताते उपजत है सुनो
आलंबन पहि चान॥ ९१॥ चेष्टा ताकी
कहत बुध दीपन हूत को होइ॥ अब विभा
सन आदि सुनि संचारी सो होइ॥ ९२॥ मन्द
स्मित अरु हसित पुनि कहिये औ विच्चा
रि॥ और बरनिये उद्ध सित अरु अप हसि
त निहारि॥ ९३॥ पुनि अति हसितछविध
मुख है है भिन्न बनाइ॥ उत्तम मध्यम अ
धम जन गनत सकल बनाइ॥ ९४॥ स्मित
कहि दिखा सित हसन कछु लखे पै न
हंत॥ कहत हिलत में नको है वर नन
चवंत॥ मधुरसुस्वर विहसित सिर कांप
उद्ध सित जानि॥ मध्यम नर गत नाम को

ये है भेद बखानि॥ आसुन जुतकोह अपहीसि
त बहुरि अति हसित जान॥ तन परसे सुह
मीति लै अधमन के मानि॥ ९७॥ ऐतबर
न यह प्रथम पति देव तहां सब खानि
याको देत उदा हरन सुकवि लेहु मन
आनि॥ ९८॥ सवैया॥ आदसी देखि जसो
मति जू सों कहे तुत रा त यों वात वान्हे
या॥ वैठते वैठ उठते उठे अरु कूदते कूदे
चलते चलैया॥ बोलते बोले हसते हसे मुख
जैसो करो त्योंही आपु करैया॥ दूसरो
आन दुलारो किया यह कोहे जु मोहि
भावत मैया॥ ९९॥ इष्ट ना सवि अ
निष्ट की आगम तें जो होइ॥ दुःख सोका
थाई जहां भाव वरन यहि सोइ॥ १००॥
आलंवनिग सोक इत ताको दाह त्रियादि
जही पन अनु भाव गनि रोदन भूपातादि
१०१॥ निर्वेदा दिक होतहैं जामे वहु विधि
चारि॥ तेसव अपनी वुद्धि वल लीजो विवु
ध विचारि॥ १०२॥ यह करुनारस रंग है
नासदेवत जहं जानि॥ याको देत उदाहरन
सुनो सुजन मन आनि॥ १०३॥ कवित्त॥ १

ऐसी भाँति राम सब नीनको प्रकार पूछे।
भरत सुनायो रोइ पिताको मरन है॥ बिह्व
ल अंगनते अचेत ह्वै गिरेहैं भूमि भाइ दु
नवो मन दोरेव भयो अस रनहै॥ नंनी
वियोग तें तिहारे पिता प्रान तजे नृपसवा
धराको अब धीरजा धरन है॥ यह सुनत
ही राम म्लो सब जग लख्यो वाही समै
ह्वै गयो वदन विवरन है॥१०४॥ वेदेही रा
वे तीनो भाई लगे रोवन त्यों जागि रघुना
थ ए वचन मुख वादे हैं॥ रावो चिन ची
ज वाहा तुम्हे वीन दीसु राज मेरे वा
न तजे मेरे प्रान गादे हैं॥ तुमहू नकुने
जीवें काहा वीन भांति ऐसो दुरजन चिन
आगहू नठा देहै॥ ऐसी बातें कहि वा
रत सो रोइ राम नैन जल जनते
ल वाढे हैं॥१०५॥ भरत वचन बोला
बहू तु काहा उठो तीनो जने चालि
या कारी॥ लछि सन सीताको विनोदा
ह्यौ ऐसी भांति अब उठो चले धीब
रो॥ साथमे सुमंत आए सोइ सब
नी जल निधा वारे मेरे असुवान

मुनि गिरि चढ़ि आस उटज के द्वारमैं तुका। न सब रोस संसार की दसा करी॥ २०६ ॥* दोहा ॥ अरि विरचित अपराधतें चित्त प्रज्वलन क्रोध ॥ सो याई जित रौद्र सौं कहत निर्मल बोध ॥ २०७ ॥ आलंबन अरु बरनि यै उद्दीपन मन आनि ॥ ताको जो आचार सब बुधजन लखत बखानि २०८ भृकुटि भंग दृग अरुन अरु अधर दंस इत्यादि ॥ अरु बरनत अनु भाव रु व्यभि चारी इत्यादि ॥ २०९ ॥ अरु बरनत अनु भाव स ॥ दोहा ॥ रक्त रंग रुद्राधि पति सो हू बखानो जाइ ॥ ताको देत उदा हरन सु कवि सुनो मन लाइ ॥ २१० ॥ घनाक्षरी ॥ काहेको गरक्त अस पुनन को गनतु छिन स खामे ब्बत्त तप सीन सारी ॥ चपलि पारो आन छेदि न भतारि को समर मे सचोप तिको संघारौ ॥ मीचुको मीड़ु सो निकल सार सवात हो भुज नदल प्रबल पहूँ ड सत्तो ॥ मन बैमान कुमार हु सा रहे उतम चिन्ह तिन को बिचारो ॥ २११ ॥ आत सार आकास धुरि पूरन सम गाकारि।

अह निशिवासन छंद कलिय उल्लास र [illegible]
धरि॥ हिस्क्रिय पूरन विपति गोनि [illegible]
के हैं रहि॥ ज्यों उज्यारैं बाढी मौन [illegible]
ग्राहि॥ दिन सालि दल [illegible]
ह मह सरस सट॥ ज्योति पूरन [illegible]
पि बल जलधि पहुच्यौ [illegible]
तट॥७॥११४॥ जोलौ की [illegible]
पूरंत उत्साह॥ सोत्यौ है याहू [illegible]
र कहत कवि नाह॥११५॥ जेत [illegible]
बरन ताको इंगिल बोइ॥ उर्द्ध पन [illegible]
हि पुनि संचारी व्रत सोइ॥११६॥ [illegible]
अनुसरन जो सो दानिये अनु भाव॥ [illegible]
धर्म की सुकु को रचाप्त आदि [illegible]
हं देवता काल की समवरन सु [illegible]
[illegible] नायक विभव [illegible]
न आलै॥११६॥ [illegible]
बुध जन बुधिबल जानि॥ [illegible]
तूरन सुधाविहु मन आनि॥११७॥ [illegible]
बीर को उदा हरन॥ [illegible]
ही बन [illegible] निदाहि [illegible]
[illegible] जीन्हो॥ दिव्यत [illegible]

ह्वै सुभग अंग सौं रुचिर रघुवीर कर चाप लीन्हो॥ कियो घन गरज घन धनुष टं कोर अरु ललित मुख हरष भालवर्यान वीनो॥ आइ भरि व्योम मुनि सिद्ध गंधर्व जै बोलि रघुनाथ कौं विजै दीनो॥११८॥ लवै धरकौं पकरि आप आयो उतै जिते सर चाप धरि राम राजैं॥ संग लै सघन घ न संघ समरत्त्वगन तिष्य लम प्राख्नु वरखा नि साजैं॥ परस त्रिसूल आस पास मुद्ग र विपुल असनि सम राम पर डारि गाजैं समुद ज्यौं आप गावेग सहि आयु धन वे ग सहि छविन रघुवीर राजैं॥११९॥ *

राम भुज दंड पाछै लिख्यौ है॥ दान वीर॥ कवित्त॥ कारियैं लखन अभि षेक विभीष न जूको लखन विभीखन को कीन्हो अ भि षेकु है॥ वडो सुखु पायो वानरन रीछ रावासन भयो मनो सवनि सुर ससेकु है॥ ल्याए राम जूको साधमोदक अछत राज मंडलकी साज भयो उत्सव अनेकु है॥ रा वन लंधारखौ राजु दियो विभीखन कौ जा गात सरा ह्यौ रघुनाथ कौ विवेकु है॥१२०॥

परम अपार भवसागर उनारि वेको॥पोहि
लिख्यो है॥कवित्त॥अवधनि घट नंद गा
उकोस रखा पर निरख्यो कलवार पद धा
रीसोहा साथको॥चिंता सनि वाहू सृन घर
म जानि धरे मुनि वे व जगत अभयदा
र हाथको॥वंस अलं हात कीरि आपने
चरित्र सत्यकारी सागी रघु आनंद नाथ
को॥जाइ हनूमान देखो धरस वृतन धरे
पेख्यो है भरत उतभैया रघुनाथको॥१२१
दया वीरको उदाहरन॥दोहा॥इंद्र कह्यो स
न मोद धरि यों सुनिये श्रीराम॥कौसि-
ल्या सु प्रजा भई पाइ पूत गुन धाम॥१२२
इंद्र कह्यो अब माग वर यों बोले तत राम
वे जीवें कपि रीछजे मरे महा संग्राम ॥
१२३॥जे पान्न मूल अकास हू पावें वानर
वीर॥होइ विमल वसवनदी विलसैं जिनके
तीर॥१२४॥इंद्र कह्यो ह्वैहै इहे राम निना
रेहेत॥सुनि याहू संसार मे जीवन नाहि पे
त॥१२५॥ह्वैहै सब जो चाहियत यों वाणि
गयो अकास॥सबको देखत समर मे बरख्यो
अमृत प्रकास॥१२६॥पलीन रावान जाय

पर काहू अमृत कौ विंदु ॥ सोह गयो मूल का
पिनके ज्यों ज्ञान कौ विंदु ॥१२७॥ उते ह
नि न द्विज काष्ठि शैव जन कहैं मत वान
दस रथ नंदन रामको कहो भलौ किकठ
न॥१२८॥ होइ विभाव विभावौ विक
लपना भय जानि ॥ सो याभै थाइ सु अ
या नाहि पहि चानि ॥१२९॥ जाके उप
जत है सुख ते आलंवन जानि ॥ ताके हु
लित जे काहु उद्दी पन ए मानि ॥१३०॥ वे
वनी द्विका वने स जाके कह अनुभाव ॥
शृंका आंता दि ल कहे ते संचारि गनाव
१३१॥ काल वरन याको वरन काल देवता
मानि ॥ याको देत उदा हरन सुकवि लेहु
मन मानि ॥१३२॥ भयो नक को उदाह
रन ॥ भनि अजीत कवासी मरयो राम त्रिय
शी गान ॥ सके कालिंगा धिपति के देह उ
ठ्यो रोम ॥१३३॥ वीभत्सितलछण ॥ दोहा ॥
देखि जुगुप्सित वातको घिनि उपजत साल
ति ॥ सोइ थाइ भाव जिह सो वीभत्स क
हानि ॥१३४॥ कीथिर मास दुर्गंध युत आ
लंवन मन माहि ॥ महा पाल पीति कीलत

ना उद्दी पन कम आदि॥१२५॥अपन सा
र आवेश अरु मोहा दिन अर्थ चारि॥
बरनत रस वी भत्स मे सज्जन हेतु वि
चारि॥॥१२६॥कवित्त॥॥ विपु विपु
ल नि अक्षर वानर वपु विगत प्रान रन मं
डुल खंडिय॥ सज्जत गन उदा लनन
चालनु निरखि रिक्त पनि ग्राहन चं
डिय॥ समर भूमि पर तुरत वेगि उठि
भिरत रुधिर जल सरित उमंडिय॥॥
हाल काल भुज खंड मद सम सिकता
अस्थि मुसल शिल कंडिय॥॥१२७॥॥
दोहा॥ निरखि अलौ किक वस्तु जो
होत चित्त विस्तार॥सो विस्मै थाई जा
तै सो अद भुत रस सार॥१२८॥आलम्ब
लौ किक जो कछू सो उद्दी पन जानि
महिमा जाके गुनन की सो उद्दी पन मा
नि॥१२९॥आलं वनगनिवस्तु जो वरन
अलौ किक सोइ॥उद्दी पन ता गुनन
की महि मा जो कछु होइ॥१३०॥नेत्र
विकासा दिक जहां व नहै अनु भा
व॥हर्ष वितर्का दिक हुते संचारि भा

सुभाव ॥१४१॥ पीत बरन सो बरनिये म
न मथ देवत मानि॥ याके देत उदा हरन
सुकवि लेहु मन आनि ॥१४२॥ कवित्त॥
बाल पन कौसिक के मखके विघनका
र निसा चर मारे सिला प...ता तारी
है॥ गरू हर चाप तोर्यौ बाप सत्त वैन
कीन्हो कानन सिधारे राज सिरी नानि
हारी है॥ बाली मार्यो महा बली राक-
स संघारे पांति रावन के भुज दंडन
की मही पर पारीहे॥ दीन्हो निज धा
मल अवधि दया निधि को अब धन
रेस राम अवधि उधारीहे ॥१४३॥ कवित्त
कोमल करकमल कर कस गिरि तै
उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलातु
है॥ जीवैगो सोजीवे जो मरेगो वहु मरे
मोसों कैसे निज बालक कलेस देख्यो
जातु है॥ मेरो कह्यौ करन तो निकरि म
रौंगी कहि चली जहां कर का सिलानि
को निपातु है॥ जहां कादे गोपी गोपग
न संग नंद रानी तहां रक्षा करिवे को अ
चल अधि कातु है ॥१४४॥ लल लहरा

॥दोहा॥॥सम कहियत वैराग्यते नि
र्विकार मन होइ॥सो थाई जिन सांत
रस वर नत हैं सव कोइ॥१४५॥कुंद इंदु
सम धवल यह श्री नारायण आप॥या
रसके अधि देवता जे मेटत सव ताप॥
१४६॥आलंवन संसार के निश्चित सत्य
वखानि॥कै पर मारथ अरथ जो सो आ
लंवन जानि॥१४७॥पुन्या श्रम हरि छे
त्र अरु तीरथ रम्य वनादि॥ताके उद्दी प
न गनत महा पुरुष संगादि॥१४८॥
पुलका दिक अनुभाव गनि संचारी नि
र्वादि॥सकल साधु सेवत लसत यह
थ्र ति विमल अनादि॥१४९॥कवित्त॥
पूरन विमल गुरु कृपाके प्रभा
व सव दिगरे प्रपंच सए व्याप
क गगन है॥प्राचीन कर्म भोग
करति जो देह ताकी सुधिनका
हूहै ऐसे मान्यो जगन है॥का
म क्रोध लोभ मद मत्सर आदि
महा मोहके विलास ठग तन
ठगन है॥धन्य जन कोऊ एम

अभिराम कुंड प्रान आनंद १
अपार बारा बार मैं मगन हैं १५०

॥ दोहा ॥

यह रस सुनि रस अलक्ष नाम व्यंग आधु
धनि ठानि ॥ संज्ञा शादि विशेष पद वाच्य
पदार्थ विचारि ॥ १५१ ॥ वाचक पद रसु
है जो सब साधारन नाम ॥ चिंता मनि
कवि कहत है समुझौ बुध अभिराम ॥
१५२ ॥ सूल प्रकृत नें कहत हू बंधन रस
जो होइ ॥ यातें रस सब ठौर मैं व्यंग्यक
ह तसु कोइ ॥ १५३ ॥ कछु विभाव अनु
भाव कछु अधिक बहुत संचारि ॥ व्य
क्तिनु थाई भावसों रस नाम यह निर
धारि ॥ १५४ ॥ व्यक्ति सुरस को नाम जु
है समुझौ रस ध्वनि नाम ॥ जो रसयासो
होतु है सज्जन मन अभि राम ॥ १५६ ॥
यौंही भाव विचार रस भावन को आभि
स ॥ भाव शांत्या दिकौ पुनि अक्रम व
रन प्रकास ॥ १५७ ॥ देव पुत्र गुरु आदि
के तिनमैं जो रति भाव ॥ कै संचारी व्य
क्तिसो थाइ भाव सम भाव ॥ १५८ ॥ देव

विषयकारति भाव को उदाहरन ॥ सवैया ॥
और कैसे अजहूँ नहिं चातु रवंश कोऊ,
ह्वैहो तिहु लागे के लोचन में भव...
न होतु जाको पर पैयतु नहीं दोषत्या
गुन मैं ॥ मनि होतु रूप शिव कारन की
जो प्रकास बढ़ो वो सुधा चरनमें ॥ चतुवें
ध्यान जो लन ही की कियो मनेवाध सेवा
लीके पायन मैं ॥ १५७ ॥ दूसरो उदाहरन ॥
कवित्त ॥ चारु मुख चंद लर हसनि मनो
हर है चिता मनि मोतिन की माल हरि
के गरे ॥ लाल पीत पट लकुटि पटा
ये नट नागर निपट रूप नीय रूपकां को ॥
का ननके मोतिन की चौंदुका चापाल
चमकत जरी चीरा पर मोर चंद्रिका
धरे ॥ कोटि काम सुंदर पिरा जन डुंवर
कान्ह कालिंदी के कूल मैं कदंब तरें
तरे ॥ १६० ॥ पुन विषयकारति भाव को उ
दाहरन ॥ कवित्त ॥ दुलही ललित ज़री
सी जग मगी ... झालर मैं भाल वार
मुकता हसै सुढार ॥ केसर के रंग रंगी
झीनी सी झगुलि या मैं झलकन अंग...

वलय दल सुकु मार॥ हसत वदन दतिया
दै देखि चिंता मानि जनम सुपाल करि
मानै दसरथराय॥गोद लैकै राम जू को
आनंद मगन मैया ललकि कै वलैया
लेत वार वार॥ १६१॥ रसा भास॥ दोहा॥

अनुचित विषय करति जुहै
सोई तरस अभास॥अनु चित
विषयको भाव जो सो पुनि भा
वाभास॥१६२

वैठि झरोखे मारि हग वानन करति कु
काज॥मृग नैनी मृगया रची तरुन मृग
न पर आज॥१६३॥ भावा भास॥ दोहा॥
पाइ न परि ईश्वर कहे जाको सुर नरना
ग॥पशु मिधि वध रावन कियो रघु पति
जू रन जाग॥१६४॥उपसमया वैं भाव२
जो भाव संत सो जानि॥भाव उदै आदि
का सतो उदया दिक पहि चानि॥१६५
मान वती पीतम लख्यो खरो दीन मुख
दूरि॥ओचका ही लोचन जलज आसुज
नकों पूरि॥१६६॥ भावो दयको लछण

॥ दोहा ॥

वेंदी पिय पट सों लगी लीनी अली उता
रि॥ चूडि गई अब लोकि उत सबु च सिं
धु सुकु मारि॥ १६७॥ भाव संधिको उदा
हरन॥ कवित्त॥ चारु मुख चंद राम चं
द अरविंद नैन इंदी वर देह द्युति लस
नि सुहाई है॥ कानन के मुकता पाल
नांकी झलकि मंद हसनि कपो लनि
अमोल छवि छाई है॥ रीझी सुकु मा
रि दसरथ के कुमार लखि भीषम धनु
ष दीन सुख मुर झाई है॥ ह्वैके विह व
लतन जानुकी विकाल मनहि मनसैल
सुता कुल देवता मनाई है॥ १६८॥ *

भाव सबलता

कवित्त॥ हरहीते सोंही चारु अंचल हला
ही उंची भौंहन के संग सोहे सुभा नवे
लीकी॥ आयो जब ढिग तब सुवरन वे
ली पर लीन्ही उन हारि है खंजन जुग
केलीकी॥ पुनि अध खुली इंदी वर
की कालीसी आइ परी है तिरी छी डीठि
वचा के सहेलीकी॥ विविधि कटाछ भां
ति मैन सर पांति खरी खुली आसु अ-

स्त्रियां अनूप अल बेलीकी ॥ १६९ ॥॥

इतिश्री चिंता मनि वि
रचिते कवि कुल कल्प
तरौ अष्टम प्रकरणम्
समाप्तम् शुभ मस्तु ॥॥

हस्ताक्षर चराउडी दत्त ब्राम्हण कान्यकुब्ज